प्रकाशक
प्रधानमन्त्री—
लालचंद कोठारी
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर।

प्रथमावृत्ति
वि० सं० २०१७
मूल्य ३) रु०

मुद्रक—
महावीर प्रेस
किनारीबाजार,
आगरा।

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के. एम. पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, [illegible] समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यंत विशाल योजना है जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी प्रकाशन रचनाओं का प्रकाशन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी
३ बरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कविताएँ कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और बृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व ग्राहक हैं। शोधकर्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तम स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की बृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

४ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत हिंदी और राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

१ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्त्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८ राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड़ क्षेत्र के ५ लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत बाल लोकगीत लोरियां और लगभग ७ लोक कथाएँ संग्रहित की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ बसंत प्रयोध, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १ शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा. लुइजि पिओ टैसीटोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, डा. कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा. जी. रामचन्द्रन, डा. सत्यप्रकाश, डा. डब्लू. एलेन, डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा. तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

ए श्री मनोहर शर्मा एम ए विशारद और पं श्रीलालजी मिश्र एम ए, शोध थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा सन्दर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु १५) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु १) तीस हजार की सहायता राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस व[र्ष]
निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी चरित्र चौपई—	" "
६ दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	"
८ पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९ पृथ्वीराज राठौड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१ हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५ सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो॰ मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	" "
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ वीर रस रा दूहा—	"
२१ राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत कथाएं—	" " "
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं—	"
२४ चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ मदुमी— — श्री अगरचन्द नाहटा, म० विनयसागर

२६ जिनहर्ष ग्रंथावली — श्री अगरचन्द नाहटा

२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण — ,, ,,

२८ दम्पति विनोद — ,,

२९ हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य — ,,

३० समयसुन्दर रासत्रय — श्री भंवरलाल नाहटा

३१ दुरसा आढा ग्रंथावली — श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा डा दशरथ शर्मा) ईसरदास ग्रंथावली (संपा बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो गोवर्द्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले श्री अगरचन्द नाहटा) नागदमण (संपा• बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है । अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं ।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस गहन कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके । संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त २४ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,,
६ दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	,, ,,
८ पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठौड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१० हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५ सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२० वीर रस रा दूहा—	,,
२१ राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,,
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,,
२४ चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ मत्रुमी— श्री अगरचन्द नाहटा
म. विनय सागर
२६ जिनहर्ष ग्रंथावली श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण ,,
२८ दम्पति विनोद ,, ,,
२९ हीयाळी-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य
३० समयसुन्दर रासत्रय श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रंथावली श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा. डा. दशरथ शर्मा) ईसरदास ग्रंथावली (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो. गोवर्द्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले. श्री अगरचन्द नाहटा) नागदमण (संपा. बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस महद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व पूर्णचन्द नाहर संग्रहालय कलकत्ता जैन भवन संग्रह कलकत्ता महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची पुस्तकालय बीकानेर खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा मुनि पुण्यविजयजी मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री पं हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वापि भवत्येव प्रमादतः हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन: मां भारती के चरण कमलों में विनयतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुन: उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं २ १७
दिसम्बर ३ १९६१

दो शब्द

नीति का क्षेत्र बड़ा ही विशाल एवं विस्तृत है। इसे सदाचार के अन्तर्गत लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में इसे हम सदाचरण का शास्त्र या आचार शास्त्र (Ethics) भी कह सकते हैं।

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में नीतिशास्त्र शब्द का प्रयोग प्रायः राज नीति शास्त्र के विषय में किया गया है। कर्त्तव्य अकर्त्तव्य के विवेचन के शास्त्र को धर्मशास्त्र की संज्ञा दी गई है। लेकिन आजकल इस आधुनिक युग में 'नीति' शब्द ही में कर्त्तव्य अथवा सदाचरण का भी समावेश किया जाता है।

[1]नीति की परिभाषा हमें इस प्रकार पढ़ने को मिलती है—

'पथ-प्रदर्शन। चाल-चलन। शील। युक्ति, उपाय।

राज्य की रक्षा के लिए काम में लायी जाने वाली युक्ति; राजाओं की चाल जो वे राज्य की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिए चलते हैं। आचार पद्धति लोक या समाज के कल्याण के लिए निर्दिष्ट किया हुआ आचार व्यवहार। प्राप्ति। दान। सम्बन्ध। सहारा।

नीति को लेकर बड़े बड़े महापुरुषों एवं संतों ने अपने अपने स्वतंत्र विचार व्यक्त किए हैं। वे सारे के सारे तो यहाँ दिए भी नहीं जा सकते। फिर भी हम यहाँ उनमें से कुछ थोड़े से पाठकों की जिज्ञासा हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं।

जो कर्म भगवान के नजदीक ले जाने में मदद करे उसे नीति कहते हैं'—श्री महा चैतन्य

---

1 संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ'—

सम्पादक—स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा

'देव को मानना और उसे पसन्द हो वही करने का नीति कहते हैं।
—श्री ब्रह्म चैतन्य

'नीति ही राजा है और नीति ही कानून है।
—श्री विवेकानन्द

अहंकार ही अनीति है व विश्व व्यापकता ही नीति है।
—श्री विवेकानन्द

इस प्रकार हम कह सकते हैं—नीतिशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें देश काल और पात्र के अनुरूप व्यवहार करने के नियमों का निरूपण किया किया गया हो। अथवा ऐसा शास्त्र जिसमें मनुष्य-समाज के हित के लिए देश काल और पात्र के अनुसार, आचार, व्यवहार, प्रबन्ध एवं शासन का विधान हो।

हमारे विचारों में व्यक्ति के परिस्थिति सापेक्ष आचारों से सम्बन्धित तत्व-दर्शन को यदि 'नीति' की संज्ञा दी जाय तो कुछ अनुचित नहीं होगा। ये व्यक्ति के आचार जिस तरह भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते हैं, उसी तरह उनके तत्व-दर्शन की दृष्टि भी कई प्रकार की हो सकती है। व्यक्ति के आचार जैसे धार्मिक राजनीतिक आर्थिक आदि कई प्रकार के हो सकते हैं ठीक इसी प्रकार से इनका विवेचन करने वाले विषय भी धार्मिक-शास्त्र राजनीति-शास्त्र अर्थशास्त्र आदि कई प्रकार के नामों से अभिहित होते हैं।

नीति के विषय में महात्मा [1]गांधी लिखते हैं—

और कोई आदमी धर्म विशेष को माने या न माने पर वह नीति के नियमों का पालन न कर सके तो ऐसे आदमी के लिए इस लोक या परलोक में अपना या दूसरे का भला नहीं होने का।

---

१ धर्म नीति—

महात्मा गांधी पृष्ठ १२

१ आगे लिखते हैं—

'मनुष्य को नीति का पालन करना ही चाहिए और यह न हुआ तो दुनिया का विधान व्यवस्था टूट जायेगी और अन्त में भारी हानि होगी।'

थोड़े में हम कह सकते हैं—नीति के इन नियमों अथवा 'शिष्टाचार' को धर्म की बुनियाद कह सकते हैं जो समाज-धारण के लिए, शिष्टजनों के द्वारा प्रचलित किए गए हों और जो सर्वमान्य हो चुके हों। और इसलिए महाभारत (अनु १०४ १५७) में एवं स्मृति ग्रन्थों में 'आचार प्रभवो धर्मः अथवा आचारः परमोधर्मः (मनु० १ १०८) अथवा धर्म का मूल बतलाते समय 'वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः (मनु २ १२) इत्यादि वचन कहे हैं।

वैसे तो सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय नीति-तत्व से अनुप्राणित है' लेकिन नीति-परक काव्य में यह तत्व अपना प्रत्यक्ष और स्वतन्त्र स्वरूप प्रकट करता है। नीति का प्रारम्भिक रूप ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण उपनिषदों सूत्र ग्रंथों रामायण महाभारत आदि ग्रंथों में प्रचुर मात्रा में देखने एवं पढ़ने को मिलता है। 'धम्मपद' वह प्राचीनतम संकलन है जिसमें नीति विषयक रचनाएँ उत्कृष्ट रूप में संकलित हुई हैं। लेकिन संस्कृत पालि प्राकृत अपभ्रंश एवं हिन्दी सभी प्रकार की भाषा के ग्रन्थों में नीति विषयक रचनाओं की प्रचुरता प्रायः समान रूप से दृष्टिगोचर होती है।

चाणक्य के नाम से राजनीति समुच्चय चाणक्य नीति बृहद् चाणक्य लघु चाणक्य आदि संकलन भोजराज वररुचि घटकर्पर बेताल भट्ट आदि के नामों से सम्बद्ध नीति मुक्तक नीति वाक्यामृत विदुर नीति भर्तृहरि का नीतिशतक काश्मीरी कवि मम्मट की कृतियाँ आदि नीति रचनाएँ अपभ्रंश नीति काव्य-परम्परा के पहले मिलती हैं। अतिरिक्त उपदेशात्मक और दार्शनिक तत्वों से संवलित पालि के 'अंगुत्तर निकाय' की कुछ रचनाएँ महायान मतावलम्बी शान्तिदेव का बोधिचर्यावतार आचार्य शंकर की शत श्लोकी' आदि हैं। अस्तु

१ वही

प्रस्तुत हमारा संग्रह राजस्थानी नीति के दोहों को लेकर है। दोहा एक मात्रिक छन्द है। इसके विषम चरणों में १३ और सम चरणों में (शिव) ११ मात्राएँ होती हैं। पहिले और तीसरे अर्थात् विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए। अन्त में लघु होता है। जैसे—

[1] SI III SS IS =१३

काम विषम तेरा कसा

II II SS SI

सम शिव दोहा मूल =११

वैसे तो दोहों के अनेक भेद हैं, पर यहाँ उनमें से मुख्य जो २३ हैं वे ही दिए जाते हैं—

[2](१) भ्रमर, (२) सुभ्रामर, (३) शरभ (४) श्येन (५) मंडूक (६) मर्कट (७) करभ (८) नर (९) हंस (१०) गयन्द या मदुकल (११) पयोधर, (१२) चल या बल (१३) वानर (१४) त्रिकल (१५) कच्छप (१६) मच्छ (१७) शार्दूल (१८) अहीवर, (१९) व्याल (२०) बिडाल (२१) श्वान (२२) उदर और (२३) सर्प।

दोहा अपभ्रंश काल का एक बहुत ही महत्वपूर्ण छन्द है। राजस्थानी भाषा व हिन्दी में दोहों को लेकर सैकड़ों कवियों ने अपनी रचनाएँ की हैं। 'ढोला मारू रा दूहा' माधवानल काम कन्दला 'बिहारी सतसई' आदि अनेकों प्रबन्ध केवल दोहों को लेकर रचे गए हैं।

दोहों के प्रकार को लेकर 'छन्द प्रभाकर' एवं 'प्राकृत पैंगलम्' विशेष उल्लेखनीय हैं। फिर भी जितने प्रकार के दोहे राजस्थानी भाषा में देखने को मिलते हैं उतनी संख्या में किसी अन्य भाषा में सम्भवतः नहीं मिल सके हैं। इस विषय में श्री अगरचंदजी नाहटा का निबंध

---

१ छन्द प्रभाकर—जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' पृष्ठ ८४

२ छन्द प्रभाकर पृ ८८

३ प्राकृत पैंगलम्—सम्पादक भोला शंकर व्यास पृ ७

'कविराज सोम-रचित दोधकचन्द्रिका' विशेष अध्ययन योग्य है।

श्री नाहटाजी लिखते हैं—दोहे कई प्रकार के होते हैं। राजस्थानी में उनके सबसे अधिक प्रकार मिलते हैं। यथा

हंसु (१) गयंद (२) बराह (३) पहु (४)
पिंगसु (५) तरसु (६) तमास (७) ।
सायर (८) मच्छयउ (९) मेरु (१०)
एरू(११) कुंजर(१२) हरू(१३) मुकराल(१४) ॥१॥
बरहुणि (१५) वारुणि (१६) अहि (१७)
पवणु(१८) वग्गयणु(१९) मणु(२) मार्तंडु(२१)।
मंडूलउ (२२) कार्या समरु
महरूपुवण (२३) छन्दु ॥ २ ॥

हम श्रद्धेय श्री अगरचंदजी नाहटा अपने परम सहयोगी साथी भाई श्री मुरलीधरजी व्यास एवं श्री सूर्यशंकरजी पारिक के बड़े ही आभारी हैं जिनके व्यक्तिगत दोहा-संग्रह का हमने खुलकर प्रयोग किया है।

विज्ञ-पाठक जानते ही हैं—श्रद्धेय श्री अगरचंदजी नाहटा का अपना व्यक्ति-गत ग्रंथालय है। हमें इस 'श्री अभय जैन ग्रंथालय' से अप्रकाशित एवं प्रकाशित सभी प्रकार के ग्रंथों से राजस्थानी नीति दोहों को लेकर सामग्री मिल सकी है। उन ग्रंथों में से निम्नलिखित ग्रंथ विशेष उल्लेखनीय हैं—

(१) शेखर सोरठा
(२) भैरव बावनी
(३) कामिया-चातक

---

१ 'कविराज सोम-रचित दोधक चन्द्रिका'—
श्री अगरचंद नाहटा
(मरु भारती—)

(४) राजस्थान के ऐतिहासिक प्रवाद
(५) राजिया काव्य
(६) राजिये के सोरठे
(७) बांकीदास ग्रन्थावली भाग १
(८) " भाग २
(९) " भाग ३
(१) राजिया रा दूहा
(११) रमणिये के दोहे
(१२) मान पद्य-संग्रह भाग १
(१३) " संग्रह भाग २
(१४) गुजराती दूहा संग्रह
(१५) हाला झाला रा कुण्डलियां
(१६) चकरिये की चहक
(१७) राजस्थान रा दूहा
(१८) कमा हाथीरामकृत सोरठे
(१९) दोहा संग्रह
(२) शिक्षा बहोत्तरी— श्री उम्मेदसिंह महता
(२१) नेक नसीहत — "
(२२) मकल बतीसी — "
(२३) संपति बतीसी — "
(२४) ज्ञान बतीसी — "
(२५) उमेद पचीसी — "
(२६) सारसमुच्चयसार — " "
(२७) हस्तलिखित अनेक संग्रह

नीति की उपादेयता—उसका हमारे जीवन से सम्बन्ध स्वयं सिद्ध है। हमने इस गहन विषय को इसकी गहराई में जाकर इसे अधिक गम्भीर एवं जटिल बनाना उचित नहीं समझा है। अतः इस पर यहाँ संक्षेप में ही प्रकाश डालना उचित समझा गया है। कुलिया के साथ

रण शास्त्र बताते हैं कि दुनिया कैसी है। नीति का मार्ग यह बताता है कि दुनिया कैसी होनी चाहिए। इस मार्ग के द्वारा हम यह जान सकते हैं कि मनुष्य को किस तरह आचारण करना चाहिए।"[1]

महात्मा गांधी इसी पुस्तक में आगे और लिखते हैं—

[2] नीति का विचार तो वास्तुविशारद के नकशे के जैसा है जो यह बताता है कि घर कैसा होना चाहिए। हम घर बना चुके हों तो नक्शा हमारे लिए बेकार हो जाता है। वैसे ही आचरण न किया हो तो नीति का विचार नकशे की तरह बेकार हो जाता है। बहुतेरे नीति के वचन याद करते हैं, उस विषय पर भाषण करते हैं पर उसके अनुसार चलते नहीं और चलना चाहते भी नहीं। कितने ही तो मानते हैं कि नीति के विचारों को इस लोक में नहीं परलोक में अमल लाना चाहिए। यह कुछ सराह ने लायक विचार नहीं माना जा सकता। एक विचार वान् मनुष्य ने कहा है कि हमें सम्पूर्ण होना हो तो हमें आज से ही नीति के अनुसार चलना है चाहे इसमें कितने ही कष्ट क्यों न सहन करने पड़ें।"

राजस्थानी नीति दोहों की अपनी एक लम्बी स्वस्थ दीर्घ परम्परा है। नीति के दोहों को लेकर राजिया नाथिया चेतरा भैरिया जसवन्त भोजिया कानिया उदैराज फूसिया किसनिया समन चकरिया मोतिया आदि सैंकड़ों कवियों के दोहे आज यहाँ के जन-साधारण के कण्ठ का हार बने हुए हैं। नीति ही सच्चाधर्म है, नीति ही सच्चा जीवन है इसके अभाव में जीवन का कोई मूल्य नहीं हो सकता-राजस्थानी यतियों से इस ओर सजग और जागरूक रहता आ रहा है। नीति-काव्य श्रेष्ठतर जीवन के आदर्शों को हमारे व्यवहार का इतनी शीघ्रता से अंग बना देता है जितनी शीघ्रता से युगों का

---

१ नीति-धर्म

—श्री महात्मागांधी पृ ११

२ वही— पृ १४

यत्नार्थ भी नहीं। यही कारण है—इसके निर्माण में हमारे सभी नीतिकारों ने लोक-भाषा का सहज सुघरा और मधुर रूप ही अपनाया है। हम यहाँ कतिपय दोहे पाठकों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं—

बसबन्त हींसी काच की जैसी नर की देह।
जतन करंता जावसी हर भज लावा लेह ॥२७१॥
करसी कूका हूक हाथो हाथ हकावसो।
फम्मसा बाहर फूंक कोई न बससी कानिया ॥२६७॥
गरमे मतरे मूजरी वैस मद्ध की खास।
मबसे हाथी घूमता रस्या नव रे वास ॥१२६॥

अर्थ स्पष्ट है—नश्वरता को लेकर कवि ने कितना कुछ सुन्दर शब्दों में गागर में सागर के समान जीवन के तथ्यों को हमारे सम्मुख रखा है। ठीक इसी प्रकार का दोहा हमें अपभ्रंश-काव्य में भी देखने को मिलता है—

[1]'भोसी मुञ्चि मा गब्बु करू, पिक्खिवि पड्गुरुव्वाइ।
चउदह सँ छहुत्तरइ मुञ्जह गयह गमाइ॥

उच्चादर्श वाविता को लेकर नीतिकार ने बड़े ही मार्मिक ढंग से समझाने का प्रयास किया है—

सरिता करै न पान बिरछन फल चाखै कदे।
देत न जावै मान परहित निपजै सेवरा ॥१२९॥

[2]रहीम जी भी इसी बात को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है—

तरवर फल नहिं खात है,
सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित
सम्पति संचहिं सुजान॥

---

१ प्रबन्ध-चिन्तामणि'—पृ० २४।
२ 'रहिमन विलास'—८। २७।

भाग्यवाद को लेकर कवि का यह दोहा बेजोड़ है। वह समझाने का प्रयत्न करता है—संसार में सभी प्रकार के पदार्थ हैं लेकिन मनुष्य को उतना ही मिल सकता है जितना उसके भाग्य में उसके कर्मों के अनुसार लिखा हुआ है—

सोनो घड़े सुनार
कंदोई रचावा करै।
भौगी भौगणहार
कर्म प्रमाणै किसनिया ॥ १२६९ ॥

इसी प्रकार, राजिया उमेदिया आदि कवियों के असंख्य दोहे, अवसर मर्यादा लक्ष्मी की चांचल्यता आदि को लक्षित करके लिखे गये हैं।

राजस्थान के सूक्तिकारों की संख्या सकड़ों पर है उनके रचित नीति के दोहे हजारों पर हैं।

संस्कृति और सभ्यता का चोली-दामन सा सम्बन्ध है। ये हमारे निजी और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। संस्कृति हमें राह बताती है तो सभ्यता हमें इस राह पर चलाती है। संस्कृति न हो तो आज मनुष्य और पशु के विचारों में कोई भेद न रहे। और यदि सभ्यता न हो तो मनुष्य और पशु दोनों का रहन सहन एक ही सा हो जाए। हमारी अपनी धारणा है—यदि इनकी बुनियादी नीति पर आधारित न हो यदि संस्कृति और सभ्यता नीति मूलक न हो तो संस्कृति सच्चे अर्थों में संस्कृति नहीं मानी जा सकती और सभ्यता सच्चे अर्थों में सभ्यता नही कही जा सकती।

यह हम पूर्व ही लिख चुके हैं—नीति तत्व आचार शास्त्र (Ethuce) से सम्बन्धित है। हर युग का कवि इस तत्व का समावेश ग्रहण अपने काव्य में अनायास ही कर लेता है। कवि भी इसी धरती का प्राणी है—सुख दु ख उसके भावुक हृदय को अनुप्राणित करते हैं। और इन्हीं सुख दुख से प्रेरित होकर परिस्थितिवश हो कवि वासित होता है और अपने काव्य में किसी न किसी रूप में अपनी तत्व दृष्टि को सामने कर ही देता है।

हिन्दी-साहित्य के इतिहास पर यदि एक दृष्टिपात करें तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि मध्ययुग का कवि कम से कम इस अर्थ में आधुनिक कवि से अधिक स्वतन्त्र था। वह नीति और उपदेश को अपना काव्य-विषय बना सकता था। जहाँ आज का आधुनिक कवि सीधे नीति कथन और उपदेश ज्ञापन को कलागत स्तर का स्तर न मानता है। मध्य-युगीन कवि इसलिये अधिक स्वच्छन्दतापूर्वक नीति और उपदेश तत्व को अपना काव्य विषय-काव्य-वस्तु बना पाता था क्योंकि तत्कालीन काव्य का मूल-उसका प्रेरणा-स्रोत धर्म था। आज के आधुनिक कवि का प्रेरणा स्रोत प्रथम सौन्दर्य-बोध और फिर आत्माभिव्यक्ति है। उपदेश और सीधे नीति-तत्व उसके लिए गौण हैं, उन्हें वह एकदम काव्य वस्तु नहीं मानता।

प्रत्येक युग का काव्य प्रतिमान उसका मान-दण्ड अपनी विशेषताओं को लिए हुए होता है। अतः हमें भी इन राजस्थानी नीति विषयक-दोहों को इन सभी उपर्युक्त विशेषताओं को दृष्टिगत रखकर ही अध्ययन करना होगा।

अन्त में हम पाठकों से इतना और निवेदन करना चाहेंगे—समय के अभाव के कारण हम इन दोहों का पृथक-पृथक वर्गीकरण नहीं कर सके हैं। साथ ही मौखिक परम्परा के कारण एवं परिस्थितिवश दोहे जिस रूप में हमें उपलब्ध हो सके हैं, हमने उन्हीं रूपों में ग्रहण किया है।

अतः पाठ गड़बड़ व अशयुक्त भी रह गये हैं। कुछ हिन्दी दोहे जो राजस्थान में प्रचलित हैं उन्हें भी दे दिये। राजस्थानी-नीति विषयक दोहों का इतना बड़ा संग्रह अभी तक हमें नहीं देखने को मिला है।

इसके अतिरिक्त कुछ दोहे अभी भी ऐसे हैं जिन्हें हम इस संग्रह में नहीं ले सके हैं। पूर्ण विश्वास है—हम दूसरे संस्करण में निश्चय ही ऐसा कर सकेंगे।

प्रस्तुत संग्रह को तैयार करने में हमें अनेक व्यक्तियों की सहायता मिली है—उन सबके हम हृदय से आभारी हैं।

—मोहनलाल पुरोहित

जो जामें निसदिन बसे सो तामें परवीन।
सरिता में गज बह परै तामें पलै न मीन ॥ ७ ॥
कर कुसंग चाहत कुशल तुलसी यह अफसोस।
महिमा घटी समंद की रावण के पाड़ोस ॥ ८ ॥
सबसे आगे होय के मत कोई करिये काज।
सुधरे समफल होत है बिगड़े गारी लाज ॥ ९ ॥
तुलसी या संसार में रावण रहे न राम।
दोनहुं के अवशेष हैं, दूषित भूषित नाम ॥१०॥
कहा लंका-पति ले गयौ कहा करण गयौ खोय।
जसजीवन अपजस मरण कर देखो सब कोय ॥११॥
लोकन के अपवाद से डर करिये दिन रैण।
रघुपति सीता परहरी सुनत रजक के बैण ॥१२॥
तुलसी नफा पहचाणिये भले बुरे क्या काम।
भूत से हनवंत मिले हणवंत सेती राम ॥१३॥
मरज दिवानी गूजरी अब आई घर धूप।
सावण छाछ न घालती जेठ परोसे दूध ॥१४॥

---

(७) जो जामें — जो जिसमें। सो तामें — वह उसी में। परवीन — प्रवीण। बह परै — गिर पड़ता है। मीन = मछली।
(८) कुसंग — बुरी संगत। समंद — समुद्र।
(९) आगे होय के — अगुआ होकर। सुधरे = सुधरने पर। समफल — बराबर का फल।
(१०) रावण रहे न राम — न रावण रहा और न राम ही रहा। दूषित — बुरे।
(११) कहा = क्या। लंकापति — रावण। जस — यश। अपजस — बुराई।
(१२) लोकन के अपवाद — संसार के अपवाद से। दिन रैण — रात दिन। परहरी — छोड़ दी। रजक — धोबी।
(१३) नफा पहचाणिये = नफा समझो। हनवंत — हनुमान। सेती — से।
(१४) मरज — स्वार्थ। दूध = दूध।

गरज हुवी मन ग्रौर था मिटी गरज मन ग्रौर।
उमेराज मन की प्रवृत्ति (गति) रहै न एकी ठौर ॥१५॥

मीठी मीठी वस्तु नहि मीठी जाकी चाह।
ग्रमली मिसरी छांडि के ग्राफू खात सराह ॥१६॥

पाट पंवाई भाए जो रेबारी र कुमार।
ऐवा कवेन ग्रापणा, कर देखो उपकार ॥१७॥

सोहा साकड़ा चामड़ा पहसा किसा वखाए।
बहू बघेरा डीकरा नीवड़िया निरमाए ॥१८॥

नहँ थोन्या नहँ मीमियो नहँ खायो फूगांह।
ग्रापकरणै पर ग्रापने सूभै सौ कोसांह ॥१९॥

ग्राग विरच्यो जग मरै सिंह विरच्यो गाय।
त्रिया विरछा ज्यो करै सा दई वो न सहाय ॥२०॥

आगल सींगो डांगरो पाछल चूंठी नार।
बाकर कूंभो आदमी (याने) माता आगे मार ॥२१॥
तरिया चरित समंद जळ ऊंच तणो आकाश।
उत्तर पताळ देवगत पार न पायो तास ॥२२॥
सीखा बात अगम्म की कहन सुनन की नाँहीं।
जाणे सो कहवे नहीं कहे सो जाणे नांही ॥२३॥
को सुख को दुख देत है देत करम झकझोर।
उलझत-सुलझत आपुही धजा पवन के जोर ॥२४॥
स्वारथ के सब ही सगे बिन स्वारथ के बैर।
देख्या मैं निज आंख तैं जित समरथ जित खैर ॥२५॥
साँची इण संसार में दोय बात है सार।
झूठ बचन ना बोलणो रखणो सम बेवार ॥२६॥
इन्द्रीय काबू राखणो यह धरमा रो सार।
जो न इणी पर रह सकै, पड़ी वरणां पै मार ॥२७॥
नेहचे है संसार में कोउन वस्त अवस्स।
फिर तू ममता राखनै करै काहरो गस्स ॥२८॥

---

(२१) आगल सींगो = आगे की तरफ निकलते हुए पैने सींग। डांगरा — बैल। पाछल चूंठी — पीठ की तरफ झुके खड़े हुए स्त्री। बाकर कूंभो — जिसकी टाँग दोनों बगल की तरफ बढ़ी हुई हो। मात आगे — देवी के सामने।
(२२) तरिया — स्त्री। चरित = चरित्र। समंद = समुद्र। देवगत — देवगति
(२३) अगम — भविष्य। कहन-सुनन — कहने सुनने की।
(२४) को = कोई। झकझोर — रोष। उलझत-सुलझत = उलझना सुलझना धजा — ध्वजा।
(२५) सगे — सगे-सम्बन्धी। बैर — शत्रुता। खैर — मित।
(२६) इण = इस। झूठ — झूठ। सम = बराबर। बेवार — व्यवहार।
(२७) वरणां — सब पर।
(२८) नैहचे — निश्चय। वस्त — वस्तु। गस्स — पीर।

मार होत घण भांत की लाठी खग तरवार ।
(पर) मर्म मार बहुत ही बुरी तातैं नैमन मार ॥१६॥
कुल रो धरम न छाँड़िये धन रो देख अभाव ।
साच झूठ धन संग्रहे, वेस्या जात सभाव ॥१७॥
मन मैला तन ऊजला बुगला कैसा भेक ।
उणसूं तो कागा भला भीतर बाहर एक ॥१८॥
थोड़ा बोला घण सहाँ मिहपण पै नैठांह ।
जो परधाड़ा धायवा मीत करीजे ताह ॥१९॥
कंटक पेड़ बबूल रो इसड़ो उणरे फूल ।
कहा कहूँ करतारनैं तन भर ऐसी भूल ॥४ ॥
तू रतनाकर नाम बळ मत कर गाव गुमान ।
जळ खारो खारो बहर किणही न आवै काम ॥४१॥
चंद कलंकी जनमियो सायर भरे सताप ।
हुओ मथन खारो हुओ पूत तणो परताप ॥४२॥

---

(१६) मार — प्रहार । घण — बहुत । भर — भीर ।
(१७) सभाव — स्वभाव ।
(१८) ऊजला = उजला, उज्ज्वल । बुगला कैसा — बगुले की भाँति ।
(१९) थोड़ा बोला — कम बोलने वाला । घण सहाँ = सहनशील । नैठांह — नैठवान । परधाड़ा = दूसरों पर आक्रमण होने पर । धायवा — धावे चढ़कर । मीत — मित्र ।
(४) कंटक — काँटेवाला । इसड़ो — ऐसा । उणरे — उसके । करतार — भगवान ।
(४१) नामबळ — केवल नाम का बल । बळ — बल ताकत । गाव — गर्व । किणही — किसी के ।
(४२) पूत तणो = पुत्र होने के वजह ।

बग एक मुनी ऊजळा मुधरा बोला मीर ।
पूछो सफरी पनंग नै करतब कई कठौर ॥४३॥
कलम पुस्तकां कामणी हाथ पराये जाय ।
भस्ट भ्रस्ट मरदन यमां कदी न पाछी आय ॥४४॥
नर गिर सारां एक नहीं नरां गिरां में फेर ।
इक मलयाचल पेरवसो इक परवत सुमेर ॥४५॥
साँई टेढ़ी चक्खियाँ बैरी समक तमाम ।
टपेक मोसा महरका मालों करत सलाम ॥४६॥
स्रवण नैन अर नासका सब ही के इक ठौर ।
मुणणो केणो समझणो, चतुरन को कुछ और ॥४७॥
सूरज को सुत व्याधि है निकसत वचन भुजंग ।
ताकी औषध मौन है विष नहीं व्यापत अंग ॥४८॥
घायलड़ा पायू नहीं जाता साधु न मोड़ ।
हंसा नै सर वर घणा सर वर हंस करोड़ ॥४९॥

---

(४३) बग—बगुला । मुनी = मुनि । ऊजळा—श्वेतवर्ण । मधुरा—मीठे शब्द । सफरी—मछली । पनंग—सर्प । कठोर—बुरा ।

(४४) कामणी—स्त्री । हाथ पराये—दूसरे के हाथ में । मरदन—कुचलना । कदीन—कभी भी । पाछी—वापिस ।

(४५) गिर—पहाड़ । सारां—तमाम । फेर—फर्क । पेरवसो—ऐसा । परवत—पर्वत पहाड़ । सुमेर = सुमेरु ।

(४६) साँई—परमेश्वर भगवान । टेढ़ी—बुरी दृष्टि । समक—संसार । टपेक—तनिक । महर का—दया का ।

(४७) स्रवण—कान । अर—और । इक—एक । ठौर = स्थान । केणो—कहना । समझणो—समझना ।

(४८) सूरज = सूर्य । भुजंग—सर्प (काला नाग) । औषद—दवा । मौन—शान्त चुप्पी । अंग—शरीर ।

(४९) घायलड़ा—घायल हुए को । पायू नहीं = रोकना नहीं । जाता—जाने हुए को । मोड़—वापिस । घणा—बहुत ।

सरवर हंस मनाय मैं नेड़ा घणा बहोड़ ।
ज्यां सूं लाग्या फूटरा ज्यां सूं चोंच न तोड़ ॥५०॥
हंसा समंद मनाय मैं के जळ थोड़ो होय ।
डाबर-खाबर डोलतां भलो न कहसी कोय ॥५१॥
हंसा बिरुद बिचार मैं चुगै त मोती चुग्ग ।
ना तर रहवे लांघणो बीणो किताक जुग्ग ॥५२॥
हंसा अपणो बार नै छोड़ कठै मत जाय ।
दुख में आडा आवसी और न कोई आय ॥५३॥
हंसा आ पारखड़ी छीलर जळ न पियंत ।
कै पियै मान सरोवरे कै तरसिया भमंत ॥५४॥
दाड़म केरे फूलड़ैं भँवरा प्रीत न बांध ।
जै सौ बरसां सेवियै, तऊ न पावै गंध ॥५५॥
ऐ बगुला मुनि ऊजळा मीठा बोला मोर ।
पूछो सफरी पन्नग नै उणरा किसब कठोर ॥५६॥
सिंघा आ ही आखड़ी पर मारयो ना खाय ।
ठीघी फाळ न नावड़ै भामा लार न खाय ॥५७॥

---

(५०) नेड़ा — नजदीक पास । बहोड़ — लौटा के । ज्यांसू = जिनसे । फूटरा — सुन्दर ।
(५१) समंद — समुद्र । डाबर — छोटी तलाई । कोय — कोई ।
(५२) बिरुद — बड़प्पन । ना तर = नहीं तो । किताक = कितनेक ।
(५३) कठै — कहीं । आडा आवसी = काम आयेंगे ।
(५४) आ — यह । पारखड़ी — परीक्षा । कै = या । तरसिया — प्यासे । भमंत — फिरते हैं ।
(५५) दाड़म = अनार । केरे — के । तऊ = तब भी ।
(५६) ऊजळा = स्वच्छ सफेद । सफरी — मछली । पन्नग — सांप । किसब — करतूत ।
(५७) आखड़ी — नहीं स्वीकार करने का नियम । नाहीं = नहीं । परमारयो = दूसरे के द्वारा मारा हुआ । लार — पीछे ।

कुंभर, विभ्भ विसार, वे चरियो तू मोकळो।
हिव तू राज पुकार, बड़ पूळा संतोस कर ॥५८॥
पत-विछोड़ण फळ हरण ऊमर बीट करंत।
भायां भावर पंखिया सरवर तोय दियंत ॥५९॥
पंख फड़ाफड़ थंथहर पग्गां तणा निहाव।
तरवर तो बिन कुण सहै सिर वीपता पाव ॥६०॥
भाम भाम कर सींचियो नीकस गयो बबूळ।
बैसण साम्या छांयड़ी भाजण साम्या सूळ ॥६१॥
समदर रै मरजाद में ज्वार किया मा ज्याय।
छोटा छीलर ऊफळे पोड़ी छांटां मांय ॥६२॥
सुण समदर सौ जोजना लीक छोड़ मत जाह।
छोटा छीलर ऊफळै तैं घर रीत न जाह ॥६३॥
छीलरियां ज्यूं ऊफळो थोड़ी छांटां मांय।
समदर थां सूं सौ गणी लीक छोड़ नह जाय ॥६४॥
सायर फाटयो जस हटयो माणक रतन सियाह।
रीत बिलोटा माणसां सांसोटा पुणियाह ॥६५॥

---

(५८) कुंभर = हाथी। विभ्भ = विभ्य (बना बंधन)। मोकळो = बहुत मुक्त होकर। हिव = अब। बड़ = घास।

(५९) बीट = विष्ठा। पंखिया = पक्षी। तोय = तो भी।

(६) कुण = कौन।

(६१) नीकस गयो = निकल गया। बैसण = बैठना। छांयड़ी = छाया। भाजण साम्या = लगने लगे। सूळ = कांटे।

(६२) समदर = समुद्र। रै = रहता है। ऊफळे = मर्यादा छोड़कर बह चलते हैं। छांटां = बूंदें।

(६३) सौ जोजना = सौ योजन विस्तार वाले। लीक = मर्यादा। तैं = तुम्हारे। जाह = यह।

(६४) नह = नहीं।

(६५) फाटयो = फटा। रतनसियाह = विखर गये। रीत बिलोटा = बिना ढंग के हो रहे। सांसोटा = पाकिये।

छूटी मोटी मास सायर झील्या तणी।
हंसमया निरास बग देख्या जद छोड़ता ॥६६॥
भंवरो जाणै सब रस बिण जाणी बणराय।
घुण किम जाणै बापड़ो सूका लकड़ खाय ॥६७॥
हंस गया सारस गया बगुला गया विलाय।
सम्मन अब इण रूख पर कागा बैठा आय ॥६८॥
सम्मन पराये बाग में दाख चोंच भर खाय।
अपणो कछू न बीगड़ै अणही सही न जाय ॥६९॥
माव नहीं आदर नहीं, नेहहीन निरखंत।
सम्मन तहां न जाइये जे कंचन बरसंत ॥७०॥
जोवत ही जो हंस मिलै जावत देवै राय।
टूटी बाकी झोंपड़ी सम्मन का घर सोय ॥७१॥
आवत मुख बिगसै नहीं जावत माहीं कुम्हलाय।
सम्मन ऐसे नीच के नीच हुवै सो जाय ॥७२॥

---

(६६) छूटी—थी। झीलेणावरी = नहाने की। बग = बगुला। छोड़ता—तैरते हुए।
(६७) जाणै—समझता है। सब—तमाम। बणराय—बनराजि (के फूलों) को। बापड़ो—बेचारा। लकड़ = लकड़।
(६८) बुगला = बगुला। विलाय—छिपना। इण—इस। रूख—पेड़। कागा = कौआ।
(६९) पराये—दूसरे के। दाख—अंगूर। भर = भरा। कछू = कुछ। बीगड़ै—बिगड़ता है। अणही—अनहद बात (कि सदा दाखें खावे)।
(७०) माव नहीं—स्वागत नहीं। नेह-हीन—स्नेह बिना। निरखंत—देखता है। कंचन—सोना। बरसंत = बरसता हो।
(७१) जोवत—जाते ही। जावत = जाने पर। टूटी बाकी झोंपड़ी = उसकी झोंपड़ी टूटी हो। सम्मन का घर सोय—वही सम्मन का घर है।
(७२) मुख बिगसै—मुख खिल जाना। ऐसे नीच के = ऐसे नीच के यहाँ।

सब कोई प्रीत बटावसी सब कोई करसी भाव ।
सम्मन बै कुण रूखड़ा ज्यांन झकोळै वाव ।।७३।।
सम्मन असी प्रीत कर ज्यों हिंदू की जोय ।
जीता तो संग रहै, मरे पै सती होय ।।७४।।
सम्मन प्रीत न जोड़ियै जोड़ न तोड़ो कोय ।
तोड़े पाछे जोड़ियै गांठ गंठीली होय ।।७५।।
सम्मन अरहट की घड़ी भर कुमीत की ईठ ।
जब खाली सामही जब भरि है तब पीठ ।।७६।।
सम्मन प्रीत लगाय के दूर देस मत जाव ।
बसी हमारी नागरी हम मांगे तुम खाव ।।७७।।
सम्मन अेक दिन मोहियो बिच न समातो हार ।
कांई वायरा वाजगी बिच में पड़्या पहाड़ ।।७८।।
सम्मन कूड़ी काच की कोड़ी कोड़ी बेच ।
जब गळ लागी पीव के लाख टका की अेक ।।७९।।

---

(७३) सब कोई = सभी कोई । प्रीत बटावसी — प्रीत का लेन देन करते हैं । कुण — कौन । बै — वे । रूखड़ा — पेड़ । झकोळै — झकझोरना । वाव — हवा ।
(७४) जोय = स्त्री । संग रहै — साथ रहे । मरे पै — मरने पर ।
(७५) जोड़ियै — जोड़ना । जोड़ न तोड़ — जोड़कर फिर नहीं तोड़ना । गांठ-गंठीली — उलझने वाली गांठ ।
(७६) अरहट की घड़ी — अरहट की घड़ियां । भर — चोर । कुमीत — झूठे मित्र । ईठ — मिलता ।
(७७) प्रीत लगाय कै — प्रीत लगाकर । नागरी — नगरी ।
(७८) कांई वायरा — कैसी हवा । वाजगी — चल गई । बिच में — बीच में । मोहियो — ऐसा मोह था । समातो — समाता ।
(७९) कोड़ी कोड़ी बेच — कौड़ी कौड़ी (में बिकती है) बेच तो गळ लागी — गले लगी । पिव के — प्रीतम के ।

सज्जन संपत विपत में चे झूरै चे झूर।
मासा घटे न तिल बधै वे विध लिख्या अंकूर ॥८०॥
सज्जन साथा पुरस की रहे न भेळी धार।
तिण डूबे पथ्थर तिरे, अपणी अपणी धार ॥८१॥
नदी किनारे देखिये सज्जन सब संसार।
कइ उतरे, कइ ऊतरै, (कइ) ऊभा बांध तयार ॥८२॥
सज्जन रोवे कुण कूं हंसे स कुण विचार।
गया स आवण का नहीं रह्या स जावण हार ॥८३॥
हीलोळा दरियाव रा आम्ब हुंस सहंत।
बुगला कायर बापड़ा पैली लैर पुगंत ॥८४॥
सरवर, केम उतावळो सांभी हेळ न लेय।
आवां छां चढ़ आवस्यां पंख संभारण देय ॥८५॥
कपटी मित्र न कीजिये पेट पैठ बुध लेय।
पैली लाग लगाय के पाछै धोखा देय ॥८६॥

---

(८०) संपत-विपत में—सुख या दुख में। चे—वो। झूरै—रोते हैं। झूर—सूखें। विध—विधाता। अंकूर—अंक।

(८१) साथा=सदा। एकीधार—एक बंधी। अपणी अपणी धार—अपना अपना भाग्य भर। पथ्थर—पत्थर।

(८२) कइ उतरे—कई पार हो गये। कई ऊतरै—कई पार हो रहे हैं।

(८३) कुण कूं—किस को। गयास—जो चले गये हैं। आवण का नहीं—लौटने के नहीं। रह्यास—जो रह गये हैं। जावणहार—जाने ही वाले हैं।

(८४) हीलोळा—हिलोरें। आम्ब—प्रबल। सहंत—सहते हैं। बापड़ा—बेचारे। पैली लैर—पहली लहर। पुगंत—दूर चले जाते।

(८५) केम—किस लिए। उतावळो=उतावला। सांभी—सामने। हेळ—हिलोरा। आवास्यां—आयेंगे। पंख संभारण देय—जरा पंखों को सम्हाल लेने दे।

(८६) पेट पैठ—पेट में घुसकर। लाग—लड़ाई।

पर कारण दुख ना सहै सेय न हररस घूट ।
मार घसीटे श्रौर नू श्राप ऊट का ऊट ॥८७॥
हर भजणा हक बोलणा कूड़ा नांय कवस ।
ज्यांरा नाहीं ऊतरै, श्रातू पोर श्रमल्ल ॥८८॥
हक होयां हाजर खड़ा बेहक ऊजड़ वास ।
कोड़ो भावे पार सू खरा पईसो खास ॥८९॥
मरिया सो झक्के नहीं झक्के सो श्राधा ।
मरतां माही पारख्या बोल्या श्रर साधा ॥९०॥
पड़ियो चीथर पंथ में निकमो मती निहार ।
इणही रासी येक दिन साजै तणी नर नार ॥९१॥
बेड़े बेड़े ठीकरी निकमी मती विहार ।
मैं भी तपी रसोवड़ै, श्रपणी-श्रपणी बार ॥९२॥
उट्ठ धवला कंध धर थोभ्भ्यु थांभड़ियां ।
गाडो पड़्यो उवाड़ में सिरै न टोपड़ियां ॥९३॥

---

(८७) हररस घूट = हरि रस की घूंट (हरि का भजन) ।
(८८) हर भजणा — हरि का भजन करने वाले । कवस — वचन । श्रमल्ल = प्रमुख ।
(८९) हक होयां = हक की (जीत होने पर) । हाजर खड़ा — हाजिर रहती है । बेहक ऊजड़ वास — श्रन्याय की उजड़ जाती है । पारसूं दूर से ।
(९०) मरिया — मरे हुए । झक्कै नहीं — भभकते नहीं । मरतां — मर्दों की । माही — मही । पारख्या = परीक्षा । बोल्या — बोलने पर । साधा — सधा सधा ।
(९१) चीथर — चिथड़ा । निकमो = निकम्मा । इणही = इसने ।
(९२) बेड़े-बेड़े — घूरे-घूरे पर ।
(९३) उट्ठ — उठो । धवला — धौला बैल । कंध धर — कंधा दे । थोभ्भ्यु — स्थिर कर । टोपड़ियां = पहिये ।

मांगण सूं छोटो हुवै पायां फूलै गात।
तीन पैंडरो बावणो तीन लोक नहिं मात ॥८४॥
राजदवारे साधजन तीन बसत सूं जाय।
कै मीठै कै मानकूं कै माया की चाय ॥८५॥
दांत खुस्या कुच जरजरा सींगा छोडी संध।
ले छाई मन मटको जोरौं के गळ बंध ॥८६॥
तबलग प्यारे सब गरज सरी गरज कुणकाज।
किण ही कोई प्यारो नहीं बिना गरज उदैराज ॥८७॥
हुती गरज मन और वा मिटी गरज मन और।
उदैराज मन की प्रकृति रहै न एकी ठौर ॥८८॥
उदैराज, उद्यम कियां सब कुछ होवै त्यार।
गाय भैंस कुछ में नहीं दूध पिवै मंजार ॥८९॥
अहि पकड़ावै रीझ सूं सहत उदै न्रप मार।
सो नर रीझे दे नहीं धिक ताकी धिक्कार ॥९०॥

---

(८४) मांगणा सूं — मांगने से। पायें मिलने पर — तीन पैंडरो — तीन पैर का। बावणो = वामन।
(८५) राज दवारे — राजा के द्वार पर। साधजन — साधुजन। तीन बसत — तीन चीजों के लिए। कै — या। चाय — चाह। इच्छा।
(८६) दांत खुस्या = दांत ढीले हो गये। जर जरा = जर्जर। सींगा छोडी संध — सींगों ने संधि छोड़ दी (ढीले हो गये)। गळा = गले। बंध — बांधना।
(८७) तबलग — तभी तक। सरी गरज — गरज निकल जाने पर। किण ही — किसी को।
(८८) हुती — थी। ठौर — स्थान।
(८९) त्यार — तय्यार। कुछ = कोष। मंजार = बिल्ली।
(९०) अहि — सांप। रीझसूं — रीझकर। सहत — सहन करता है। न्रप — नृप। सो = वो नर।

धन बिन तन कूं देत है, पसु रीझ्यो उदैराज।
सो रीझ्यां धन का धणी, देत न मरत न लाज ॥१०१॥
ऊंधा मखातारां तणो जासी नाम निघट्ट।
जाण पखेरू ऊडिया मा लीहडी न वट्ट ॥१ २॥
खाणा पीणा खरचणा तिहूं चौथा देणा।
ऊंधा दुनिया न कुछ है आखर मर जाणा ॥१०३॥
खाया पीया खरच्या कहता है उदराज।
जिण खाया पीया नहीं तिण का कोण इलाज ॥१ ४॥
कूप पडै मखिया तरैं, बैठैं विसम जहाज।
उदैराज कह फिरत मर एक पेट के काज ॥१०५॥
मसणा सो डसणा नही डसणा मसणा नांय।
मुख मीठा उदैराज कह, है झूठा तनमांय ॥१ ६॥
पूत तजै परण्यो तजै तजै लोक की लाज।
एक-प्रीत के कारणे प्रीत मजब उदैराज ॥१०७॥

---

(१०१) तन कू = शरीर को। पसु — पशु ढोर। रीझ्यो — खुश होकर। धन का धणी — धन के मालिक।

(१ २) मखतारां — दान नहीं करने वाले। निघट्ट — नष्ट। जाण — जिस प्रकार। लीहडी — लकीर। वट — मार्ग (निशान)।

(१ ३) खाणु — पीणु — खाना पीना। खरचणा — खर्च करना। तिहुं — तीन। देणा — दान करना। आखर — आखिर।

(१ ४) खरच्या — खरचा। तिणका — उसका। कोण — क्या।

(१०५) कूप पडै — कुए में उतरता है। विसम — कठिन। एक पेट के काज —

(१ ६) मसणा — मसलते हैं। डसणा नहीं — काटते नहीं। मुख मीठा — जो मुंह पर मीठे होते हैं।

(१ ७) परण्यो — पति। लोक की लाज — लोक की लज्जा। मजब — मजीब।

कहा रूप से राचिये जो घट विमो न होय ।
कनक कटारी कवि उदै पेट न मारे कोय ॥१०८॥

और न कछू प्यारो नहीं ना कछु और अनूप ।
सब कुछ प्यारो है, उदा अपनी-अपनी चूप ॥१०९॥

तोड़ प्रीत फिर सांधिये तामें रहै न साज ।
जल ताता ठंडा किया स्वाद किसो उदराज ॥११०॥

अगन सोर, गज केहरी पाव-पवन थिर-मोड़ ।
उदैराज कैसे बणै प्रीत कपट एक ठौड़ ॥१११॥

सुगण न कीधा फूठरा निरगुण रूप पखाग ।
जगदीसर जसराज है दांतां पाइन भाग ॥११२॥

कांय करै अणुराव कोई पिसतावो करै ।
होणहार थिर थाय जाणहार जावै जसा ॥११३॥

निगुणां हूंदो नेह ऊगत दिन छाया इसो ।
सुगणां तणो सनेह, जसा ढळंती छांवड़ी ॥११४॥

---

(१०८) कहा—क्या । कनक कटारी—सोने की कटारी ।
(१०९) अनूप—सुन्दर । अपणी-अपणी—अपनी अपनी । चूप—चाव प्रेम ।
(११०) सांधिये—जोड़े । तामें—उसमें । जल—पानी । ताता—गर्म । किसो—कौन-सा ।
(१११) अगन सोर—अग्नि और शोरा । गज केहरी—हाथी और सिंह । पाव पवन—हवा ।
(११२) सुगण—गुणवान । कीधा—किए । फूठरा—सुन्दर । पखाण—पखाड़ बेहद । दांतां पाइन भाग—दांत तोड़ने के योग्य ।
(११३) कांय—क्या । अणुराव—ऐसा पुकारना । पिसतावो—पछतावा । होणहार—होनहार । थिर—अवश्य । थाय—होना ।
(११४) निगुणां—निगुणों का । हूंदो—होता है । ऊगत दिन—उगते दिन । सुगण—गुणवान । ढळंती—ढलती ।

एक-पखीणो नेह, प्रीत कियाँ पछताय जे।
दीपक देख पतंग बल-बल राख हुवे जसा ॥११५॥

सावणिया संसार को कीजे तो जोय नै।
नेह निभावणहार, जसा न बिसरै जीवता ॥११६॥

समझणहार सुजाण नर औसर चूके नहीं।
औसर रो अवसाण रहे घणां दिन राजिया ॥११७॥

जिणरो मनजळ जाय, जळ जिणरी खोटी करे।
जड़ा मूळ सूं जाय राम न राखे राजिया ॥११८॥

कुटळ निपट नाकार, नीच कपट छोड़े नहीं।
उत्तम करै उपकार रूठा तूठा राजिया ॥११९॥

सुख में प्रीत सवाय दुख में मुख टाळे दिये।
जो की कहूती जाय राम कचेड़ी राजिया ॥१२०॥

---

(११५) नेह-पखीणो — एकपक्षी। बल-बल — जल-जल जाना।

(११६) सावणिया — प्रियतम। जोय नै — देखभाल कर। नेह — प्रेम। निभावणहार — निभाने वाला। न बिसरै — न छोड़े। जीवता — जीने की।

(११७) समझणहार — समझदार। औसर — अवसर। अवसाण — अहसान घणां दिन — बहुत दिन तक।

(११८) जिणरो — जिसका। जळ — दूर। जिणरी — उसकी। खोटी करे — बुरी करे। जड़ा मूळ से — जड़ से।

(११९) कुटळ — कुटिल। निपट नाकार — बिलकुल निकम्मे। उत्तम करैं — भले आदमी। रूठा — नाराज होना। तूठा — उपकार करना प्रसन्न होना।

(१२) प्रीत सवाय — अत्यन्त प्रेम। दुख टाळो दिये — मुख छिपाना। जो — वह। की — क्या। कहती — कहेंगे। राम कचेड़ी — ईश्वर के दरबार में।

मुख ऊपर मिठियास घट मांही खोटा घड़े।
इसड़ा सूं इकलास राखीजै नहिं राजिया ॥१२१॥
उद्यम करो अनेक, अथवा अन उद्यम रहो।
होसी लहणे हेक राम करै सो राजिया ॥१२२॥
पढ़वो वेद पुराण सोरो इण संसार में।
वातां तणा विनाण रहस दुहेलो राजिया ॥१२३॥
कुछ सहज समुदाय गुण छोड़े अवगुण गहै।
जोंक चढ़ी कुच जाय रातो पीवे राजिया ॥१२४॥
गुण अवगुण जिण गाँव सुणे न कोई साँमळे।
उण नगरी बिच नाँव रोही आछी राजिया ॥१२५॥
मूरख टोळ तमाम धसकाँ राखे धनधणी।
मतराळो गुण धाम रांकोस्या मम राजिया ॥१२६॥
कारज सरै न कोय बळ प्राक्रम हिम्मत बिना।
हलकारयाँ की होय रंग्या स्याळाँ राजिया ॥१२७॥

---

(१२१) मुख ऊपर—मुंह पर। मिठियास—मीठी-मीठी बातें। घट—मन। सासूं—ऐसों से। इकलास—इखलास मित्रता प्रेम।

(१२२) उद्यम—प्रयत्न। होसी—होगा। लहणे निश्चय। रामकरे—जो परम करेगा।

(१२३) पढ़वो—पढ़ना। सोरो—सुगम। रहस—रहस्य। दुहेलो—कठि

(१२४) गहै—छोड़ते हैं। जोंक—जौंक। कुच—स्तन। रातो पी खून को पीती है।

(१२५) जिण गांव—जिस गाँव में। सुणे न कोई सांमळे—न कोई सुन और न समझता है। नांव—मत जाओ। रोही—जंगल अ आछी = अच्छा।

(१२६) टोळ—दल समुदाय। धसकाँ राखे—धप्पे मारा करता। धन धणी = बहुत हो।

(१२७) कारज सरै—कार्य होना। हलकारयां—ललकारने से। की होय या होता है। रंग्या स्याळ्याँ—रंगे हुए गीदड़।

मिले सिंह वन माय किण मिरगा मृगपत कियो।
जोरावर अति जाय रहे उरधगत राजिया ॥१२८॥

बल कुंजर कर जाय हाथल बल मोताहलां।
जो नाहर मर जाय रज भण भखे न राजिया ॥१२९॥

दाम न होय उदास मुतलब गुण-गाहक मिनख।
ओखद री कड़वास, रोगी गिणे न राजिया ॥१३०॥

गह भरियो गजराज मह पर वहै आपह मते।
कुकरिया बेकाज भगड़ भुंसे किम राजिया ॥१३१॥

असली री औलाद खून करयां न करे खता।
वाहे बदल वाद, रीझ दुलाठी राजिया ॥१३२॥

पल-पल में कर प्यार, पल पल में पलटे परा।
ये मुतलबरा यार, रहै न छाना राजिया ॥१३३॥

---

(१२८) किण — कौन। मृगपत — मृगपति। जोरावर — बलवान। उरधगत — ऊर्ध्वगति ऊर्ध्वारोहण।

(१२९) हाथल बल = पंजों का बल। मोताहलां — मोतियों वाला। नाहर — सिंह। रज — मिट्टी। भण = घास। भखे न — नहीं खाता।

(१३०) गुण-गाहक = गुणों का ग्राहक। मिनख — आदमी। ओखद — दवा औषध। गिणे — समझना।

(१३१) गहभरियो — मतवाला। गजराज — हाथी। महपर — पृथ्वी पर। वहै — चलता है। आपह मते — अपनी इच्छा से। कुकरिया — कुत्तियां। बेकाज = बिना काम। भगड़ भुंसे — यों ही भौंकना।

(१३२) असली री औलाद — अच्छे कुल में पैदा हुआ मनुष्य। खून करयां — बुरा व्यवहार करने पर। खता — बुराई। वाहे — मारना। रीझ — [illegible]। दुलाठी — दुलत्तियां।

(१३३) पल-पल में — पल पल में अर्थात क्षण में। पलटे परा — बदलते रहते हैं। मुतलब — मतलब। यार — दोस्त। रहै न छाना — प्रकट हो जाना।

पहली किया उपाव दव दुसमण आमय घटे ।
प्रचंड हुआ बस थाव रोका घाले राजिया ॥११४॥

भेक जतन सत एह, कूकर, कुगंध, कुमाणसां ।
छेड़ न कीजे छेह रैंगण दीजे राजिया ॥११५॥

दुख में होवे दीन सुख में साँई वीसरे ।
आफत पड़ियाँ अधीन, कायर नर यो काछिया ॥११६॥

सुलझै काचो सूत पै सुलझयो कुगत सूँ ।
पण कुळ बोड़ण पूत कदे न सुधरै काछिया ॥११७॥

नर नेही पर नार, नारी पर नर नेहसी ।
सुख-संपत-सतकार, कदे न पावै काछिया ॥११८॥

बोले मीठा बैण मतलब रै कारण मिळे ।
समझो कदे न सैण कपटी नर यो काछिया ॥११९॥

महूँचे करसी मास अवसर मिळिया आपणो ।
बैरी रो विसवास कदे न करणों काछिया ॥१४ ॥

---

(११४) उपाव = यत्न । दव — आग । दुसमण — दुश्मन । आमय — रोग । घटे — घटता है । बस थाव — हुआ कि वश में । रोका — नहीं । रोका घाले — नहीं देते हैं ।

(११५) सत एह — यही सत्य है । कूकर — कुत्ता । कुगंध — दुर्गन्ध । कुमाणस — दुष्ट मनुष्य ।

(११६) साँई वीसरे = भगवान को भूल जाय । यो — यह ।

(११७) सुलझै — सुलझाया जा सकता है । कुगत सूँ = यत्न से । पण — परन्तु । कुळ बोड़ण पूत — कुल को डुबाने वाला पुत्र ।

(११८) नार — नारी । कदे न पावै — कभी भी नहीं पा सकती ।

(११९) बैण — वचन । सैण — सज्जन अपने सगे ।

(१४) महूँचे करसी — निश्चय ही करेगा । मिळिया — मिलने पर । विसवास — विश्वास ।

दीसै सुख में दास, बिपत पड़्यां बैरी बणें।
बणां तणों बिसवास, कदे न करणों काळिया ॥१४१॥
बोलै मोटा बोल पड़्यां काम पलटै परो।
तिणरो भारी तोल, किण बिध होवै काळिया ॥१४२॥
जिण तिणरो मुख जोय बिथा न कहणीं बावळा।
हरी करै सो होय क्यूं पछतावै काळिया ॥१४३॥
भूख नींद भय भोग पसुवां मेंई पावजे।
जांणै ध्रम जप जोग कहजे मानव काळिया ॥१४४॥
करै सोच सुभ कांम सज्जन-संगत संचरै।
रटै सदा मुख रांम क्यूं दुख होवै काळिया ॥१४५॥
दोजख-दुख दुरंत भुगतै नर निज भाग सूं।
तारै हरी तुरंत करतां सुमरण काळिया ॥१४६॥
धरम-नीत उर धार, चित कर आतम-चिंतना।
सरब सुखां रो सार, कळजुग में रो काळिया ॥१४७॥

---

(१४१) दीसै — दीखे। बणे — हो जावें। बणां = बन आदमी।
(१४२) मोटा बोल — बड़ी बातें करना। पड़्यां काम — काम पड़ने पर। तिणरो — उसका। भारी तोल — बड़ा मानना। किणबिध — किस प्रकार।
(१४३) जिण तिणरो — हर किसी का। जोय — देखकर। बिथा — व्यथा-दुख। कहणी — कहना। बावळा — पागल। हरी करै — भगवान जो करता है। सो होय — वही होता है।
(१४४) मेंई — में भी। ध्रम — धर्म। कहजे — कहिये।
(१४५) संगत संचरै — संगति में रहे।
(१४६) दोजख — मुसलमानों के अनुसार नरक जिसमें पापी जाते हैं। भुगतै — भोगते हैं। निज भाग — अपने अपने भाग्य से। तारै — पार करते हैं।
(१४७) धरम नीत — धर्म और नीति। उर — हृदय। सरब — तमाम। कळजुग में रो — कलयुग में यह।

आतम बळ आधार, सदा भरोसो सत्त रो।
होवें के हथियार, की करस्यै जम कान्यिा ॥१४८॥
पेट-मती रो पार, नर आक्य जाणे नहीं।
ईसर-गती अपार, किण विध जाणें कान्यिा ॥१४९॥
सुख-दुख में इकसार, नितनेम छोड़े नहीं।
नीरा सहज निभार, किमन निभावे कान्यिा ॥ १५० ॥
मिळ जावे गिर हेम पारस ही हाथां पड़ै।
पाया माणिक प्रेम करे न कौड़ी कान्यिा ॥ १५१ ॥
मन में माने मूढ़ साचो कर संसार ने।
ग्यानी समझें गूढ़ काचो जग ऐ कान्यिा ॥ १५२ ॥
राजा रहै न रंक कोई बचे न काळ सूं।
अउकार रो अंक कदे न बिणसै कान्यिा ॥१५३॥
उद्यम सेती अरथ सिध होवें जु बारंबार।
करो करावो करि जोवो उद्यम करें उदार ॥१५४॥

---

(१४८) आतम बळ—आत्म बल। के—को (२)। हथयार—हथियार। की—क्या।
(१४९) पार—समझना। ईसर-गति—ईश्वर की गति ईश्वर की महिमा। किण विध—किस प्रकार।
(१५) इकसार—एक जैसा एक समान। नीरा—बनकर। किमन—कृपण।
(१५१) मिळ जावै—मिल जाने पर। गिर हेम—सोने का पर्वत। हाथां पड़ै—हाथ लग जाना। पाया—पाने। माणक—माणिक्य मणिरत्न। कदेन—कभी भी नहीं।
(१५२) मन में मानै—मन में समझे। मूढ़—मूर्ख। साचो कर—सत्य समझ कर। काचो जग ऐ—यह संसार कच्चा है।
(१५३) राजा रहै न रंक=न राजा रहेगा और न रंक (गरीब) ही रहेगा। अउकार—ओंकार।
(१५४) उद्यम सेती—उद्यम से। अरथ सिध—अर्थ की सिद्धि।

आळस सैं अति दुख होवै उद्यम सैं सुख जोय ।
हिम्मत कबहु न हारिये राम करै सो होय ॥१५५॥
भाग भरोसो है खरो उद्यम खरो उपाय ।
खरो भरोसो भुजनरो बुधबळ खरो कमाय ॥१५६॥
बखत देखकै बोलनो बखत को सोच विचार ।
भली बुरी हूं बखत सैं बखत बणावै वार ॥१५७॥
सूरय तेज प्रकाश दिन रजनी चंद विकास ।
अपने अपने समय में सबही करत उजास ॥१५८॥
अपने अपने बखत में कर सो चाहै होय ।
वार बणावै आपनी व्यार विना सब कोय ॥१५९॥
इच्छा सौ हो हजार की दस हजार लख-चाव ।
एक संतोष विना न सुख भूख मटै न अघाय ॥१६० ॥
मतलब मोटो जगत में मतलब सूं है प्यार ।
द्रव्य देखकर हित करै अंतर कपट अपार ॥१६१॥
गरज भरावै हाजरी गरज करज धन मोर ।
गरज आपरी करज से गरज सरी गुणचोर ॥१६२॥

---

(१५५) आळस—आलस्य । राम करै सो होय—जैसा राम करेगा वैसा ही होगा ।
(१५६) खरो—सत्य ठीक । भुजन रो—भुजाओं का । बुधबळ—बुद्धिबल ।
(१५७) बखत—समय ।
(१५८) रजनी—रात्रि । उजास—प्रकाश ।
(१५९) वार बणावै आपनी—अपनी अपनी इच्छा से कार्य करते हैं ।
(१६०) चाव—चाह । भूख मटै—भूख का मिटाना । अघाय—धापना ।
(१६१) मोटो—बड़ा । जगत में—संसार में । अंतर—हृदय (में) अपार—बहुत अधिक ।
(१६२) भरावै हाजरी—चाकरी करवाता है । आपरी—अपनी । गरज सरी—गरज निकल जाने पर । गुणचोर—गुण को नहीं मानने वाला ।

सुखमरजी सुख मतलबी मनख रह्या जग माँहि।
घणा बैठांरा तरवा फलै गयां फळ नाँहि ॥१६३॥
एक दिन इक पहर में एक घड़ी एक पल्ल।
पलि-पलि इस संसार की जाती जाय बदल्ल ॥१६४॥
विपति पाय धीरज धरै, करै उपाय अपाय।
वक्त पाय नहिं चूकिये निर्भै फळ मिल जाय ॥१६५॥
छोटे छोटे विटप सैं बड़े वृक्ष बनि जात।
समैं पाय सतरंज में प्याद वजीरी पात ॥१६६॥
कुलही को बड़पन मिलै ऊँची बैठक जोय।
नीच कुली को होय कोउ ताको आदर होय ॥१६७॥
गुणवारो संपति लहै लहै न गुण बिन कोय।
काढ़ै नीर पतालसें जो गुण घट में होय ॥१६८॥
लाख जतन धर कोड़ कुड़ कर देखो सब कोय।
अणहोणी होवे नहीं होणी हो सो होय ॥१६९॥
हर फरमाया वेह सच्चा जल लिख घाल्या अंक।
राई घटे न तिल बधे रहरे जीव निसंक ॥१७०॥

---

(१६३) मनख – आदमी। घणा बैठांरा – दूर बैठे कुओं का। तरवा – प्रेम। फलैंगयां – पास जाने पर।

(१६४) इक – एक। जाती जाय – होती जा रही है।

(१६५) वक्त – वक्त, समय। निर्भै – निर्भय।

(१६६) विटपों – पेड़ों से। वृक्ष – बड़ पेड़। बनिजात – बन जाते हैं। समैं पाय – समय पाकर।

(१६७) कुल ही को – कुलवान को ही। नीच कुली को – नीच कुल का।

(१६८) गुणवारो – गुणवाला। लहै – प्राप्त करता है। काढ़ै – निकालता है। गुण – रज्जु, रस्सी। घट में – घड़े में।

(१६९) लाख जतन – लाखों यत्न। धर – और। अण होणी – नहीं होने वाली। होणी हो – होनहार हो।

(१७०) हर फरमाया – भगवान ने जैसा कहा। रहरे जीव निसंक – हे जीव तू निशंक रह।

हर करसी सो होवसी, वस मौंही दौड़ेह ।
भरसी कोठी लोहरी उबरसी चौड़ेह ॥१७१॥

कहँ जाये कहँ ऊमने कहाँ लड़ाये लड्ड ।
को जाणे किण खाड में जाय पड़ेगे हड्ड ॥१७२॥

हरि हरि गायो नहीं घड़ी घड़ी बृजराज ।
गली-गली भटकत फिरो कोऊ न सुधरे काज ॥१७३॥

काया रूपी खेत है मन सा भयो किसान ।
पाप पुन्न दोऊ बीज है बोय सुलेय निदान ॥१७४॥

जाणें कई हर दूर है (पर) हर तो हिरदा मांय ।
इक रई टाटी-कपटरी तासूं दीसत नांय ॥१७५॥

राजा जोगी अगन जल यांरी उलटी रीत ।
डरता रहजो जगत में (ये) थोड़ी पाले प्रीत ॥१७६॥

विद्या वनिता बेल नृप ये नहि जात गणंत ।
जो जाके हिरदे बसे ताहु सौं लिपटंत ॥१७७॥

---

(१७१) हर करसी – भगवान करेंगे । होवसी – होगा । वस – जितना बन । दौड़ेह – दौड़ता है । लोहरी – लोहे की । उबरसी – बच जायगा ।

(१७२) कहँ – कहाँ । जाय – उत्पन्न हुए । ऊमने – बड़े हुए । लड्ड – प्यार । कोजाणे – कौन जानता है । किण – कौन सी । खाड – खड्डा । हड्ड – हड्डियाँ ।

(१७३) घड़ी घड़ी – घड़ी भर । गली-गली – गली गली में ।

(१७४) पुन्न – पुण्य ।

(१७५) जाणें – जानते हैं । टाटी – लम्बी दीवार आड़ ।

(१७६) यांरी – इनकी । थोड़ी – थोड़ी बचती ।

(१७७) वनिता – वेश्या । बेल – लता । ये नहीं जात पात न – ये जाति पांति नहीं देखते । हिरदे – हृदय । लिपटंत – लिपट जाते हैं ।

सत्र पुरुष, सभी नखी मृप कुल नदी रु नार ।
करणो नहीं अतबार कद, रहणो आप संभार ॥१७८॥

पातुर प्रीत पतंग रंग ताता मदरो तार ।
पहर पाछली मीर बस जात न लागे बार ॥१७९॥

सूको पस सूकी त्रिया रवि कन्या की धूप ।
निद्रा मैथुन प्रात को पाँचों ही काम सरूप ॥१८०॥

धांधो नाग अभागियो मदवो मायाधार ।
परतन चाले पाधरा समझणो सौ बार ॥१८१॥

बुध बगाड़े सुरा बधे पावे नहीं तन पोष ।
पाणी ने उण क्यूं पियो धाम खये भर दोष ॥१८२॥

मतहीणा माने नहीं पीकर काढ़े पोत ।
दाम गमावे गांठरो मर जावे बिन मोत ॥१८३॥

---

(१७८) सत्र पुरुष — शस्त्रधारी । सभी — सींग वाला पशु । नखी — नखवाला । नृपकुल — राज परिवार । करणो नहीं — नहीं करना चाहिए । अतबार = विश्वास ।

(१७९) पातुर = नाचने गाने वाली स्त्री वेश्या । ताता मदरो तार — तावे चिकने हुए शराब का नशा । पहर पाछली — पिछली पहर रात्रि ।

(१८०) सूकोपस — सूखा मांस । रवि कन्या — कन्या संक्रान्ति का रवि, पश्चिम मास । निद्रा मैथुन प्रात को — प्रातःकाल के समय की निद्रा और स्त्री संग ।

(१८१) अभागियो — अभागा व्यक्ति । मदवो — मद्यपान करने वाला । मायाधार धनवान । पाधरा — सीधे ।

(१८२) बुध = बुद्धि । सुरा — शराब । पोष — पोषण । पाणी = शराब मद्य । दाम — धन । दोष = प्रायश्चित ।

(१८३) मतहीणा — मतिहीन कुबुद्धि । पोत — कपड़ा कम ।

थारो मन थूं थाव सी मेहपे कर विसराम ।
थाणा थाणा पर रख्यो अपणो अपणो नाम ॥१८४॥

थांको ठाकर सेवियो अधक बढ़ावण अस्स ।
सो सेवा निसफळ गई हुई सु थांणे मस्स ॥१८५॥

के ठाकर मोळो भलो के आप ही कर सेव ।
अव विपसी दुबिधा बुरी करे न करता देव ॥१८६॥

हाका पर हाको हुवो डूंगर ऊपर हल्ल ।
लाज कहै मर जीवड़ा पेट कहै घर चल्ल ॥१८७॥

संपत ते मत हरखिये बिपत देख मत रोय ।
संपत माहीं विपत है करता करे सो होय ॥१८८॥

घट पर जनमे ना भयो जो गुण बिना मांय ।
जैसे वृक्ष उजाड़ में वृथा लाग झड़ जाय ॥१८९॥

पुहप सुगन्ध सिर पै रहे कै झूरै बन मांह ।
मानठौर सतपुरुष ही कै सुख-दुख पर मांह ॥१९ ॥

---

(१८४) थारो — तुम्हारा । थूं = तू । मेहपे = निश्चय । थाणा-थाणा पर = थाने थाने पर ।

(१८५) थांको ठाकुर = बालक ठाकुर । सेवियो — सेवा की । निसफळ गई = निष्फल गई । थांणे मस्स — मन ही कामना है ।

(१८६) मोळो — भोला । भला — अच्छा । अवविपसी — अवदीप का ।

(१८७) हाका = शोर । हाका पर हाको — शोर के ऊपर शोर । डूंगर = छोटी पहाड़ी । हल्ल — हल्ला । पेट = पापु ।

(१८८) संपत — सम्पत्ति । मत हरखिये — हर्षित नहीं होना चाहिए । विपत — विपत्ति । करता = ईश्वर ।

(१८९) घटपर — बड़े घर में । उजाड़ में — जंगल में । वृथा — व्यर्थ ।

(१९) पुहप — पुष्प । कै = या । मानठौर = सम्मानका स्थान ।

नाग-सिंह, वैरागि नृप सोभत ये निज स्थान ।
घर-घर भटके बटत हैं मोल-तेज तपमान ॥१११॥
कान मांस मोती करम मढ़ मढ़ कोम-भंडार ।
ऐसा फूटा कुछ नहीं पाथ ठोप परवार ॥११२॥
जैसो गुण दोस्यो दई, तैसो रूप निबंध ।
मह दोनों कहँ पाइये, सोनो और सुगंध ॥११३॥
साथ रखै तो जीव रख मन बिन जीव न रख्ख ।
साँई तोसूं बीनती रखै तो दोनूं रख्ख ॥११४॥
काच-कटोरो-नैण धन मोती हीरा मन्न ।
टूटा केड़े ना जुड़ै करजो जाव जतन्न ॥११५॥
अति को भलो न बोलबो अति की भली न चुप्प ।
अति को भलो न बरसबो अति की भली न धुप्प ॥११६॥
नीच नीच सब तर गया हरि सरण ज्यां लीन ।
जाती रा अभिमान में डूब्या घणा कुलीन ॥११७॥

---

(१११) सोभत—शोभा देते हैं । मोल-तेज—मूल्य और कांति । तपमान—तपस्या ।
(११२) मढ़—दुर्ग । मढ़ = मठ । पाथ = कठोर । कुछ नहीं—कुछ भी भेद नहीं ।
(११३) जैसो = जैसा । दई—दैव । तैसो—वैसा । निबंध—बनाया ।
(११४) जीव—जीवन प्राण । रख्ख = रखना । साँई—भगवान । तोसू—तुमसे । बीनती—प्रार्थना ।
(११५) काच—शीशा कांच । कटोरा = बरतन । मन—मन । टूटा केड़े—टूट जाने पर । कर जो—करना चाहिए । जतन = यत्न ।
(११६) अति—बहुत । भला—अच्छा । बोलबो—बोलना । चुप—चुप रहना । बरसबो—मेह का बरसना ।
(११७) नीच—तुच्छ व्यक्ति । तरगया—भवसागर पार हो गए । ज्यां—जिन्होंने । लीन—ली । जातीरा अभिमान—जाति के घमण्ड में । घणा—बहुत से ।

सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावे बासवी दीवो देत बुझाय ॥१९८॥
सबला में हरि बसत है, निबला में हरि नाय।
पर सबला जब सबली करे, हरि गरीब के मांय ॥१९९॥
पासो हाथी दांत को हाथ थका नहीं हाथ।
श्राप मतलबी श्रादमी साथ थकां नहीं साथ ॥२००॥
हंसा उड़ सरवर गया काग भया परधान।
जाव विप्र मिज घरहु को सिंह किसा जजमान ॥२०१॥
हंसा उड़ सरवर गया मूँगा मले न मौंत।
अब बन कटनी कीजिये बुगला ही से बौंत ॥२०२॥
जुही गई, केतक गई, गये गुलाब समूल।
अब तो रचि कौधा बने अलि सेमल के फूल ॥२०३॥
थथि सुत गनिका अधर पर, सौभते अटकंठ।
मानो भुजा सुकम्बरी पंथी मरे करंठ ॥२०४॥

(१९८) सबै — सब। सबल — ताकतवर बलवान। निबल — निर्बल कमजोर। बासवी — अग्नि ज्वाल।

(१९९) सबला — बलवान। निबला — कमजोर। सबली — जबरदस्ती करना।

(२००) पासो हाथी दांत को — हाथी दांत का पासा। हाथ थका — हाथ में होते हुए। नहीं हाथ — हाथ में नहीं। साथ थकां — साथ में होते हुए।

(२०१) सरवर — तालाब। काग — कौआ। भया — हुआ। परधान — प्रधान। किसा — कैसा, किसका। जजमान — यजमान।

(२०२) मूँगा मले न मौंत — बहुत सा मूल्य व्यय करने पर भी नहीं मिलता। बन कटनी — बिन काटना। बुगला ही से बौंत — बगुलों से बोलकर ही।

(२०३) समूल — बिल्कुल एकदम। अलि — भ्रमर। सेमल के फूल — सिम्बली के फूल की तरह। कौधा — करना होगा।

(२०४) थथि सुत — मोती। गनिका — वैश्या। अधर — होंठ। सुकंबरी — नाग सिमाणी। पंथी — राहगीर। मरे करंठ — मरा करता है।

हीमत कीमत होत है बाज बिकत बहु मोल।
कहा चील के घटत है जो पंजा नहीं मास ॥२०५॥
ज्यों कन्दुक गिर-गिर उठे त्यों नर वर छिन एक।
पापी दुख से उठत नहीं रेतपिण्ड ज्यों मुक्त ॥२०६॥
करकी मारी कंदुकी लगी भूमि उठि जाय।
सत पुरुष की विपति ज्यों छिन ही मिट जाय ॥२०७॥
तीनहु राखे दृष्टि में तीनों बिसर न देत।
तीनहु पहचाणे विमल जग अपनो कर लेत ॥२०८॥
करणो हो सो कीजिये काजा कैसा काम।
चोर्या मत धीरज धरो हृदय विचारो राम ॥२०९॥
सुरत देय तो धन दिये धन बिन सुरत निवार।
इक सुगता अर निरधनता दोन्यो पका न मार ॥२१ ॥
अग्नि प्रीत सहणो सुगम सुगम लगावे भार।
नेह निभाणा एक रस है ए कठिण व्यवहार ॥२११॥
रेजा मलमल नैनसुख ये तीनों इक गोत।
जैसो जाको गुरु मिले वैसो उनको पोत ॥२१२॥

(२ ५) हीमत कीमत होत है – साहस से ही मूल्य होता है। कहा चील के घटत है – चील का बाज की तुलना में क्या कमी हो सकती है? जो पंजा – वैसे ही पंजे हैं।

(२ ६) कन्दुक – गेंद। नरवर – धर्मी पुरुष।

(२ ७) कर – हाथ। कंदुकी – गेंद। छिनही में – क्षण ही में।

(२) बिसर न देन – बिसरने न दे। पहचाणे – पहिचाने। जग – संसार।

(२ ९) करणो हो – जो करना हो। काजा – कागा। कैसा – काम। चोर्या – मरोड़। तज – देखना।

(२१) सुरत – सुरत। इक – एक। अर – और। निधनता–निर्धनता।

(२११) सहणो – सहना। निभाणो – निभाना। ए – यह। कठिण – कठिन।

फरजी स्याह न हो सके गत टेढ़ी तासीर।
(पर) यह तो साची बाजते आखर हाल वजीर ॥२१३॥
धंम पन्थ सब जगत में बात मतामत लीन।
राम हृदय मन में दया तन सेवा में लीन ॥२१४॥
हे हरि तौने यह कहूँ मत भूली भरण भूल।
होणी सो तो हूँ गई, अब को कहो कबूल ॥२१५॥
भलो भलाई को चहै, ले नीचाई नीच।
सदा सराई मधुरता गरल सराई मीच ॥२१६॥
सत्य शील सम दम दया ज्ञान सफलता दान।
जग वल्लभ नर सूरता पावै दस पुनवान ॥२१७॥
राजा जोगी जोतसी वैद गरु के पास।
खाली हाथ न जावणो ले जाणा बुधि खास ॥२१८॥
बुरी क्रियां होवै बुरी लगै बुराई धाय।
आग लगावै और को वो आगे लगजाय ॥२१९॥
जैसी नीयत आपनी वैसी बरकत होय।
ऊंची नीची आपनी नीयत का फल होय ॥२२०॥

---

(२१३) फरजी — वजीर (शतरंज के मुहरों का एक नाम विशेष) स्याह — बादशाह। आखर — आखिर। तासीर — आदत स्वभाव।

(२१४) पन्थ — धर्म। राम हृदय — राम को हृदय में धारण करो। तन सेवा में लीन — सेवा भावना में शरीर को उत्सर्ग करो।

(२१५) तौने — तुम्हें। होणी — होने को था। हूँ गई — हो गई।

(२१६) सराई — सराहना करता है। गरल — विष। मीच — मृत्यु।

(२१७) जग वल्लभ — संसार का प्रिय। नर — और। पुनवान — पुण्यवान।

(२१८) जोतसी — ज्योतिषि। गरु — गुरु।

(२१९) बुरी क्रियां — बुरी करने पर। होवै बुरी — बुरी होती है। धाय — धाव।

(२२) बरकत — लाभ फायदा। फल — नतीजा।

आप भलो जग सब भलो बुरो बुरो जग जाण।
जाकी जैसी भावना वैसो फल सममान ॥२२१॥
सौ दिन चोर चकार का इक दिन साहूकार।
कसर मिलावै पकड़ कर, सो दिन की दे मार ॥२२२॥
नहीं मरद सब एकसा नहीं एकसी नार।
पांच आंगली एकसी करी नहीं करतार ॥२२३॥
बड़ा होवे नरमाइ कर, हानि करे, अभिमान।
मोटा बोल न बोलिये जाय जगत में साख ॥२२४॥
बहुत गई थोड़ी रही जामें निसि दिन जाय।
बहते दरिया मांहि अब हाथ धोयलें पाय ॥२२५॥
कहा जानों कहा होयगो खबर नहीं पल पलक।
करनहार करतार है, यही बात मनवस्स ॥२२६॥
मूँजी की पूँजी रहे आप जोड़ मर जाय।
धन का धाड़ा सब करें, लारे लुच्चा खाय ॥२२७॥
मोटा बोल न बोलिये ऐंठ बुरी है बात।
कहा जानों को वक्त में पर घर रैसो जाय ॥२२८॥

---

(२२१) भलो – भला। जग जाण – संसार को समझना। भावना – इच्छा।
(२२२) इक दिन – एक दिन।
(२२३) एकसा – एक जैसा। करतार – कर्तार, भगवान।
(२२४) मोटा बोल न बोलिये – अभिमान के शब्द नहीं बोलने चाहिए। साख – इज्जत।
(२२५) बहुत गई – बहुत सा समय बीत गया। दरिया – समुद्र।
(२२६) कहा जानों – क्या जाने। पल पलक – पल भर की। करनहार – करने वाला। यही – यही।
(२२७) मूँजी – कंजूस। आप जोड़ मर जाय – स्वयं कमाकर मर जाता है। धाड़ा – डाका पड़ना। लारे – पीछे से।
(२२८) मोटा बोल न बोलिये – बढ़ बढ़कर बात नहीं करनी चाहिए। वक्त – वक्त, समय।

सैंणो देणो नहीं भलो कहणो सहणो ठीक ।
लेणो देणो तीसरो रैणो मेणो नीक ॥२२९॥
घाव लगे तलवार को, जाको पट मिल जाय ।
दूजो घाव जबान को उमर भर रह जाय ॥२३०॥
वचन रतन की खाँण है जो कोई जाणे बोल ।
मुख सूं बाहिर काढ़िये हिये तराजू तोल ॥२३१॥
आंब फले नीचो नवे एरंड ऊँचो जाय ।
ऐसे ओछे नीच सूं झगड़ो करत बलाय ॥२३२॥
अकल मंद सूं नहीं हुवे निपट अनोखे काम ।
देणों मरणों मारणों काली हुंवा काम ।२३३॥
जल न डुबोवे काठ को कहो कहाँ की प्रीत ।
अपना सींचा जानिके यही बड़ों की रीत ॥२३४॥
गोला घरे न नीपजे ना गोलों री खांण ।
कै जाणंता परखिये कै बोलंता वाण ॥२३५॥

---

(२२९) सैणो देणो — लाना देना । सहणो ठीक — वचनों में ठीक कहा है ।
(२३) पट मिल जाय — कटा हुआ स्थान मिल जाता है । दूजी — दूसरा । उमर भर — तमाम उम्र भर ।
(२३१) जो कोई — जो कोई । जाणे बोल — बोलना जानता हो । काढ़िये — निकालिये । हिये तराजू — हृदय रूपि तराजू पर ।
(२३२) नीचो नवै — नीचा झुकता है । झगड़ो करत बलाय — व्यर्थ में झगड़ा कौन करे ।
(२३३) देणों — देना । मरणों — मरना देश के लिए मरना । काली हुंवा काम — पागल लोग ही कार्य कर सकते हैं ।
(२३४) जल न डुबोवै — पानी नहीं डुबाता है । काठ को — लकड़ी को ।
(२३५) गोला — नीच जाति का व्यक्ति । नीपजै — पैदा होना । खांण — खदान । जाणंता — चलता हुआ । परखिये — परीक्षा करनी । बोलंता — बोलते हुए । वाण — वाणी ।

अणमी रो ओछम समय लागै एसो कपट्ट ।
कै मन जाणै आपणो कै लोक करै प्रगट्ट ।।२३६।।
नारी नृपत तात जळ सर, पथर केकाण ।
ए सातों मति-अंध है फेरचा हार सुजाण ।।२३७।।
मन मैलो, तन ऊजळो बुगलो कपटी अंग ।
इणसूं तो वायस भलो तन मन एक ही रंग ।।२३८।।
काहू की मानी बिना भली भांत सब रीत ।
तीन न कीजै भूलहू प्रति विरोध प्रीत ।।२३९।।
कह्यो गक्को किरण भासियो मूंछां घसो लगाय ।
हंसि वस्यो हावरह्यै मृगमद मयो गमाय ।।२४०।।
उद्योग उद्यम किया सब कुछ होत तैयार ।
नाय बैस कुण्ड में नहीं सब कुछ होत तैयार ।।२४१।।
घर में रामा सहेलियां से कुसमण री सीख ।
सांवण बीतां हुवाई तीनों मांडे भीख ।।२४२।।

---

(२३६) लागै — इस तरह है । कपट्ट — कपट का व्यवहार । कै — या । मन जाणै आपणो — अपना मन जानता है । लोक — लड़का । करै प्रगट्ट — प्रकट करता है ।

(२३७) नृपत — नृपति राजा । सर — तालाब । पथर — पत्थर । ए — ये ।

(२३८) मन मैलो — मन का मैला । तन ऊजळो — शरीर से उज्ज्वल । इणसूं — इससे । वायस — कौवा । तन-मन एक ही रंग — बाहर और भीतर एक ही समान ।

(२३९) काहू की — किसी की । प्रति — विश्वास । विरोध — बैर । प्रीत — प्रेम ।

(२४०) मूंछां घसो लगाय — बदमाशी की मूंछ लगाकर । मृगमद — कस्तूरी ।

(२४१) उद्यम किया — मेहनत करने पर । कुण्ड में — बंद में ।

(२४२) रमा — राम । कुसमण री सीख — कुसमय की शिक्षा । हुवाई — हम बताई ।

टोटा सूं खोटो घणो, दोपर पड़ी न जात ।
सुपड़न की उपड़न लगी कुभरण जैसी बात ॥२४३॥
पातर प्रित पतंग रंग ताता मदरी तार ।
बाला योवन ऊड़ धन जात न लागे बार ॥२४४॥
डूंगरिया रळियामणा आगा ईसरदास ।
पैड़ा आपणै वेळिया कांटा भाटा बास ॥२४५॥
बड़ो पकोड़ी वाणियो कांसी लोह कसार ।
इतरा तो ताता भला ठंडा करे विकार ॥२४६॥
देह नवी चित नवो नैणां वोही सुभाव ।
हाय भवानी बावरी (तू) एक बार फिर आव ॥२४७॥
कसतूरी काळी करी सोने नहीं सुगंध ।
कुंजर रै नैठर नहीं भूल गयो गोविंद ॥२४८॥
कसतूरी रै रूप नहीं सोने नहीं सुगंध ।
गज हस्ती पोका नहीं भूल गयो गोविंद ॥२४९॥

---

(२४३) टोटा – घाटा । खोटो घणो – बहुत बुरा है । दोपर – दुम पर । सुपड़न की – भले आदमियों की । उपड़न लगी – उनके पैर उखड़ने लगे । कुभरण – बुरे आचरण वाला ।

(२४४) पातर प्रित – वैश्या का प्रेम । बाला योवन – बाला स्त्री का योवन । ऊड़धन – बुरा धन खराब कार्यों में कमाया हुआ धन ।

(२४५) डूंगरिया – पहाड़ । रळियामणा – सुन्दर लगते हैं । आगा – दूर से । पैड़ा – पाव । भाटा – पत्थर ।

(२४६) बड़ो – पकोड़ी । वाणियो – बनिया । इतरा – इतने । ताता भला – गर्म ही अच्छे हैं । विकार – नुकसान ।

(२४७) देह नवी – शरीर में स्फूर्ति । नैणां वोही सुभाव – आँखों में वही ज्योति । बावरी – पागल ।

(२४८) काळी करी – काली करदी । कुंजर – हाथी । नैठर – पाँव ।

(२४९) रूप नहीं – सुन्दरता नहीं । पोका (पोका) – पाँवें ।

भाखर थोबरण, सर, मरण टूटा सांधण नेह ।
ये भल आया महरकर, मोटा ठाकर मेह ॥२५०॥
तुलसी इण संसार में घट-घट कुबध भरीह ।
किण किण नै समझाय दूं कूप भांग पड़ीह ॥२५१॥
डूंगर तजै न मोरिया सरवर तजै न हंस ।
बाघो तजै न मार-भसि ज्यां बाळ त्यां मंस ॥२५२॥
गढ में गिरै गिरै में मांगळ मांसळ मांगळ ध्यान धरै ।
दरजी रो बेटो बैठ करै, जद गढ भर बटको मटक करै ॥२५३॥
सूतो साप जगाइयै उठ कर खपै मुवार ।
एता नाह जगाइयै सिंह, सरप भर बार ॥२५४॥
सगो समय परखियै दोसत दूर गयांह ।
तिरिया टोटै परखियै ठाकुर चूक कियांह ॥२५५॥
निरधन संसारी दुखी भूपत दुखी बड पंच ।
वेस्या दुखी कुरूपता जोगी दुखी धन संच ॥२५६॥

---

(२५०) भाखर — पहाड़ । थोबरण — बौना । सर मरण — तालाब को भरना । टूटा सांधण नेह — टूटे हुए प्रेम को जोड़ना । भल आया — अच्छे आए । मोटा — बड़ा ।

(२५१) इण = यह । घट-घट में — हृदय में हर व्यक्ति के दिल में । कुबध — बुराई । कूप भांग पड़ीह — सारे के सारे एक समान ही हो जाना ।

(२५२) डूंगर — पहाड़ । ज्यां — जहाँ । त्यां — तहाँ ।

(२५३) जद — तब । बटको — टुकड़ा । मटक करै — हुक्म करते ।

(२५४) सूतो — सोया हुआ । एता — इतना । सिंघ — सिंह । सरप — सांप । भर — चोर । बार — बुरा आदमी ।

(२५५) समय परखियै — समय आने पर परखना चाहिए । दूर गयांह — दूर जाने पर । टोटै — नुकसान में तंगी के समय ।

(२५६) निरधन — गरीब । संसारी दुखी — संसार में दुखी है । कुरूपता — बदसूरत । धन संच — धन संचय करने वाला ।

भजनी तो भूखां मरै तपसी लोग दुखीह ।
अबर-जबर री साहबी जबी लोग सुखीह ॥२५७॥
दाता दुख मत दीजियै, समझ दीजियै साथ ।
दुख नै सुखकर मांनसा, हियो तो होसी हाथ ॥२५८॥
तीन दिनां री सोख हुकम घणों रा हाकिमा ।
सदा सरीखी वेस रही न किणरी रेखसा ॥२५९॥
होत भला के सुत बुरो भलो बुरा के होय ।
दीपक से काजल प्रगट कमल कीच में होय ॥२६०॥
पंडित ग्यांनी सुघड़ नर, नृप वेस्या भट, नट्ट ।
इनसे कपट न कीजिये इनके रचे कपट्ट ॥२६१॥
बहन ठगै बेटी ठगै पुस्कर ठगै भतीज ।
बाण्यां, वेस्या बातरी मत कर जो परतीत ॥२६२॥
कांसी कुत्तो कुंभारजा कर लागां कूकंत ।
सोनो सीसो सुघड़ नर, मधुरै बाज्य करंत ॥२६३॥

---

(२५७) भजनी = भजन करने वाले । दुखीह — दुखी । अबर-जबर री साहबी — अव्यवस्थित सरकार हो । जबी लोग सुखीह — धूर्त लोग सुखी होते हैं ।

(२५८) दाता = भगवान । समझ — बुद्धि । हियो तो होसी हाथ — चित्त यदि स्थिर होगा ।

(२५९) घणोंरा — बहुतों का । सदा सरीखी — हमेशा एक ही समान स्थिति । रही न किणरी — किसी की भी नहीं रही ।

(२६) होत भला के सुत बुरो — भले आदमी के बुरा पुत्र हो जाता । भलो बुरा के होय — बुरे आदमी के भला लड़का हो जाता ।

(२६१) सुघड़ नर — चतुर आदमी । नट्ट — नट बाजीगर । इनके रचे कपट्ट — कपट (तो) इन्हीं का रचा हुआ है ।

(२६२) परतीत — विश्वास ।

(२६३) कुंभारजा — कुम्भी कुम्हार की । करलागां — हाथ लगते ही । कूकंत — कूकते हैं ।

प्यारी ना कोई पूत बंधव ना कोई बहनड़ी।
दोरा हुवा जमदूत नाम कुवासी नानिया ॥२६४॥
मात तात नै मीत सगा सजरा नै नाती सरब।
जम लेजासी जीत नाम कुवासी नानिया ॥२६५॥
हाजर हुसी हकीम पलक न छुमसी प्राणिया।
जमिड़ा लेसी जीम नाम कुवासी नानिया ॥२६६॥
करसी हल्ला कूक हाथो हाथ हकावसी।
फल्सा बाहर फूंक कोई न बमसी नानिया ॥२६७॥
दुष्ट पुरुष यो जानिये उगले बाहर निशंक।
चूक करन चूके नहीं राजन करदे रंक ॥२६८॥
पशु की पनही होत है, नर का कछू न होय।
नीकी नर करणी करे, तो नारायण सम होय ॥२६९॥
जब तुम आये जगत में जगत हंसा तुम रोय।
अब तुम ऐसी कर चलो हंसी न जग में होय ॥२७०॥

---

(२६४) बंधव – बन्धु बान्धव। बहनड़ी – बहन। दोरा हुवा – घेर लेगा। नाम – यमपाल का नाम। कुवासी – कुवायेंगे।

(२६५) मात – माता। मीत – मित्र। नाती – सम्बन्धी। सरब – समान। नाम – यमराज वचन।

(२६६) हुसी – होंगे। लेसी जीम – जीम खींच मार देंगे।

(२६७) करसी – करोगे। हल्ला कूक – बहुत जोर का रोना धोना। फूंक – जलाना।

(२६८) यो – उसको यह। उगले – उगलता है। निशंक – नि संकोच। चूक करन चूके नहीं – चूक करने में नहीं चूकता। राजन कर दे रंक – राजा को रंक बना देता है।

(२६९) पनही – जूती पगरखी। नीकी – अच्छी। करणी करे – कर्म करे।

(२७०) आये जगत में – संसार में आए। ऐसी कर चलो – ऐसा कार्य करके जाओ।

जसवंत सीसी काच की वैसि नर की देह।
जतन करंतां जावसी हर भज लाहा लेह ॥२०१॥
नह समझै मानै नहीं सिखावे कोइ न और।
अकल बिना रा आदमी ढबै किसी विध ढोर ॥२०२॥
कुल सपूत जाण्यो परै, लखे सुलच्छन गात।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात ॥२०३॥
तरवर, सरवर, संतजन चौथो बरसे मेह।
परमारथ के कारणे चारों धारें देह ॥२०४॥
दुरजन रूंख बबूल को सजन दुवार न बोय।
अमरत से सींचहु सदा तोहु कंटीलो होय ॥२०५॥
तरु सूका री अगनसा बारे सब बन राय।
त्योंही पूत कपूत तें सगरो बंस नसाय ॥२०६॥
ऊंचे बैठे न लहै गुन बिनु बड़पन कोय।
बैठो देवल सिखर पर, बायस गरुड़ न होय ॥२०७॥

---

(२०१) सीसी काच की — कांच की शीशी। जतन करंतां — यत्न करने पर भी। जावसी — चली जायगी। लाहा — लाभ आनन्द।

(२०२) नह — नहीं। सिखावे — सिखाता। और — दूसरा। ढबै — रुकना। ढोर — पशु।

(२०३) कुल सपूत = कुल में सपूत। लखे — दिखाई देते हैं। बिरवान — पेड़।

(२०४) तरवर — वृक्ष। सरवर — तालाब। संतजन — साधु पुरुष। परमारथ — दूसरों की भलाई के लिए। धारैं देह — देह धारण करते हैं।

(२०५) दुरजन — दुष्ट। रूंख — पेड़। दुवार — द्वार। बोय — बोना चाहिए। तोहु — तो भी। कंटीलो — कांटे वाला।

(२०६) बारे = जलाते हैं। बन बनराय — समस्त बन को। त्यों ही — वैसे ही। सगरो — तमाम। नसाय — नाश करना।

(२०७) ऊंचे बैठे — ऊंचा बैठने से। गुनबिन — बिना गुणों के। देवल — मन्दिर। बायस — काग पक्षी। सिखर — सबसे ऊंचा भाग।

जेते जग में मनुज हैं, राखौं सबसौं हेत ।
को जाने किही काल में विधि काको संग देत ।।२७८।।
धन, जोबन अर ठाकरी, तापर हो अविवेक ।
ये चारों भेळा हुवां अनरथ होय अनेक ।।२७९।।
हंसा वहाँ न जाइये, जहाँ न आदर होय ।
पूछे कोई न बात 'भल' करे घमंड सब कोय ।।२८०।।
नहीं मन्दिर में वास नहीं मसजिद में मैं बसू ।
मैं भगतां रो दास रमतो जोगी रमणियाँ ।।२८१।।
साधू धारयो नाम पण है न साधू असल ।
टुकड़ां ताईं चाम रंगै राख में रमणियाँ ।।२८२।।
कायर होय अनेक वीर भगावै एकलो ।
ज्यूं स्याळी ने देख रेवड़ भागै रमणियाँ ।।२८३।।
जाको करै जग मान, जो बरसै थाड़ो घणूं ।
व्यर्थ करै बकवाद रोळमारौ रमणियाँ ।।२८४।।

---

(२७८) जेते – जितने । जग में – संसार में । मनुज = मनुष्य । राखौं – रखो ।
किही काल में – किस समय में । विधि – विधाता । काको – किसका ।

(२७९) जोबन – यौवन । ठाकरी – ठकुराई । तापर – इसके साथ ही ।
अविवेक – अज्ञान ।

(२८०) वहां – वहाँ । बात भल = भली प्रकार से बात ।

(२८१) वास – निवास पता ।

(२८२) धारयो – धारण किया रखा । पण – लेकिन । टुकड़ां ताईं – रोटियों
के टुकड़ों के लिए । चाम – शरीर । रंगै राख में – राख में रखते हैं ।

(२८३) वीर भगावै एकलो – वीर अकेला भगा देता है । रेवड़ = बकरियों
का झुण्ड । स्याळी – नाहर; भेड़ीया ।

(२८४) जाको – जो । जो = वह । बरसै थाड़ो – बहुत ही कम बरसता है ।
रोळमारो = रोळा करने वाला और करने वाला ।

हिम्मत रां सुख साज हिम्मत री कीमत घणी ।
रींक्यां दे कुण राज रींक मती तू रमणियां ॥२८५॥

भेंस समुख संगीत त्यों मूरख न समझावणू ।
भलो बठे ही गीत जठे रसिक है रमणियां ॥२८६॥

सुख में गावो गान क्यों दुख में रोवो भला ।
सुख दुख एक समान रमो सदा ही रमणियां ॥२८७॥

परनिन्दा हथियार, मूंडे मिठ बोला घणा ।
इसड़ा नर बदकार, रहो न सागे रमणियां ॥२८८॥

राख्यो थावे नाम पर उपगारी जीव बण ।
नहीं तो धन धन धाम रही क्यूं है रमणियां ॥२८९॥

जा विध राखे राम ता विध ही रहणू भलो ।
चिन्ता को के काम रहो मौज में रमणियां ॥२९०॥

धीरज स्यूं कर वेग काम करो समझ्यो सफल ।
ऊतां सेजड़ वेग करे न हूवे रमणियां ॥२९१॥

जिण दीन्हीं है चूंच चून भी वोही देसी ।
कुण नीचो कुण ऊंच रैयत है सब राम की ॥२९२॥

---

(२८५) हिम्मतरी कीमत घणी — हिम्मत की ही बहुत कीमत है । रींक्या = रोना । कुण — कौन । रींक मती — रोवो मत ।

(२८६) त्यों मूरख न समझावणू — इसी प्रकार मूर्ख को समझाना है । वठै = वहां । जठे — जहां । रसिक — मर्म को जानने वाला ।

(२८७) रमो सदा ही — सदा आराम से रहो ।

(२८८) पर निन्दा = पराई निन्दा करना । मू डै = मुँह पर । मिठा बोलापणा — मीठा अधिक बोलना । बदकार = दुराचारी बदचलन ।

(२८९) पर उपगारी — दूसरे का उपकार करने वाला । बण — बनो ।

(२९०) जा विध — जिस विधि से । कै = क्या ।

(२९१) स्यूं — से । वेग = देरी । सफलो = सकाम । ऊतां सेजड़ वेग — जल्दी से किसी कार्य को करना ।

(२९२) चून — खाने की सामग्री । वोही — वही ।

साची लागै बात खारी लागै नीम ज्यूं ।
जल्दू न परभात रीस न कीजै रमणियां ॥२९३॥
धार चित में धीर, औगुण स्यूं गुण छाण तू ।
पय पीवै तज नीर, राजहंस ज्यूं रमणियां ॥२९४॥
क्यों भूख मालो हाड़ चिन्ता में गळे गळ मरो ।
ऐसी खप्पर फाड़ रख्या करे किम रमणियां ॥२९५॥
मन दीनो मत छोड़ बल राखो काठो पकड़ ।
मन है बांको घोड़ रास बिना को रमणियां ॥२९६॥
पिक-वायस एक समान दोन्यां में है फरक कै ।
परखोली स्यूं पहचान रङ्ग करै कै रमणियां ॥२९७॥
कुण किण ने दै मार, कुण किण ने देवै जिवा ।
मन में राख विचार, राम रुखाळो रमणियां ॥२९८॥
जीभ बढ़ावै बैर, जीभ बढ़ावै प्रीत ने ।
राखो वाह्लो लैर, रसना वश में रमणियां ॥२९९॥
समय बड़ी बलवान समय करावै काम सह ।
सरै न कोई काम रीस करयां स्यूं रमणियां ॥३००॥

---

(२९३) खारी = कड़वी । रीस = गुस्सा ।
(२९४) धार = धारण करना । धीर = धैर्य । छाण तू = दूर करो ।
पय = दूध । तज = छोड़ना । नीर = पानी ।
(२९५) मालो हाड़ = हाड़ नष्ट करते हो । किम = क्यों ।
(२९६) बांको घोड़ = बांका घोड़ा । रास = लगाम ।
(२९७) एक समान = एक से एक सरीखे । कै = क्या । रङ्ग करै कै = क्या क्या खेल करते हैं ।
(२९८) कुण = कौन । किण नै = किस को । रुखाळो = रक्षा करने वाला ।
(२९९) जीभ बढ़ावै बैर = जीभ ही बैर बढ़ाती है । रसना = जीभ ।
(३००) सह = तमाम । सरै न काम = काम होता नहीं ।

होनहार सो होय करम लिखेड़ी ना टळै।
जो नर मूरख होय रुदन मचावै रमणियाँ ॥१०१॥
जिन्दा दुःख को धाम तन देवै सगळी गळ्या।
ज्यूं जूते को धाम रांपी छेके रमणियाँ ॥१०२॥
कहसी बात विचार, देख समै की बात नै।
वोही नर हुसियार, रेख राखसी रमणियाँ ॥१०३॥
ज्यूं हंसा करत जुहार, सूखो सरवर देख कर।
त्यूं मुतलबियो संसार, राख मनां तू रमणियाँ ॥१०४॥
स्वारथ को संसार, बिन स्वारथ बोलै नहीं।
गिरधर है आधार रीझ मनो थे रमणियाँ ॥१०५॥
जोड़ो है सब ठौर, मन्दिर मसजिद के परयो।
करो जठै ही गौर, रमे जठै ही रमणियाँ ॥१०६॥
जहां मिलै सम्मान जठै ही बैठक आछी।
जठै सुयश की हान रहो न पलभर रमणियाँ ॥१०७॥
फळ करणी का त्यार, पड़सी सब नै भुगतणो।
कर उपाय हजार, रती न छूटै रमणियाँ ॥१०८॥

---

(१०१) होनहार सो होय = जो होना होगा वह होकर रहेगा। करम लिखेड़ी—कर्म में लिखा हुआ।
(१०२) धाम = घर। सगळी—तमाम। रांपी—चमड़ा चीरने का एक औजार। छेके—काट देता है।
(१०३) कहसी—कहेंगे। समै = समय।
(१०४) जुहार—नमस्कार प्रणाम। मनां = मन में।
(१०५) गिरधर—गिरधर भगवान। आधार—आसरा। रीझ = खुश होकर मनो—स्मरण करो।
(१०६) सब ठौर—सब स्थान हर जगह पर। जठै—जहां।
(१०७) बैठक आछी—बैठना अच्छा है। सुयश की हान—सम्मान को ठेस लगता हो। हान—हानि। पल भर—क्षण भर भी।
(१०८) फळ करणी का त्यार—कर्मों के फल तैयार है। भुगतणो—भोगने पड़ेंगे। रती न छूटै—थोड़ा भी नहीं छूटेगा।

सीसा सोस फुलेल के सीस नमायी कोय ।
मन को रूखो मानवी, चित चिकणो ना होय ॥११७॥
सिंहा सरपां गोऊआं, अवसर बैरी बांह ।
जल जोगण सैंधव बहण छै । मुख सकड़ियांह ॥११८॥
नागौरो ठाकर हुवे घर करसब हरियाण ।
बेटा होवे मनमते (तो) घर डूबो घर हाण ॥११९॥
तिया बेटी सून्द रस बीजे ठोड़ पखाण ।
भीड़ पड्या छोड़े नहीं सुख-दुख पूछे प्राण ॥१२०॥
मन लोभी मन लालची मन कुटील मन चौर ।
मन के मते न चालिये (मन) पलक पलक में और ॥१२१॥
दारू दरपण दूसरो, पी देखो सब कोय ।
घट की तो परगट हुए, परघट की घट होय ॥१२२॥
नमण बड़ी संसार में नहीं नमें सो नीच ।
बहते जल पत्थर कटे रहे रू दखो बीच ॥१२३॥
घर आतां मन खूटतां तिया पड़ंतां ताव ।
ये तीनूं दुख मरण रा कहा रंक कहा राव ॥१२४॥

---

(११७) सीसा — काच की बोतल । फुलेल — सुगन्धित तेल ।
(११८) गोऊआं — गाय आदि पशु । जोगण — सहारा अवलंब । सैंधव बहण — वाहन चलाना ।
(११९) नागौरो — निर्बल । ठाकर — सरदार — मालिक । करसब = कार्यभार । मनमते — स्वच्छन्द ।
(१२) सून्द रस — शरीर से निकलने वाला रक्त या वीर्य । ठोड़ — स्थान । भीड़ — विपत्ति ।
(१२१) मते — इच्छा । पलक — पलक — क्षण क्षण में ।
(१२२) दारू — शराब मदीरा । दरपण = दर्पण । घटकी = भीतर की । परगट — प्रकट । परघट — दूसरों के हृदय की ।
(१२३) नमण — नम्रता । रू दखो — वाद ।
(१२४) धर — धरा पृथ्वी । पड़ंतां — पड़ने । ताव = कष्ट । कहा = क्या । रंक गरीब । राव — राजा आदि ।

गह भरियौ गजराज मद छकियौ चालै मतौ ।
कूकरिया बेकाज रोम भुसै क्यों राजिया ॥११२॥

गुण औगुण जिण गांव, सुणै न कोई सांभळै ।
मच्छ गजा-गळ मांय, रहणो मुसकल राजिया ॥११३॥

गैला गंडक गुलाम बुचकारयां वाथै पड़ै ।
कूटया देवै काम रीस न कीजै राजिया ॥११४॥

चोर, चुगल, वाचाळ याची-मानीलै नहीं ।
संपड़ावै सतकाळ, रीती भाख्यां राजिया ॥११५॥

जगत करै जिमणार, स्वारथ रै ऊपर सको ।
पुनरो फळ मणपार, रोटी नह दै राजिया ॥११६॥

जण जण रो मुख जोय महनै दुख कहणो नहीं ।
काढ न दै मित काम रोयां सूं राजिया ॥११७॥

जिण मारग जो जात सूंठी हो मयना भली ।
जिणमां सूं सो बात रहौ न चावै राजियता ॥११८॥

डूंगर जळती लाय जोवै सारो ही जगत ।
प्राजळ्यो मित पाय रती न सूझै, राजिया ॥११९॥

---

(११२) गहभरियो = गंभीर मन वाला । गजराज — हाथी ।

(११३) सांमळै — समझे । मच्छ गळा-गळ — अन्धेर खाता ।

(११४) गैला — पागल । गंडक — कुत्ता । गुलाम — चाकर, नौकर । बुच कारयां — पुचकारने पर । वाथै पड़ै — सिर चढ़ते हैं । रीस — गुस्सा ।

(११५) वाचाळ — बकवास ज्यादा बोलने वाला । याची — दासी । रीती भाख्यां — सूना खजाना ।

(११६) जिमणार — भोज । सको — सब कोई । फळ — धन । मणपार — अपार । नह दै = नहीं देता है ।

(११७) जण जण रो — हर किसी का । जोय — देखना । काढ न दै = निकाल कर नहीं देता । कोय — कोई । रोयां — रोने से ।

(११) जिण — जिस । सूंठी — सूखी । जिसनी = सूखी [illegible] ।

(११९) डूंगर — पहाड़ । लाय — अग्नि । जोवै = देख । सारोही — तमाम ।

काम न होय उदास मतलब गुण गाहक मिनख।
ओखद रोकड़ पास रोगी गिणै न राजिया ॥१४०॥

दूध-नीर मिळ होय अेक जिसी मारठ हुवै।
करै न न्यारा कोय राजहंस बिन राजिया ॥१४१॥

नरां नखत परवाण ज्यां ऊगां सूझै जगत।
भोजन तप्यो न भाण रावण मरतां राजिया ॥१४२॥

नारी-दास अनाथ पण मांथै चाढ्यां पछै।
हिय ऊमरलौ हाथ राख्यो जाय न राजिया ॥१४३॥

पढ़णो वेद पुराण सोरो इण संसार में।
बातां तणो बिनाण रहस दुहेलो राजिया ॥१४४॥

पल-पल में कर प्यार, पल-पल में पलटै परा।
रा मुतलब रा यार, रहवै अळगो राजिया ॥१४५॥

पल-पल में कर प्यार, पल-पल में पलटै परा।
वै मुतलब रा यार, रै न छाना राजिया ॥१४६॥

पल-पल में करै प्यार, पल-पल में पलटै परा।
लागत बेग्यां लार, रती उजाळो राजिया ॥१४७॥

---

(१४०) गुण गाहक=गुण ग्राहक। ओखद—औषध। गिणै न—नहीं समझता।

(१४१) मिळ होय—दोनों के मिलने पर। कोय—कोई। बिन—बिना।

(१४२) ज्यां ऊगां—जिनके उदय होने पर। भाण—सूर्य।

(१४३) हिय—हृदय। राख्यो जाय—दबाया जाना।

(१४४) सोरो—सरल। रहस=रहस्य। दुहेलो—कठिन।

(१४५) पल-पल में—क्षण मात्र में। पलटै=बदल जाना। मुतलब रा—मतलब के। यार—दोस्त। अळगो—दूर।

(१४६) रै न—रहते नहीं। छाना—छिपे रहना।

(१४७) ज्यां लार=उनके पीछे। रती—कुछ।

पहली किम्यां उपाव दव दुसमण आमय दटै ।
प्रचंड हुवां बस बाव रोमा वाले, राजिया ॥१४८॥
पाटा पीड उपाव तन लागां तरवारियां ।
लहै जीभ रा घाव रती न ओखद राजिया ॥१४९॥
पाछ तणो परचार कीधो आगम कामरो ।
बरसंता घण वार, रुकै न पाणी राजिया ॥१५०॥
मणधर विख अणमाप मोटा नह भारी मगज ।
बीछू पूंछ बणाव राखै सिर पर, राजिया ॥१५१॥
मद विद्या धन मान ओछा सो उकळै अवट ।
आपण रे उनमान रहै क विरळा राजिया ॥१५२॥
मनसू झगड़ै मोर, पैला सू झगड़ै पछै ।
स्यांरा घटै न ठोर, राज-कचेड़ी राजिया ॥१५३॥
मळया गिर मंझार, हर कोइ तरु चंदण हुवै ।
संगत लहै सुधार रूखां ही में राजिया ॥१५४॥

---

(१४८) दव—दावा अग्नि । दुसमण—शत्रु । आमय—रोग । बाव=बादी । रोमा=कष्ट पीड़ा ।

(१४९) पाटा—पट्टियां । लहै जीभ रा घाव—जीभ का घाव लगने पर । रती न—रत्ती भर, बहुत थोड़ा ।

(१५०) पाछ—पाल । परचार—प्रबन्ध । कीधो—किया हुआ । आगम—पहले पूर्व । घण—बादल ।

(१५१) मणधर—सांप । विख—विष जहर । अणमाप—बहुत अपार । नह—नहीं ।

(१५२) उकळै—उबलता । अवट—अवश्य । विरळा—विरला कोई ।

(१५३) मोर—पहिला । पैला सू—दूसरे से । पछै—बाद में । स्यांरा—उनका । ठोर=ठौर ।

(१५४) मळयागिर—मलय पर्वत । मंझार—में संगत लहै सुधार—सत्संगति सुधार लेती है । रूखां ही में—पेड़ों को भी ।

मुख ऊपर मीठास घट माँही खोटा घड़ै ।
इसड़ाँ सूं इखलास राखीजै नहीं राजिया ॥१५५॥
मुतलबरी मनवार, चुपकै लावै चूरमो ।
बिन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया ॥१५६॥
मूसा नै मंजार, हित कर बैठा हेकठा ।
सो जाणै संसार, रस नह रहसी राजिया ॥१५७॥
रोग अगन अर राड़, जाण अलप कीजै जतन ।
बधियाँ पछै बिगाड़ रोक्यो रहै न राजिया ॥१५८॥
रोटी चरखो राम इतरो मुतलब आपरो ।
की डोकरियाँ काम राजकथा सूं राजिया ॥१५९॥
साबा-तीतर लार, हर कोई हाका करै ।
सिंघाँ तणो सिकार, रमणो मुसकल राजिया ॥१६०॥
कूंझ्याँ करै न मोप बन केहर मेल्या बसै ।
करै न सबळा कोप रंका ऊपर राजिया ॥१६१॥

---

(१५५) मुख ऊपर=मुँह पर। घट माँही—हृदय में। खोटा घड़ै—बुरा करते हैं। इसड़ाँ सूं—ऐसों से। इखलास—मित्रता।

(१५६) मुतलबरी—स्वार्थ के कारण। मनवार—मनुहार। राब—राबड़ी।

(१५७) मूसा—चूहा। नै—और। मंजार—बिल्ली। हित कर बैठा=प्रेम करके साथ बैठे हैं। सो जाणै—सब जानते हैं। रस नह रहसी—प्रेम नहीं रहेगा।

(१५८) अगन—अग्नि। अर—और। राड़—झगड़ा। अलप—थोड़ा। बधियाँ—बढ़ जाने पर।

(१५९) इतरो=इतना। राजकथा—राजकाज। की=क्या।

(१६०) हाका करै—हाँक लगाना। सिंघाँ तणो=सिंहों का।

(१६१) [illegible]—[illegible]। करै न सबळा—बलवान नहीं करते। रंका ऊपर—गरीबों पर।

साचो मित्र सचेत कह्यो काम न करै किसो ।
हरि अरजण रै हेत रथ कर हांक्यो राजिया ॥१६२॥
हिये मूढ़ जो होय की संगत ज्यांरी करै ?
काळे ऊपर कोय, रंग न लागै राजिया ॥१६३॥
स्वार्थ को संसार है, कौण कहत है झूठ ।
हीण पति सूं रत है, पर की तिरिया पूठ ॥१६४॥
मतलब को संसार है इमे झूठ न कोय ।
जैसे इन्द्रि ऊंठ की स्वार्थ सीधी होय ॥१६५॥
परमारथ पक्को रतन मत कोई दीजो पूठ ।
स्वारथ सीसी कांच की झटके जासी फूट ॥१६६॥
कांटो बुरो करास को पर बदरी को नाम ।
सोक बुरी है चून की पर सांझै का काम ॥१६७॥
घोड़ा दोरो मादवो भैंस्यां दोरो बेठ ।
मरदां दोरो पोसणो नारां दोरो पेट ॥१६८॥
धन बढ़ियां ही मूढ़, कृपण घणा कारा करे ।
ज्यूं मरजावै ऊंठ गुड़ देतां गोयदिया ॥१६९॥

---

(१६२) सचेत = सावधान । काम न करै किसो = कौन सा काम नहीं कर देता ।
अरजण = अर्जुन ।
(१६३) की संगत ज्यांरी करै ? = सत्संग उसका क्या कर सकती है ?
(१६४) कौण = कौन ? । हीण = हीन । पर की तिरिया = उसकी स्त्री ।
(१६५) इमे = इसमें यह । स्वार्थ सीधी होय = स्वार्थ वश सीधी होती है ।
(१६६) परमारथ = दूसरों का उपकार करना । झटके जासी फूट = फौरन फूट जायगी ।
(१६७) पर = और । सोक = सौत । सांझै का काम = संयुक्त काम ।
(१६८) दोरो = कठिन । पोसणो = पालना पोसना ।
(१६९) कृपण = कंजूस । मरजावै = मिलता । गुड़ देता = गुड़ देते हुए ।

करडांवरण में टूंठ कीमत नहीं कोडी जिती ।
बिन मोरी रा ऊंठ मूधे बया गोवंदिया ॥१७७॥
गुण रो किसो उछाव माहक ना जिण गांव में ।
बिके बरोबर भाव गुड़ गोबर गोवंदिया ॥१७८॥
मांणक हूंतो मोल कू पडिया करसी कहा ।
गाहक बिन मत खोस गाहक गुण गोवंदिया ॥१७९॥
मूरख मारग छोड़ देखा देखी दरड़ में ।
गिरता होडा होड गाडर ज्यूं गोवंदिया ॥१८०॥
सीख देत सब कोय सीख न छोड़ नीपता ।
बरड़ी स्वेत न होय साबण घसियां सगत सी ॥१८१॥
कर्म देत फल नांहि भाव्य भरम उद्यम कियां ।
मृग केहर मुख माहि, सूता बड़े न सगत सी ॥१८२॥
सुमत न उपजै एक भाग बिना भटक्यौ फिरै ।
उद्यम करै अनेक सीधा पड़ै न सगत सी ॥१८३॥
किण ने कहियै रोय मेटणहार न जगत में ।
बिधि दीनी दुख सोय सिरपर सह्यों सगत सी ॥१८४॥

---

(१७७) करडांवरण में — व्यर्थ की पकड़ में । कोडी जिती = बहुत थोड़ी ।

(१७८) किसो — कौन सा ? गाहक — ग्राहक लेने वाला । जिण — जिस ।

(१७९) करसी काह — क्या करेगा ?

(१८) देखा देखी — एक दूसरे को देखकर । दरड़ में — खाड़ में । गाडर — भेड़ ।

(१८१) सीख — शिक्षा । बरड़ी = काले रंग की ऊन की कंबल ।

(१८२) कर्म देत फल नांहि = कर्म फल नहीं देता । सूता बड़े न — सोते हुए (मुंह में) नहीं आकर गिरते ।

(१८३) सुमत — सदबुद्धि । भाग बिना — बिना भाग्य के ।

(१८४) किण नै = किसी को । मेटणहार — मिटाने वाला । दीनी — दहना ।

निज करमां अनुसार हाण लाभ जीवण मरण।
लिखना लिख्यो लिलाड़ सिरज्यां पहली सगत सी ॥३८५॥
मसकरी दिन दसकरी बहुत करी दिन बीस।
तीसूं दिन री मसकरी काट देत है सीस ॥३८६॥
सूख तळाई, धूप बड़ बिना हाथ बड़मा।
बांझ जोबन सूम धन कारज किणी न सधा ॥३८७॥
सोमीड़ा मत फूट, तिड़क्यां भट माटी तणो।
फटके जासी फूट काचो बासण किसनिया ॥३८८॥
पड़ने पोमंताह करड़ावण हर कोई करै।
बारां में बसताह, आंसू आवै ईसिया ॥३८९॥
बहुत हुवै परवार, सार बिना मानी सरस।
सुत बिन सो संसार फीको लागै फूंसिया ॥३९० ॥
ऊंठ न सीखे दूबळ्य बळद न सीखै भाता।
ऊंचा खेत न बाहिये मीणा न कीजे नाता ॥३९१॥

---

(३८५) निज करमां—अपने कर्मों के। हाण—हानि। जीवण-मरण=जीना मरना।

(३८६) मसकरी—मजाक। दिन दसकरी—बहुत कम दिनों तक थोड़ी। तीसूं दिन री मसकरी=हमेशा की मजाक।)

(३८७) सूख तळाई—सूखी तलाई, सूखा तालाब।

(३८८) माटी तणो=मिट्टी का बना। फटके जासी फूट—फौरन फूट जायगा फौरन टूट जायगा।

(३८९) करड़ावण—अकड़। बसताह=घुसते हुए।

(३९०) सुत बिन—बिना बेटे के। सो संसार—सारा संसार तमाम जगत। फीको लागै=व्यर्थ सा प्रतीत होना।

(३९१) दूबळ्य—कमजोर। बळद—बैल। भाता—मोटा ताजा। नाता—सम्बन्ध।

खेती पाती, बीनती और घोड़े का तंग।[1]
इतरा हाथों कीजिए, लाख लोग हूँ संग ॥१९२॥
अति दूरे, अति निकट ही महाधनी धनहीन।
कन्या देहु न षट् को दीन हीन घाठ पीन ॥१९३॥
कपड़ो नूर पुवाह को रीझै राव रवाप्र।
भाभी रो आदर करै जाजा करै अताप्र ॥१९४॥
तिया सुधरै सील सूँ नर सुधरै नेठाव।
पैंचा सुधरै पागड़ी दामा सुधरै ब्याव ॥१९५॥
जाकै बोली बंध नहीं मरम नहीं मनमाँहि।
जाकै संग न चालिए, छोड़ चलै बन माँहि ॥१९६॥
जाकी जैसी बुध है, तैसी कहत बनाय।
उनका बुरा न मानिये अधिक लैण कहाँ जाय ॥१९७॥
कोइ धनु मिस क्या करै जो सहाय रघुवीर।
दस हजार गज बळ घट्यो घट्यो न दस गज चीर ॥१९८॥
सरवर हंस फबंत बुगला बैठा बापड़ा।
ज्योंरा एकणरंग सहज पिछाणीं संकरा ॥१९९॥

---

(१९२) पाती = चिट्ठी। बीनती = प्रार्थना। इतरा = इतना। लाख लोग हूँ संग। चाहे कितने ही व्यक्ति साथ हों।

(१९३) अति दूरे = बहुत दूर। महाधनी = धनवान। धनहीन = गरीब। षट् को = आठ (व्यक्तियों) को। पीन = शराब पीने वाला।

(१९४) रीझै = खुश होना। अताप्र = वश।

(१९५) सील सूँ = पातिव्रत धर्म से। दामा = पैसा धन। ब्याव = विवाह।

(१९६) बोली बंध नहीं = जबान पर अधिकार नहीं।

(१९७) जाकी = जिसकी। बुध है = बुद्धि है। लैण कहाँ जाय = लेने के लिए कहाँ जायेगा।

(१९८) गज बळ = हाथियों का बल।

(१९९) फबंत = शोभा देते हैं। ज्योंरा = जिनका। एकणरंग = एक ही रंग का।

थोड़े ही में बहुत है, समझ लीजिए बात ।
मैत्री धर्मिक समाइये कर कारे हुवे बात ॥४००॥
बारां बुध न बापरै, सोळां काव्य न होय ।
बीसां धनपण न मईं तो गैली बाट न जोय ॥४०१॥
भाड़ी तो चीलै चलै, चीलै चलै कपूत ।
इतरा चीलै ना चलै शायर सिंघ सपूत ॥४०२॥
नीची दृष्टै चालतां, तिरण भुणा माड़ा थाय ।
कांटी टळै दया पळै पग पिछ नहि खरड़ाय ॥४०३॥
ज्यूं बरसै बरखा समै मेघ अखंडित धार ।
त्यूं सतगुरु वांणी खिरै, जगत जीव हितकार ॥४०४॥
जेती सहिर समंद की तेती मन की मौज ।
कबहुंक मन हुए एकला कबहुं दौरत फौज ॥४०५॥
ज्यूं ज्यूं धर्मिक सनेह त्यूं त्यूं दुख चवगुणो ।
इणसै सीखण एह मूळ सनेह न किज्जियै ॥४०६॥

---

(४) कर—हाथ ।
(४०१) बारां—बारह वर्ष की । बापरै—प्राप्त होना आना । सोळां—सोलह वर्ष की । बीसां—बीस वर्ष की । गैली—पगली । बाट न जोय—इन्तजारी नहीं करती ।
(४ २) चीलै चलै—अपनी राह पर चलती है । इतरा=इतने । सिंघ—सिंह । सपूत—सुपुत्र होनहार पुत्र ।
(४०३) नीची दृष्टै दृष्टै—नीची नजर । तिरण—तीन । थाय=होते हैं । कांटी टळै=कांटा नहीं लगना । नहि—नहीं ।
(४ ४) बरसै—वर्षा होना । समै—समय । अखंडित धार—लगातार । खिरै=गिरना । जीव हितकार—प्राणी मात्र के कल्याण के लिए ।
(४ ५) जेती—जितनी । समंद—समुद्र । तेती—उतनी । कबहुंक—कभी ।
(४ ६) सनेह—स्नेह, प्रेम । चवगुणो—बहुत । एह—यह । न किज्जियै—

मन मंजूस गुण रयण है चुपकर दीना ताल।
गाहक हुय तो खोलिये कुंची वचन रसाल ॥४१३॥
भरीया ते झळके नहीं झळके ते आधा।
माणस एही पारिया बोल्या ने लाधा ॥४१४॥
पाघ भाग सूरत प्रकृति बाणी वा बीबेक।
अक्षर लिखे न एकसा देखी वेस अनेक ॥४१५॥
ए कठिन गति कर्म की किनहो लखी न जाय।
राय होत है रंक जग रंक होत फिर राय ॥४१६॥
पंडित की साता भली भली न मूरख जात।
उण सातें सुख ऊपजे उण भाते घर जात ॥४१७॥
दुर्जन तजै न कुटिलता सज्जन तजै न हेत।
कज्जल तजै न स्यामता मुक्ता तजै न स्वेत ॥४१८॥
जल की शोभा कमल है दल की शोभा फील।
धन की शोभा धर्म है, तनकी शोभा शील ॥४१९॥

---

(४१३) मंजूस—पेटी छोटा पिटारा या डिब्बा। गुण रयण है=गुणों के रहने के लिए। ताल—ताला। कुंची—कुंजी चाभी। रसाल—सुन्दर रसीला।

(४१४) भरीया—भरा हुआ। झळके—छलकना। माणस—मानवी। एही—यही। पारिया—परीक्षा। बोल्या ने—बोला और। लाधा=मिलना समझना।

(४१५) पाघ—पगड़ी। भाग—भाग्य। बाणी=बोली। बीबेक—ज्ञान। एकसा—एक जैसा।

(४१६) राय=राजा। रंक=गरीब।

(४१७) भली—अच्छी। उण—उस। ऊपजे—पैदा हो। घर जात—घर नष्ट हो जाता है।

(४१८) दुर्जन तजै न=दुष्ट लोग नहीं छोड़ते। कुटिलता—नीचता। स्यामता—कालापन। स्वेत—सफेदपन।

(४१९) दल की शोभा=फौज की शोभा। फील—हाथी। शील—उत्तम आचरण सद्‌वृत्ति।

विप्र वेद को ना पढ़ै वेस्या चाहै प्रीति ।
बनीया बनज करै नहीं ये तीनों बिपरीति ॥४२०॥
सेऊ गुनीयन गुन बिना वेस्या जोबन हीन ।
राजा धरती बाहिरो ए तीनों मसकीन ॥४२१॥
सुख दुख हिरदै में बसै मोल न ल्यावै कोइ ।
जा जाकी बारी बहै, सोई परगट होइ ॥४२२॥
गुनीयन गुन बिपति नहीं श्रवन बिपति न नाद ।
नैन बिपति न निहारतें सूरस बिपति न बाद ॥४२३॥
जीभ कसौटी स्वाद की श्रवन कसौटी बैन ।
बास कसौटी नासिका रूप कसौटी नैन ॥४२४॥
नैन रूप के दूत हैं दूत राग के कान ।
मिलि उनसे मनसौं मिलै पूरन यहै प्रमाण ॥४२५॥
जाणे हरिया रूखड़ा पाणी हुंता नेह ।
सूका काठ न जाणही कीधरि बूठा मेह ॥४२६॥

---

(४२०) विप्र—ब्राह्मण । बनज=व्यापार ।

(४२१) सेऊ—सेवा करना । गुन बिना—बिना गुन के । बाहिरो=रहित । मसकीन—गरीब दीन बेचारा ।

(४२२) मोल न ल्यावै कोई—कहीं से मोल नहीं लाया होता ।

(४२३) गुनियन—गुणी लोग । बिपति नहीं—अघाते नहीं । बाद—बहस करना ।

(४२४) कसौटी—जाँच परख परीक्षा । बैन—वचन । बास—सुगंध । रूप—सुन्दरता सौन्दर्य । नैन—आँखें ।

(४२५) नैन रूप के दूत हैं—आँखें रूप का संदेशा देने वाली हैं । यहै—यह ।

(४२६) जाणे—जानता है । हरिया रूखड़ा—हरा पेड़ । पाणी—पानी । हुंता—था (होना होता था) । नेह—स्नेह । काठ—काठ लकड़ी । बूठा मेह—वर्षा कब हुई ।

कोइल सुतज्यौं काग नै पालै अपनो जानि ।
जो जैसो हुवै सो तहाँ मिलिहै जाइ निदानि ।।४२७।।
मच्छ और उत्तम मनुष्य पूरण एक प्रमान ।
जब जातां जीवै नहीं पानी जौंसौं प्रान ।।४२८।।
जैसे सूई आंगुरी कछु होई सरीर ।
ताके तें अपजस अधिक काटै तें अति पीर ।।४२९।।
दोहा गाहा गीत गुन ए सबि राखै साँठि ।
गाहक बिनु कैसे खुलै मोहन गुन की गाँठि ।।४३०।।
सरवर की छाती फटा और कछु दुख नाहिं ।
पाल देख पंछी बसै नीर बिना फिरी जाहिं ।।४३१।।
उल्टी करणी राम की मत पतीजो कोइ ।
आरंभ्यो औंही रहै, और अचिंत्यो होइ ।।४३२।।
अरे बटाऊ बापुरा किसड़ौ करै सनेह ।
रात बसै दिन छठ चलै आंधी गिणै न मेह ।।४३३।।

---

(४२७) सुतज्यौं—पुत्र के समान पुत्रवत् । अपनो जानि—अपना समझकर । निदानि—अंत में ।

(४२८) मच्छ—मछली । जबजातां—पानी के जाने पर [illegible] नहीं जाने पर । पानी जौंसौं प्रान—जब तक पानी है तब तक प्राण हैं ।

(४२९) सूई—सु । अपजस—बुराई अपकीर्ति । अतिपीर—अधिक कष्ट ।

(४३०) गाहा—कथा अर्हन चरित्र । ए=यह । गाहक—खरीददार । बिनु—बिना ।

(४३१) पंछी बसै—रहा करते हैं । नीर बिना—बिना पानी के । फिरी जाहि—वापिस चले जाते हैं ।

(४३२) उल्टी=विपरीत । करणी राम की—राम की गति । पतीजो—विश्वास करो । आरंभ्यो—जिसे शुरू किया । अचिंत्यो—बिना विचार हुआ ।

(४३३) किसड़ौ—कौनसा ? कैसा ? । सनेह—प्रेम । रात बसै—रात्रि में रहता है । आंधी गिणै न मेह—किसी भी कष्ट से नहीं घबराता जब चाहे तभी आ धमकता ।

कौन न खेल्या पेम रस किसहि न उपज्या चाउ ।
समन कैसा रुंख है, जो न डुलाया वाउ ॥४३४॥
सकल छत्रपति बस किये अपने ही बल बाम ।
सबला सौं अबला कहत मूरख लोग तमाम ॥४३५॥
त्रिय बंछे नायक निपुण कमल जु बंछे भानु ।
चातक बंछे मेह कौं, ज्यों ही सुकवि सुजानु ॥४३६॥
सती सनेही, सूरमा नर ग्यानी गज दंत ।
एते निकसी न बाहुरे जो जग जाइ अनंत ॥४३७॥
कहा उत्तम मध्यम कहा कहा अधम कहा दून ।
अपनी अपनी बास में हैं सब ही महबूब ॥४३८॥
पसु पंछी जलचर अचल नर, तिय तरु ने बाल ।
अपने जाने आपमें सब ही जीव खुस्याल ॥४३९॥
जोवन जोबी जग प्रगट, धोयो निमरो वेस ।
बिन साबुन सिमबिन सलिल भले उजारे केस ॥४४०॥

---

(४३४) किसहि — किसे । चाउ — चाह, इच्छा । रुंख = पेड़ । जोन डुलाया वाउ — जिसे हवा ने न हिलाया हो जिसे हवा न लगी हो ।

(४३५) सकल — तमाम । छत्रपति — राजालोक । बाम — युवती । सबला — बलवान । कहंत — कहते हैं ।

(४३६) त्रिय — तिय स्त्री । बंछे — इच्छा करना चाहना । भानु — सूर्य ।

(४३७) सूरमा — वीर पुरुष । नर — वीर । ग्यानी — ज्ञानी आलवान । गज दंत — हाथी के दांत । एते — इतने । निकसी न — नहीं निकलते ।

(४३८) कहा = क्या । अधम — नर, चलते फिरने वाला । अपनी अपनी बास में — अपनी अपनी योनि में ।

(४३९) पसु — पशु, ढोर । खुस्याल — खुश ।

(४४०) जोवन जोबी — जोबन रूपी जोबी । धोयो — साफ किया । निमरो — तमाम । सलिल — पानी जल । भले — ठीक प्रकार से । उजारे — साफ किए ।

विरष निहारत मग चलत उकति कहि विहै ताहि ।
जोबन रतन जु गिरिगयौ, पग पग ढूंढत ताहि ॥४४१॥
गये तरुना बीय नर होत हाल बेहाल ।
सब तन ऐसे सकुरि रहि, ज्यौं तारिक की खाल ॥४४२॥
स्याम गुनी सुभाव यह सूप गहत गुन रोरि ।
चोपुन माहक खासमी गुन को डारति झोरि ॥४४३॥
सुखिया मागै सुख कहै पीर न जानत कोइ ।
दुखिया मागै दुख कहै कहो कहा फल होइ ॥४४४॥
अपनी अपनी गरज को जुग चितवत चहुं ओर ।
बिन बरसे बोले नहीं जंगलहू के मोर ॥४४५॥
मन परतीत न जीभरस माहीं मौमें रंग ।
ना जानो उस पीय सौं क्यौं करि रहिसी रंग ॥४४६॥
जैसे तन की जानियैं कर नारि बिनु बैन ।
ऐसे मन की जानिये मनकी नारि नैन ॥४४७॥

---

(४४१) विरष = बूढ़ा । निहारत = देखना । मग — रास्ता । उकति = झुक कर । गिरिगयौ — गिर गया है । ताहि — उसे ।

(४४२) तरुना — जवानी । होत हाल बेहाल — हाल के बेहाल होना । सकुरि — सिकुड़ना । खाल — चमड़ा ।

(४४३) गुनी — गुणवान । सूप — छाज । रोरि — सुन्दर रुचिर । चोपुन — अवगुण । डारति — निकाल देती है । झोरि — गिरा देना ।

(४४४) सुखिया — सुखी लोग । पीर — कष्ट । दुखिया — दुखी लोग । कहो कहा फल होइ — बताओ इससे फल हो सकता है ?

(४४५) चितवत — देखते हैं । चहुं ओर — चारों तरफ, सब तरफ । जंगलहू के — जंगल के ।

(४४६) परतीत — प्रतीति विश्वास । जीभरस — जीभ में रस मीठी बोली । पीय सौं — प्रियतम से भगवान से रहिसी रंग — प्रेम कैसे हो सकेगा प्रेम हो सकेगा ।

(४४७) तन — शरीर । जानियैं — समझिये । नारि — नाड़ी । बिनु बैन — बिना बोले ।

चिंता कीधां कवण गुण, जिण तन कामे होइ।
सत आदर, संतोष धर, लिख्यो न मेटे कोइ ॥५५५॥
कै तो विमाता मीच दे कै दे लख बहु दाम।
कै मन कुं संतोष दे जपत रहुं तो नाम ॥५५६॥
जो कछु भली न करि सकौ बुरी दिया जिनि जाहु।
अमृत फल चाख्यो नहीं विष फल-फुलि जिनि खाहु ॥५५७॥
मो मन अपणे पेट कुं, बहुत रह्यो समझाइ।
जो तू मण खाये रहै कण कोठ धन खाई ॥५५८॥
जीवतणा जम वस नहीं, अणमिण किम जीवंति।
जे वस मेई आपम्या रवि पेहला अगंत ॥५५९॥
धन माखला सरीर, जल चाटे जीवे नहीं।
नर उतरीयै नीर, जीवे पणि पुणतो नहीं ॥५६०॥
छोटी सुक का छूहड़ा कथित चंदा का भूप।
जाणी अलपाई अलग हुं किम्यो जु बामन रूप ॥५६१॥
सौकन है सूली भली तुरत निकासे जीव।
सूली है सौकन बुरी धरम बढावे पीव ॥५६२॥

---

(५५५) कीधां — करते है। जिण — जिससे। कामे — काया। लिख्या न मेटे — लिखे हुए को नहीं मिटा सकता।

(५५६) कै — या। मीच = मृत्यु। लख — लाखों।

(५५७) विष — विषा तरह। जिनि — मत। जाहु — जाना।

(५५८) मो मन — मेरा मन। अपणे = अपना। मण खाये — बिना खाए।

(५५९) जीवतणा — जिन्दा। जम — संसार। वस नहीं — वश नहीं। अणमिण — बिना जीमा के। आपम्या — अस्त होनेसे मर गये। अगंत —

होना।

(५६) धन — धन्य। उतरीयै नीर — पानी उतर जाने पर,

(५६१) छूहड़ा — पोहड़। रूप — राजा। जाणी — जैसे। अलग हुं —

लिए। किम्यो — किया।

(५६२) सौकन — सौत। भली — अच्छी। धरम — माया। बढावे —

राम नाम निज औषदी सतगुरु दई बताय।
औषद खाइके पथ रहै ताकी बेदन जाय ॥४७०॥

जण जण सूं मिळता थकां सोभ न दीसे काइ।
मनिखां हूं भोरा भला बैसे एकणि जाइ ॥४७१॥

जोवन गया त जण मिळै भ्रखा गया कै बाइ।
सरम गया संपति मिळै तीन्यौ गियौ बहाइ ॥४७२॥

तिमर गयौ रवि देख के कुमत गई गुर ग्यांन।
सुमत गई या लोभते भगत गई अभिमान ॥४७३॥

भैरो होत उदासमन नहीं को गुण को जान।
पंडत कू आदर नहीं मूरख को बहु मान ॥४७४॥

सुवित न संपति पायहु बिपतिहु दे न धीर।
जननी एहा पुत्रजन कुळ नामक रण धीर ॥४७५॥

साधु जहां ही संचरै, जहां धर्म की सीर।
सूके सरवर परसराम हंस न बैठे तीर ॥४७६॥

निर्धन जो साची कहै, सांच न माने काइ।
ठाकुर जो भूठी कहै सांची सांची होइ ॥४७७॥

---

(४७०) औषदी — औषध। औषद — दवा। ताकी — उसकी। बेदन — पीड़ा।
(४७१) जण जण सूं = हर किसी से। मिळता थकां — मिलते हुए। सोभ = शोभा। मनिखां हूं — मनुष्यों से। बैसे — बैठते हैं। एकणि — एक ही।
(४७२) भ्रखा — स्त्री।
(४७३) तिमर — तिमिर अंधेरा। कुमत — कुमति दुर्बुद्धि। भगत — भक्ति।
(४७४) गुन को जान — गुण को जानने वाला। पंडत — पण्डित विद्वान।
(४७५) सुवित — प्रसन्न सुख। पायहु — पाकर। एहा — ऐसा।
(४७६) सूके सरवर — जलहीन तालाब।
(४७७) निर्धन — गरीब। सांची कहै — सत्य बात कहे।

धन कारण सहुको खपै, गुण में खपै न कोय।
जाण पणो जग दोहिलो धन गहिला ही होय ॥४८६॥
सज्जन जिण दिसि जाइयै तिहां आदर बहु होय।
तिण दिसि कदे न जाइयै जिहां आदर नहीं होय ॥४८७॥
अति सीतल मृदु वचन तें क्रोधानल बुझ जाय।
ज्यूं उफणतै दूधकूं पानी देत समाय ॥४८८॥
औगुन आछे दिनन में, गुन ह्वै कर बस जात।
दिन मलीन जब आत तब गुन औगुन बन जात ॥४८९॥
सोच करे सो सुघड़ नर कर सोचे सो कूर।
सोचे को मुख नूर है कर सोचे मुख धूर ॥४९०॥
पान झड़ंता देखकर, हँसी जो कूंपलियांह।
मो बीती तो बीतसी धीरी बापड़ियांह ॥४९१॥
कारज धीरे होत है धीर न होय अधीर।
समय पाय तरवर फलै कतेक सींचे नीर ॥ ४९२ ॥
धीरे धीरे ठाकरां धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा रित आया फल होय ॥ ४९३ ॥

---

(४८६) धन कारण — धन के लिए। सहुको — सब लोग। जाण पणो = जानना। दोहिलो — कठिन। गहिला — पागल।
(४८७) जिण दिसि — जिसी दिशा में। कदे न — कभी भी।
(४८८) सीतल — ठंडा। क्रोधानल — क्रोध की अग्नि।
(४८९) औगुन — अवगुण। मलीन — बुरे। गुन औगुन बन जात = गुण अवगुण बन जाते हैं।
(४९) सुघड़ नर — बुद्धिमान। नूर — कांति। धूर — धूल।
(४९१) पान झड़ंता = पत्तों को गिरते। कूंपलियांह — कोंपल। मो बीती — हम में जो बीती।
(४९२) कारज — कार्य। अधीर — आतुर। समय पाय — समय आने पर। फलै — फलते हैं। कतेक — कितना ही। सींचे नीर — नीर सींचना।
(४९३) सौ घड़ा — सौ घड़े (पानी के)। रित — ऋतु।

कारज पाछो पर बुरा कीजै समझ विचार।
आगम सू बुध ऊपजे हाँसी होय अपार ॥ ४९४ ॥
जोबन चाहो जो सफल होवो मती अधीर।
समय पाय सतरंज में प्यादे बने वजीर ॥ ४९५ ॥
चलना है रहना नहीं चलना बिसवा बीस।
कारण तनिक सुहाग के कौन गु थावे सीस ॥ ४९६ ॥
भाग मता दिन पाधरा पैंडे पार्वे चौर।
पर मीडस घोड़ा चढ़े साहू मारे चौर ॥ ४९७ ॥
चंदन चरे चमार के निठ प्रत चीरे चाम।
कहो विधना कैसी भई पड़ो नीच से काम ॥ ४९८ ॥
कर छूटी कुवे पड़ी, काढ़ न सक्के कोय।
ज्यौं ज्यौं भीजे चामड़ी त्यौं त्यौं भारी होय ॥ ४९९ ॥
गुर, याचक मे पाषणो चौथो चौठीदार।
मांपण तीन कराय दे फेर न आवे द्वार ॥ ५०० ॥
मौत मुकदमो मांदगी मद मदिरा महमान।
पद मम्मा पाछे पड़्या (तो) निहचे तजिये प्राण ॥ ५०१ ॥

---

(४९४) पाछो = पश्चात । पर = और या । समझ विचार = सोच समझ कर। आगम सू = सोचना करने पर। हाँसी होय अपार = बहुत हंसी होती है।
(४९५) होवो मती अधीर = आतुर न हो। समय पाय = अवसर पाने पर।
(४९६) बिसवा बीस = निश्चय ही। तनिक = थोड़ा।
(४९७ दिन पाधरा = सीधे दिन। पैंडे = रास्ते में।
(४९८) निठ प्रत = प्रतिदिन। चीरे चाम = चर्म चीरना।
(४९९) कर = हाथ। का' न सके कोय = कोई निकाल नहीं सकता। चामड़ी = चमड़ा।
(५) गुर = गुरु। याचक = याचना करने वाला। पाषणो = पाहुना। मांपण = [illegible]।
(५ १) मौत = मृत्यु। मांदगी = बीमारी। मद = घमण्ड। पद मम्मा = इन मकार के अक्षर वाली पांच। निहचे = निश्चय।

हरण खुरी रै मांगणी धरती लाख पसाव।
झलिया-भलिया ना टळै जहँ पाणी तहँ पाव ॥ ५०२ ॥
कमळा कादक बाहरा दणियर बैरी होय।
जा दिण वित्त न अप्पणे ता दिन मित्त न कोय ॥ ५०३ ॥
भाग प्रमाणे ही मसै वैस वई रो लेख।
लंक विभीषण नै मिळी हनुमान नै तेल ॥ ५०४ ॥
नित कर खोटा काम नर, बांधै गठड़ी पाप।
करणी वाली आपरी कुण बेटो कुण बाप ॥ ५०५ ॥
सत पर ठहरी मेदनी सत से होत उजास।
सतरे कारण ही खड़ो बिन थम्भे आकास ॥ ५०६ ॥
समय पुरुष बलवान है नहीं पुरुष बलवान।
काबा लूटी गोपिका वै अर्जुन वै बाण ॥ ५०७ ॥
औसर पै कम्हुन करयौ परमेसर सूं हेत।
पछताया काई वै अबै (जब) पंछी चुगग्या खेत ॥ ५०८ ॥

---

(५०२) हरण = हिरन। रै मांगणी = दो अंगुल की। लाख पसाव = लाखों योजन लंबी चौड़ी। झलिया = खिले हुए। भलिया = भरे हुए। पाव = पैर।

(५०३) कमळा = कमल। कादक = कीचड़। दणियर = सूर्य। वित्त = धन। अप्पणे = अपने।

(५०४) भाग प्रमाणे = भाग्य के अनुसार। मसै = मिलता है। वई = विधाता। मिळी = मिली प्राप्त हुई।

(५०५) खोटा काम = बुरे कर्म। बांधै गठड़ी पाप = पाप की गठड़ी बांधना। करणी वाली आपरी = अपने कर्मों के अनुसार गति प्राप्त करेगा।

(५०६) सत पर = सत्य ही के आधार पर। मेदनी = पृथ्वी। उजास = प्रकाश सूर्य और चन्द्रमा का उदय होना। थंभे = स्तंभ।

(५०७) वै अर्जुन वै बाण = अर्जुन और उसके बाण होते हुए।

(५०८) औसर पै = अवसर पर। परमेसर सूं = परमेश्वर से। हेत = प्रेम।

काम क्रोध मद मोह भो, लोभ सबां में जोय।
अळ्गो नर यासूं रहै वही ईस सम होय ॥ २०९ ॥
काचो पारो देव धंस निरबळ रो धन खाय।
और राजधन खाय तो बेगहु होत नसाय ॥ २१० ॥
सिंह गमन साधु वचन कदली फळै इक वार।
तरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी वार ॥ २११ ॥
धन खेती धन चाकरी धन धन है व्योपार।
मास एक है सातवो क्रोड़ एक मंगणहार ॥ २१२ ॥
मतवाळ्या री गोरड़ी, बणजारा रो वत्त।
बागण रै गळ बाड़सी मरै सो पावै हत्थ ॥ २१३ ॥
तू चावै डग एक तो हूँ चाढूं डग सट्ठ।
तू मोसो करड़ो रहै हूँ ही करड़ो मट्ठ ॥ २१४ ॥
सासू उतरै सासरो धामु उतरै मेह।
संपत उतरै पावणो जोबन उतरै मेह ॥ २१५ ॥

---

(२०९) सबां में—सब में। अळ्गो—दूर। यासूं—इनसे। ईस सम—ईश्वर के बराबर।
(२१०) देव धंस—देव धन देवताओं के नाम निकाला हुआ धन। निरबळ—निर्बल। बेगहु—शीघ्र ही। नसाय—नाश।
(२११) सिंह गमन—सिंहनी के कोप। साधु वचन—श्रेष्ठ पुरुषों के वचन। कदली—केले का वृक्ष। तरिया—स्त्रिया की।
(२१२) धन खेती—धनी करने वाले धन्य।
(२१३) मतवाळा—मस्त। गोरड़ी—स्त्री। वत्त—बिन धन। बागण—सिंहनी। गळ—गला। बाड़सी—स्त्रियों के पहनने का एक भूषण। हत्थ—हाथ।
(२१४) डग—डालते। एक—एक। हूँ—मैं। सट्ठ—साठ। मोसो—मुझसे। करड़ो—कठोरता। मट्ठ—मठड़ा।
(२१५) सासू—सास। सासरो—ससुराल। धामु—धूँआ घास। उतरै—

आधि व्याधि अपमान अर, पर घर भोजन वास।
कन्या कुमति संतति पाँचों ही प्राण विनास ॥ २१६ ॥
दिल अर औरो दूध की इणरी एक ही रीत।
दूध फटे घृत कहँ गयो मन फट मिले न मीत ॥ २१७ ॥
विद्या पंडित ना तजै धन मूरख मखरेस।
सुलटा सज्जन परहरे, कुलटा भूपरा वेस ॥ २१८ ॥
फाट्या कपड़ा मस्तरी बैंस्या जोबन हीण।
ठाकर घोड़ा बापरो तीनों ही खांणा बीण ॥ २१९ ॥
कवि कुपड़ा पाखणा जै मुख मोटा होय।
मजिलसा पड़िया रहै, सार न पूछै कोइ ॥ २२ ॥
नर है जोबन नार रो नर रो जोबन बीज।
घोड़ा जन जोबन घणा बन रो जोबन सीय ॥ २२१ ॥
रेसम री डोरी करै मत प्रत मार्य धोम।
छूटै बांधे हेमरै (तोमी) गयो तुरंग न होम ॥ २२२ ॥

---

(२१६) आधि व्याधि—मानसिक रोग। अपमान—अनादर। पर घर—पराये के घर। वास—निवास करना। कन्या—पुत्री। संतति—संतान।

(२१७) अर—और। औरो—दूसरा। इणरी—इनकी। घृत—घी। मीत—मित्र दोस्त।

(२१८) सुलटा—सुपात्र। सज्ज—सज्जा। परहरे—छोड़ना।

(२१९) फाटा कपड़ा—फटे कपड़े वाली। मस्री = स्त्री। जोबन = यौवन। घोड़ा बापरो—शक्तिहीन। खांणा बीण—अपने (को) बीनने योग्य।

(२२) कुपड़ा—कुलवाला। पाखणा—मस्तुत वस्तरा। मोटा—बातहीन। मजिलसा—सभी में। सार न पूछै—कोई बात भी नहीं पूछता।

(२२१) नार रो—स्त्री का। जोबन—यौवन। बीज—घी। बन— एक नाम विशेष। सीम—ठंड।

(२२२) मत प्रत—नित प्रति दिन। हेमरै—घोड़े के। तुरंग—घोड़ा।

मूरख महेली पागड़ी धरा न थाई ठांण।
पछे ही पछतावसी कर कर बौंथा ताण॥ ५१० ॥
प्रीत न ऐसी कीजिए जैसे पेमी बोर।
ऊपर भासै प्रेम की अन्तर अधक कठोर॥ ५११ ॥
चार मिल्या चौसठ खुल्या बीस रह्या कर जोर।
प्रीतम ऐसी कीजिए तामें बिघन न ओर॥ ५१२ ॥
धूम धूम नह छेड़िये पणघट री पाणीह।
सूतो कुत्तो न छेड़िये भूखो सन्यासीह॥ ५१३ ॥
तेली तू तळ ऊतरो भई बळीते जोग।
ठाकर ऊतरयों मान यूं मीला मरण्यों मोष॥ ५१४ ॥
अपने अपने बंस की सबै प्रभुता चाह।
मृग कुवत मृगलोक को भुम खोवत बाराह॥ ५१५ ॥
वापी सरित तड़ाग बस हर कोहू हर भेत।
बलिहारी नृप कूप की गुन बिन बूंद न देत॥ ५१६ ॥

---

(५१०) महेली=स्त्री। धरा—पृथ्वी। ठांण—हाथ में काबू में। ठौं—ठाम में।

(५११) पेमी बोर=एक प्रकार का बेर। अन्तर—भीतर। अधक—अधिक।

(५१२) कर जोर—हाथ जोड़े। बिघन—बाधा।

(५१३) धूम—नाचने गाने वाली एक जाति। धूंम=धूंमता फिरता कुत्ता। नह=नहीं। पणघटरी पाणीह—पानी भरती हुई नारी (पनिहारिन)।

(५१४) बळीता—बळती काठ। जोग—लायक। मोष—[illegible] नाम।

(५१५) प्रभुता चाह—बड़ाई चाहते है। मृगलोक=मृगों के रहने का स्थान। भुम=पृथ्वी। बाराह—सूअर।

(५१६) वापी—बावड़ी। सरिता—नदी। तड़ाग—तालाब। हरकोहू—हर व्यक्ति। कूप—कूआ। गुन=गुण रस्सी।

सूरवीर नर क्या करै, संपति सैं सुख प्रीत।
संपत से मरदी बड़े होय जगत में जीत ॥ ५४४ ॥
क्या मरनै सैं है बुरो क्या जीने सै नीक।
बदनामी मरनै बुरी नेकनाम जिय ठीक ॥ ५४५ ॥
क्या करली या जगत में क्या संसार में सार।
मनुष जनम को पाय कर, करसै पर उपकार ॥ ५४६ ॥
दुर्लभ दर्शन बड़न को दुर्लभ कृपा कल्यान।
दुर्लभ विद्या ज्ञान पुन दुर्लभ धन हरि ध्यान ॥ ५४७ ॥
सदा धरम संग्रह करो संपत्ति अमित शरीर।
नित मृत्यु को याद रख यह हितकारी बीर ॥ ५४८ ॥
जो फल पावेगा कोई, सो फल पावे आप।
करणी आपो आपरी कुण बेटी कुण बाप ॥ ५४९ ॥
राम राम सब कोई करो मरो कुमोत न कोय।
मुवा न पीछा आयगा जीते जी सुख होय ॥ ५५ ॥

(५४४) सूरवीर—बहादुर। प्रीति—प्रेम। मरदी=मरदानगी। होय—होता है। जगत में जीत—संसार में विजय।

(५४५) क्या मरैनै सै है बुरो—मृत्यु से भी बुरा क्या है। नीक=ठीक उचित बुरी—ख़राब। नेक नाम—अच्छा नाम। जिय—जीना।

(५४६) क्या करली=क्या करना। सार—तत्व महत्व। पर उपकार—दूसरे की भलाई करना।

(५४७) दुर्लभ=कठिन। बड़न को=बड़े पुरुषों का। हरिध्यान=भगवत भक्ति

(५४८) धरम—धर्म। संग्रह करो—संचित करो इकट्ठा करो। सम्पत्ति—ध दौलत। अमित—नाशवान्। हितकारी=हित करने वाला· हितकारी

(५४९) करणी—कर्म। आपो-आपरी—स्वयं की। कुण—कौन।

(५५०) मरो कुमोत न कोय=कुमोत कोई नहीं मरेगा। मुवा—मरने पर। पीछा आवगा—वापिस नहीं आवेगा। जीते जी—जीवन में।

क्षमा जो भूषण सबल को क्षमा अबल बलवान ।
क्षमा वशी करे लोक को क्षमा साधि बुधवान ॥ २२१ ॥
देखो इस संसार में सकल बात हैं चार ।
मीठा बोलण जगत में दया धरम उपकार ॥ २२२ ॥
कंचन के सतसंग सें काच पाच दरसाय ।
सतसंगति सतपुरुष से पड़े ऊंच पद पाय ॥ २२३ ॥
उत्तम संगति कीजिये उत्तम रहिये साथ ।
ज्यों पखान संग पान के पहुँचे राजा हाथ ॥ २२४ ॥
पूत सपूत तो एक है कुल पवित्र सोभाय ।
गुण चंदन संग पायके सरव वृक्ष सुगंधाय ॥ २२५ ॥
मूरख हू पंडित होवे सतसंगति में जाय ।
जैसी संगति जो करे, तैसा फल मिल जाय ॥ २२६ ॥
होय काम सतसंग से बिगरो काम बण जाय ।
साधुरत्नों की संगती करे न निरफल जाय ॥ २२७ ॥

---

(२२१) जो — यदि । भूषणु — गहना । सबल — बलवान । अबल = निर्बल । वशी करै — वश में करता है । लोक को = संसार को । बुधवान — विद्वान ।

(२२२) देखो — ध्यान दो । सकल — सार । मीठा बोलणु = मीठा बोलना मधुर संभाषण करना । धरम = धर्म । उपकार = भलाई (दूसरे की) ।

(२२३) कंचन — सोना । सतसंग — अच्छी संगति । ऊंच पद — ऊँचा स्थान ।

(२२४) पखान — पत्थर । ज्यों — जैसे । संग पान के — पान के साथ ।

(२२५) पूत — पुत्र [illegible] । कुल — खानदान । सरव — सकल । सुगंधाय — सुगन्धित होते हैं ।

(२२६) मूरखहू — मूर्ख भी । तैसा फल — वैसा ही फल ।

(२२७) होय काम — काम होता है । बण जाय = बन जाय । साधुरत्नों की — साधु रत्नों की । संगती — संगत करें वैसा । करे न — करने से । निरफल — निष्फल नहीं ।

सबसैं उत्तम है कहा सतसंगति उपकार ।
मनष जनम को पायकर, कर परमारथ सार ॥ ५५८ ॥

पिंगल डिंगल ना पढ्यो कविता पढ्यो न कोय ।
सतसंगतिरे सारसूं ग्रंथ संपूरन जोय ॥ ५५९ ॥

अष्टादश पुराण में व्यास वचन दोय जांण ।
पुन उपकार समान नहिं पीड़ा पाप प्रमांण ॥ ५६ ॥

रख संपति रख साहसी रख सतसंग सुजान ।
रख संतोष रख सील सच दया धरम रख ग्यान ॥ ५६१ ॥

संपति रखै न बाप सूं नहिं माता सूं जाण ।
नहिं भाई अरु नहिं त्रिया सो नर पशु समान ॥ ५६२ ॥

कुसंगत में बैठ के अपणापण गुण धूण ।
जैसे संगत सो हुवे सैंमर पड़े सो लूण ॥ ५६३ ॥

सत संगत पारस करे लोहा कंचन थाय ।
सत संगतरे लाग सूं मूढ़ चतुर हो जाय ॥ ५६४ ॥

---

(५५८) मनष जनम पाय कर — मानव जन्म पाकर । कर — करो । परमारथ — दूसरे का उपकार ।

(५५९) ना = नहीं । कोय — कोई । सारसूं — सार से तत्व से । संपूरन — समाप्त । जोय = देखो ।

(५६) अष्टादश — अठारह (१) । दोय — दो । जांण — समझो । पुन — पुण्य । पीड़ा — कष्ट । प्रमांण — निश्चय ।

(५६१) साहसी — हिम्मती । सील — सदाचार । सच — सत्य ।

(५६२) बाप सूं — पिता से । अरु — और । सो — वह ।

(५६३) कुसंगत में — बुरी सोहबत में । धूण — खो देना नष्ट कर देना । पड़े — गिरना । लूण — नमक ।

(५६४) थाय = होना । मूढ़ — मूर्ख ।

महापुरो या जगत में कुमाणस परसंग ।
पासे टार्ळे है प्रभु, छिटी गुल्ये को रंग ॥ ५६५ ॥
करो पासगी गरड की माटी मांहि मिलाय ।
सतसंगति के कारने सब मीठो बन जाय ॥ ५६६ ॥
सबकर पै सतसंग सै सोभी सबकर होय ।
सगुणगुणियां संग बैठ के गुण भी अपना खोय ॥ ५६७ ॥
सत संगति कुब्जा सू पंडित को कर मत्र ।
ग्यान जातरो मेळ रंग भेद न व्यापे तंत्र ॥ ५६८ ॥
सब गुनि होय न एकसा समझ विचक्षण बात ।
बरतन ऐसो बरतिये [illegible] निभजाय ॥ ५ ६ ॥
बुरो कियां होवे बुरा भली भली तें होय ।
बुरी कियां जो हो भला कर देखो सब कोय ॥ ५७० ॥
मानस कर सत मानसा मानस पूरी समाय ।
मानस सेती होय कर मानस गम्म बढाय ॥ ५७१ ॥
अनरथ करनो हो नहीं करणो अरथ विचार ।
[illegible] सब समझ [illegible] म होय विगार ॥ ५७२ ॥

धीरज रखणी बिपति में धीरज में बहुसार।
धीरज से कारज सरै धीरज बात सुधार॥ २७३॥
सीर हुवै सो ही मिलै बिना सीर नहिं जान।
पड़ी चीज सौ कोस पर, सीर मिलावै आन॥ २७४॥
जनम लियो या जगत में कियो न कुछ उपकार।
वृथा भयो वाको जनम लागत है लखवार॥ २७५॥
जैसा मानस को मिला तैसी संगति होय।
बोवै बीज जमीन में, तैसा ही फल जोय॥ २७६॥
मान होत है गुननसैं गुन बिन मान न होत।
गुण की पूजा सब करै, गुन सीखो सब कोय॥ २७७॥
विद्या गुन गुन लीजिये कोई नीच पै होय।
देखो मैली ठौड़ में मोती तजत न कोय॥ २७८॥
सुसती कबै न कीजिये सुसती में नहिं सार।
सुसती सें मानस बणै सुसती करत बिमार॥ २७९॥

---

(२७३) धीरज — धैर्य। रखणी — रखना। बहुसार — बहुत सा सारा। [illegible]
सरै — कार्य होता है। बात सुधार — बात का बनना।

(२७४) सीर हुवै — जो भाग्य में हो। सो ही मिलै — वही मिलता है। [illegible]
पर — बहुत दूर, काफी दूरी पर। सीर मिलावै = भाग्य मिलाता [illegible]

(२७५) जनम लियो — पैदा हुआ। कियो न कुछ — कुछ नहीं किया। [illegible]
उसका।

(२७६) मानस — मनुष्य। तैसा ही = उसी प्रकार का।

(२७७) मान होत है — इज्जत होती है। गुनन सैं — गुणों से।

(२७८) नीच पै = नीच आदमी के पास। मैली ठौड़ में — खराब जगह
तजत — छोड़ना। न कोय — कोई नहीं।

(२७९) कबै न कीजिये — कभी नहीं करनी चाहिए। बिमार — बीमारी। [illegible]
पड़ता है।

नीयत अपणी साफ कर, उपजे बहुत आनंद ।
सीधो सदा मिजाज रख दुनियाँ करे पसन्द ॥ ५८० ॥
दोय आदमी बैठ कर, करे बात दिल चाय ।
उनके बीच एकंत में समझ राख मत जाय ॥ ५८१ ॥
रहणो देख इलाकसू कहणो जगत सुहाय ।
कहणो ऐसो वचन को जासू रीस न आय ॥ ५८२ ॥
च्यार आदमी जो कहे सो कहेना तू मान ।
हरगिज सता न लावसी समझ राख पहचान ॥ ५८३ ॥
इत्यादिक जो असतरी मात बैन सम जान ।
मोटी सो माता मुजब छोटी बैन समान ॥ ५८४ ॥
पांच बरस सुत लाडकर, दस पुनि ताड़न देह ।
बरस सोळवें लागतां कर सुत मित्र सनेह ॥ ५८५ ॥
एक बार हो दुशमनी जासें फिर विसवास ।
ताको करवो नहिं भलो मित्र होय या दास ॥ ५८६ ॥
या तू समझ विचार कर, कम है मित्र हजार ।
छोटा खोटा जानु इक बहुतहि करत बिगार ॥ ५८७ ॥

---

(५८०) नीयत — बुद्धि विचार शक्ति । मिजाज — स्वभाव ।
(५८१) दिलचाय — मन पसन्द । एकंत में — अकेले में समझराख — ध्यान रखो जान रखो । मत जाय — मत जाओ ।
(५८२) रहणो = रहना । कहणो — कहना । जगत सुहाय — जग को पसन्द आवे जैसा । जासू = जिससे । रीस — गुस्सा ।
(५८३) जो कहे — जैसा कहे । सता न लावसी — तकलीफ नहीं उठाना ।
(५८४) इत्यादिक जो असतरी = पत्नी के अतिरिक्त । मात-बैन — माँ बहिन । मोटी — बड़ी । माता मुजब — माता के समान । बैन — बहिन ।
(५८५) पांच बरस — पांच वर्ष (तक) । सुत — बेटा । पुनि — फिर । ताड़न = मारना । लागतां — लगने ही । मित्र — मित्र ।
(५८६) ताको — उसका ।
(५८७) कम है — थोड़े हैं । खोटा — बुरा । इक — एक । बहुतहि — बहुत ही ।

करै बुराई और की अपने आवे आय।
सो नर अपनी फिर करे, दूसर आगे जाय ॥ १८८ ॥
लछमी जानें आपणी करे न अपणी होय।
फिरत फिरत की छांहड़ी जावत है सब कोय ॥ १८९ ॥
बड़ा बड़ाई ना करे राखे सबसे प्रीत।
आया कूं आदर देवे येही बड़न की रीत ॥ १९० ॥
परमेस्वर अरु मौतकूं याद हमेशां राख।
बुरा काम जासूं टळै कूड़ कपट मत भाख ॥ १९१ ॥
सवा पहर सेवा विद्या दोय पहर व्योपार।
पूरण पहर खुस खेम में वृत्ति दुरस्त कर कार ॥ १९२ ॥
या संसार व्योहार में हिल-मिल चलियै जोय।
सबसूं मीठा बोलिये जगत सरावै तोय ॥ १९३ ॥
सदा सरीखी नहिं रही वक्त बराबर जोय।
महाबली रावण जिसो सावत रह्यो न कोय ॥ १९४ ॥
उमेद इल्म हासल कियां बहुत फायदो होय।
जावो देस विदेस में मान करे जग सोय ॥ १९५ ॥

---

(१८८) और की — दूसरे की।
(१८९) लछमी — धन दौलत वैभव। छांहड़ी = छाया परछाई।
(१९०) आयाकूं — आनेवाले को। रीत — रीति।
(१९१) अरु — और। जासूं — जिससे। टळै = दूर हों। मत भाख = मत बोलो।
(१९२) दोय पहर व्योपार = व्यापार दो पहर तक। वृत्ति — आदत स्वभाव। दुरस्त — ठीक। कार = कार्य काम।
(१९३) हिलमिल चलियै जोय — हिलमिल कर प्रेम पूर्वक चलना चाहिए। सरावै — प्रशंसा करे।
(१९४) वक्त — समय। जिसो — जैसा। सावत रह्यो न कोय — कोई भी सम्पूर्ण नहीं रह सका कोई नहीं रह सका।
(१९५) इल्म — हुनर ज्ञान। सोय — तमाम।

उमेद इमान जो आपनो लाख गयां मत खोय ।
लालच को सब छोड़ दे शोभा जग में होय ॥ ५५६ ॥
उम्मेद इष्ट अरु धर्म को याद हमेशां राख ।
जिणसूं कारज सिद्ध होवे रहै जगत में साख ॥ ५५७ ॥
उमेद आळस मत करो आळस महा खराब ।
आळस अंग बिगाड़दे तन की तोड़ै आब ॥ ५५८ ॥
उमेद आदर आपणी रखिये अपने हाथ ।
बुरे न संगत कीजिये बुरे न करिये साथ ॥ ५५९ ॥
उमेद अपणी इज्जत खूब राखिये याद ।
चालगत ऐसी चालिये कुळ की रीत-मर्याद ॥ ६० ॥
उमेद भलाई कीजिये बुरो छोड़दे बात ।
भले बुरे की वासना या जग में रह जात ॥ ६ १ ॥
उमेद उजर नहीं कीजिये भली बात में भाय ।
च्यार आदमी जो कहै मानलिया सुख पाय ॥ ६ २ ॥
उमेद भली जो आपणी करे काम हित लाय ।
खता न मान काहूकी आखिर जो पछताय ॥ ६ ३ ॥
उमेद कमाई देख के, करिये खरच विचार ।
पैदा से ज्यादा खरच मूरख करै गंवार ॥ ६ ४ ॥

---

(५५६) लाख गयां — लाख जाने पर । मत खोय = मत खोवो ।
(५५७) साख — इज्जत ।
(५५८) आब — चमक सुन्दरता ।
(५५९) आदर — इज्जत ।
(६) चालगत ऐसी चलिये — ऐसी चाल चलनी चाहिए, ऐसा व्यवहार करना चाहिए । कुळ — खानदान ।
(६ १) वासना — सुगन्ध । या जग मैं रह जाज — इस संसार में रह जाती है ।
(६ २) उजर — एतराज विरोध ।
(६ ३) खता — राय । काहू की — किसी की ।
(६ ४) कमाई — आमद ।

उमेद न चाहे आपको ताको कदे न चाय ।
ऐसे नर की दोस्ती लारै खाक उड़ाय ॥१०५॥
उमेद वखत बह जात है समझ जाव मन मांहि ।
जो चाहे, सो तुरत कर, गया वखत फिर नांहि ॥१०६॥
उमेद क्रोध का रोकिये मांहि मारिये रीस ।
गम खायां गुण ऊपजै देखो बिस्वा-बीस ॥१०७॥
उमेद इसारो जो किया खबरदार हो जाय ।
सो नर हर इक काम में हार कदे नहि खाय ॥१०८॥
केहर मत बाळक कहो देखो जात सुभाव ।
पाछै देवै चाहरां परत न छोडै पाव ॥१०९॥
अंबर री मयाज सूं केहर कोप करंत ।
हाक धरा ऊपर हुई केम सहै बळवंत ॥११०॥
सादूळो वन संचरै करण गयंदां नास ।
प्रबळ खोज भमरां पड़ै हंसा हुवै हुलास ॥१११॥
सूनो पाहर नींद सुख सादूळो बळवंत ।
वन कठि मारग वहै, पग पग हौल पडंत ॥११२॥

---

(१०५) दोस्ती = मित्रता । लारै = पीछे । खाक — मिट्टी ।
(१०६) वखत बह जात है — समय चला जाता है । तुरत — झट; शीघ्र ।
(१०७) गम खायां — शान्ति रखने पर । बिस्वा-बीस — निश्चय ही ।
(१०८) खबरदार — सचेत होशियार ।
(१०९) केहर — सिंह । बाळक — बालक बच्चा । जात सुभाव — जाति और स्वभाव । पाछै — पीछे; पास में । चाहरां — पीछा करने वालों को । परत न छोडै पाव — मरते दम तक भी पीछे नहीं हटना ।
(११०) अंबर री — आकाश की । मयाज सूं — गर्जन से । कोप = क्रोध । हाक — आवाज देना । धरा — पृथ्वी । केम — किस प्रकार । बळवंत — बलवान ।
(१११) करण — करना । गयंदां — हाथियों का [illegible] का । भमरां — भंवर । हुलास — आनंद ।
(११२) पाहर = भोर । कांठै = समीप । हौल — घबराहट ।

मुंह न दियै पर मारियै केहर कळण प्रबंध ।
मूवौ पाहर मैं सुए, के गाहै गज मंध ॥ ६१३ ॥
मुंह न दिये पर मारियै मागो न करै घाव ।
सापूध्ये साचा गुणां वेह कियो बन-राव ॥ ६१४ ॥
सीहां देस विदेस सम सीहां किसा वतन्न ।
सीह जिकै बन संचरै सो सीहांरो वन्न ॥ ६१५ ॥
पग पग काटा पाथरै, थाथासी बनराव ।
होणीं ज्यूं त्यूं होवसी दियै न हीणो दाव ॥ ६१६ ॥
तळ पंमो गळ फूळ फळ, पंछिन उपर समाय ।
बोहीज हरियो रूखड़ो (जिको) सूको ठूठ कहाय ॥ ६१७ ॥
धुर कुतो जोबन धूसो कस महेंकी मित ।
थाके विच हूं झूपड़ो कुशल कहा पूछंत ॥ ६१८ ॥
सूर न पूछै टीपणो सुकन न देखै सूर ।
मरणां नूं मंगळ गिणै समय चढ़ै मुख नूर ॥ ६१९ ॥

---

(६१३) मुंह न दियै पर मारियै — मरे हुए (प्राणी) पर मुंह नहीं लगाता । मैं — पकड़ा । गाहै — मारता है । मद गंध — मद युक्त हाथी ।

(६१४) घाव — प्रहार । वेह — विधाता । बन राव — बन का राजा ।

(६१५) सीहां देस विदेस सम — सिंहों के लिए देश-विदेश समान ही है । किसा — कौन सा । वतन्न — वतन । जिकै — जिस । सो — वही । वन्न — वन जंगल ।

(६१६) पाथरै — बिखरता है । थाथासी = हठीला । होणीं ज्यूं त्यूं होवसी — जो होना होगा वही होकर रहेगा । हीणो दाव = दीन वचन कहना ।

(६१७) तळ — नीचे । पळ — पत्ता । बोहीज — वही । हरियो रूखड़ो — हरा पेड़ । ठूठ — काठ ।

(६१८) थाके विच — इसके बीच । कुशल कहा पूछंत — कुशलता के लिए क्या पूछते हो ।

(६१९) सूर — वीर बहादुर । टीपणो — पंचांग । मंगळ — शुभ । नूर — तेज ।

केहर रै हाथळ करी कीधी दाढ वराह।
सूर काज कीधी सुजड़ विध करतापण वाह॥ ६२०॥
कृपण जतन धन रौ करै, कायर जीव जतन्न।
सूर जतन उणरौ करै, जिणरौ खाधौ अन्न॥ ६२१॥
दामोदर दीधै नहीं कायर कठि वास।
सरणा राखै सूर रै, तेय न व्यापै त्रास॥ ६२२॥
के सूरा धर कज्ज है, के सूरा पर कज्ज।
सुरपुर दोहू संचरै, खगां हूं रज रज्ज॥ ६२३॥
हाथळ बळ निरभै हियौ सरभर को न समत्थ।
सीह अकेला संचरै सीहां केहा सत्थ॥ ६२४॥
केळ रहै नित कांपती कायर जणै कपूर।
सीहण रण सांकै नहीं सीह जणै रण सूर॥ ६२५॥
डरै लोग वन झाड़ियां सूतै ही सादूळ।
वे सूता ही जागता सबळां माथा सूळ॥ ६२६॥

---

(६२) केहर — सिंह। हाथळ — पंजा। कीधी = की बनाई। दाढ — दाढ़। वराह — सूअर। सुजड़ — तलवार। विध — विधि विधाता। करतापण — कर्तृत्व। वाह — धन्यवाद।

(६२१) कृपण — कंजूस। उणरौ — उसका। जिणरौ — जिसका। खाधौ — खाया।

(६२२) कठि — पास समीप। तेय — वहाँ।

(६२३) धर — धरा पृथ्वी। कज्ज — कार्य। खगां — तलवारों से। रज रज्ज = खण्ड खण्ड होकर टुक टुक होकर।

(६२४) हियौ — हृदय। सरभर — समानता करने को। को — कोई। समत्थ — समर्थ। सीह — सिंह। केहा — कैसा। सत्थ — साथ।

(६२५) केळ — कदली वृक्ष। नित — नित्य। कांपती = कंपित रहती है। जणै — पैदा करती है। सांकै नहीं = डरती नहीं है।

(६२६) वन झाड़ियां — वन की पथझाड़ियों में। सबळां — बलवान।

हिरणां नह मावै हियै सड़बो दीठां स्वांस ।
घाव घणां मिळ बीटियां तो पिण तिम नह त्रास ॥ ६२७ ॥
बैर बिसावै घाव सूं मन माझळ कर वास ।
जतन न राखै पांणजै बेगो पाव बिणास ॥ ६२८ ॥
मन समझ सनेह कर सज्जन देखि सतोस ।
जण जण सूं हंसता फिरयां निकम जासी मोल ॥ ६२९ ॥
चौसठि दीवा जो बळै बारै रवि उगंत ।
तम घर तौहि अंधारडो जस घर पुत्र न हुंत ॥ ६३० ॥
सज्जन दुज्जन संगतै पविको सहै उचाट ।
मांकण के मिसवै करो लभै मार ज्यूं खाट ॥ ६३१ ॥
सज्जन एहा कीजियै बैठा मोहै पास ।
जउ बदनामी सिर चढ़ै तो लोग कहै स्याबास ॥ ६३२ ॥
जैसे ज्वर के जोर सूं भोजन की रुचि जाइ ।
तैसे कुकरम के उदै धरम बचन न सुहाइ ॥ ६३३ ॥

---

(६२७) हियै—हृदय में । सड़बो—तृणादि निर्मित कृत्रिम पुरुष—खेत में धान की रक्षा के लिए बनाया जाता है । दीठां—देखने पर । घणां मिळ—बहुत से मिलकर । बीटियां—घेर में । तिम नह त्रास—तिल मात्र भी दुःख नहीं होता ।
(६२८) बिसावै—पैदा करना । माझळ—मन में बीच में । बेगो—जल्दी ।
(६२९) सनेह कर—प्यार करना । निकम जासी मोल—मूल्य जाता रहेगा ।
(६३) बळै—जलना । बारै—बाहिर । उगंत—उदय होना । तम घर—उस घर । तौहि—तब भी । अंधारडो—अंधेरा । न हुंत—नहीं होना ।
(६३१) पविको—पवित्र । मांकण—खटमल । सहै—सहती है ।
(६३२) एहा=ऐसा । मोहै—मोहायमान हों । जउ—यदि । स्याबास—धन्यवाद ।
(६३३) ज्वर=बुखार । रुचि—इच्छा । कुकरम—बुरे कर्म बुरे कार्य । सुहाइ—अच्छा लगना ।

मर्गो मूस छुर के गये रवि मु लियँ अहार।
असुमहीन सुम के उवे जाने धरम विचार ॥ ६३४ ॥

ज्यूं काहू बिसहर डसे रवि सु नींब चवाई।
त्यों तुम ममता में मई मगन विषय सुख पाइ ॥ ६३५ ॥

काज अकाज न लोभ बस गिमत न दुख संताप।
ज्यूं हिम पड़सा पान लें मेल्ल सिमल परताप ॥ ६३६ ॥

इक पोथी इक पदमनी मही वीर्य पर हत्थ।
वा बिगड़ पंडित बिना वा बिगड़ पर सत्थ ॥ ६३७ ॥

मौलिया भसपए बाहिरो फिटक जीवियो संसार।
जोम्यो तेहनो जाणियै साख भरै दुय श्यार ॥ ६३८ ॥

नदी नरिंदा अग्निकुला कामणि मैं कमसाह।
एता अंत न लीजिये जो चाहे कुशलाह ॥ ६३९ ॥

मीठें बोल्ये बहुत गुण जो कोइ जाणैं बोल।
बिण दामां ही बाहिरो माणस लीजै मोल ॥ ६४ ॥

---

(६३४) छुर कै गये = ज्वर के छूट जाने पर।
(६३५) काहू = किसे। बिसहर = सांप आदि जहरी जानवर। मगन = लुप्त।
(६३६) काज-अकाज = अच्छा अथवा बुरा कार्य। हिम = बाइसा। मैल सिमल = मैल जैसा है, ले लेता है। पर ताप = दूसरे के पाप।
(६३७) इक = एक। पोथी = पुस्तक। पदमनी = स्त्री। पर हत्थ = पराये हाथों किसी दूसरे व्यक्ति को। बिगड़ै = खराब होती है। पर सत्थ = गैर के साथ रहने से।
(६३) भसपए बाहिरो = बिना कमाई किए बिना किसी का उपकार किए। तेहना = उसका। दुय श्यार = दो चार।
(६३९) एता = इनको पा। कुशलाह = कुशलता।
(६४) मीठें बोल्ये = मीठा बोलने पर। बिण दामांही = बिना दाम के बिना दिये लिए। माणस = मनुष्य।

संगत भई तो क्या भया हिरदा भया कठोर ।
नव नेजा पाणी चढ़ै तोहौ न भीजै कोर ॥ ५४१ ॥
वेस्या किसकी भारज्या मंगत किसके मीत ।
देय देय जब ना दियै तब ही छांडै पीत ॥ ५४२ ॥
पहली समझि कीजिये रीति प्रीति मैं गांठ ।
उलझी फिरि सुलझै नहीं रंग रेसम की गांठ ॥ ५४३ ॥
धन धरती नारी तुरी मठ गयवर हथियार ।
परवित जानो आपना नहिं कीजे इतबार ॥ ५४४ ॥
अंतर कपटी मुख रसी नाम प्रीत का लेत ।
मानत है ना पुरस कु दगा दोस्त कु देत ॥ ५४५ ॥
संगम चट्ट न छेडिये हाटां बीच किराड ।
रांगड़ कबहुं न छेडिये मारै धीको काड ॥ ५४६ ॥
महरण पहरण पाहरू चोर जुआरी जार ।
एता सब्ब न बोस हीं जो पूछे करतार ॥ ५४७ ॥
वस्तु पराई रे हिया रसभर नयण न जाय ।
माखटण आठे पुहर तोहा अपणी न होय ॥ ५४८ ॥

---

(५४१) भया = हुआ । हिरदा = हृदय । नेजा = भाला । तोही = तो भी । कोर = किनारा ।
(५४२) भारज्या = स्त्री । मंगत = भिखारी । मीत = मित्र । देय देय = जब तक देते रहो । छांडै = छोड़ देते हैं । पीत = प्रीत ।
(५४३) रीति = रीति रिवाज । प्रीति = प्रेम । गांठ = दुश्मनी ।
(५४४) तुरी = घोड़ा । गयवर = गजेन्द्र हाथी । इतबार = विश्वास ।
(५४५) अंतर = भीतर । मुख रसी = मुख में रस हो मुंह से मिठ-बोला हो । पुरस = पुरुष ।
(५४६) चट्ट = जाट एक जाति विशेष । हाटां = दुकान में । किराड = बनिया । रांगड़ = बहादुर बलवान व्यक्ति धीको = घुस्सा ।
(५४७) पाहरू = पहरेदार । एता = इतने । करतार = भगवान ।
(५४८) हिया = हृदय । न जाय = मत देखो । तोही = तो भी । न होय = नहीं होता ।

मुख तें छूटी बात को को करसके उपाय।
छूटी गांघी में गुडो जित भावें तित जाय ॥ ६४६ ॥

तू तने पूछ हे सखी नेह किता मण होय।
लागता लेखो नहीं छूटा टांक न होय ॥ ६५० ॥

ऊंची बात पपीहरा नमै न नीचें नीर।
कै जाचे सुरपत्ति को कै दुख सहै शरीर ॥ ६५१ ॥

चतुरन को चिंता घणी, मूरख के मन राज।
गुन अवगुन बूझे नहीं पेट भरन सों काज ॥ ६५२ ॥

चिंता छोडि अचिंत रहु चिंता चित को खाइ।
होनी होइ सो होयगी चिंता करें बलाइ ॥ ६५३ ॥

सो साजन इकलाख मित्त तासी मित्र अनेक।
जासु सुख दुख कहिये सो लाखन में एक ॥ ६५४ ॥

राजा सेती रूसणो विसहर सेती भाख।
परनारी सूं प्रेमरस मे तीनू खयकाज ॥ ६५५ ॥

---

(६४६) मुख तें छूटी — मुंह से निकलने पर। गुडो — पतंग। जित भावें तित जाय — जहाँ इच्छा हो वहाँ चली जाती है।
(६५) नेह = प्रेम। किता मण होय — कितना अधिक तोल में होता है। लेखो नहीं — कोई हिसाब किताब नहीं। छूटा — टूट जाने पर।
(६५१) ऊंची बात — उच्च खानदान का। नमै न — झुकता नहीं। जाचें — प्रार्थना करना।
(६५२) घणी — बहुत। बूझे नहीं — समझते नहीं।
(६५३) अचिंत — निश्चिन्त चिंता रहित। रहु — रहो। बलाइ — बाला।
(६५४) सो — वह। इक — एक। मित्त — मित्र। जासु — जिनसे। लाखन में एक — लाखों (व्यक्तियों) में एक ही।
) राजा सेती — राजा से। रूसणो — नाराज होना। विसहर — सांप आदि जहरीले जीव। खय = नष्ट।

गुष्यां हुती बुष्टा मिर्या हुती मेळ ।
रज्जब बोमू बात में खबरदार का खेस ॥ ६६३ ॥
खीमती कुखीमती बोळै भाळ पंपाळ ।
आप तो खूणे छिपि रहै कवका सहै कपाळ ॥ ६६४ ॥
जो करणा सो आज कर अभी साझ है साथ ।
काल काल तू क्या करै, काल काळ के हाथ ॥ ६६५ ॥
बड़ी भई धर विष मरी कहि सज्जन किण काज ।
मंखियां सोही सराहियै जिण मंखियन में लाज ॥ ६६६ ॥
जो तू देख यती करै देवै नाना प्यार ।
सहज रूप सुकंठिया पड़णो में गुरु प्यार ॥ ६६७ ॥
कटक मिसोम किरामतो सज्जन वयण करूर ।
कथया देख न छोडिये गुण करै जरूर ॥ ६६८ ॥
कही बात हुवै पार की पर हय धीबै नाहि ।
कहियौ सुनियौ समझियौ मन ही के मन माँहि ॥ ६६९ ॥
जो दुखदाई आपकु ताकु यह विध मार ।
बहुत सभा काढू कहै दोषे मनह उतार ॥ ६७० ॥

---

(६६३) मेळ = प्रेम । खबरदार — होशियार ।
(६६४) भाळ-पंपाळ — अट-पटांग बोलना अंट-संट बोलना । खूणे — कोने में एक ओर । कपाळ = खोपड़ी ।
(६६५) साझ — उपकरण । काळ — कल (आनेवाला कल) । काल के हाथ — मृत्यु के अधीन ।
(६६६) भई — हुई । किण काज — किस काम की । सराहियै — प्रशंसा करना । जिण — जिस ।
(६६७) सहज रूप — सुन्दर रूप । गुरु प्यार — गुरु में श्रद्धा ।
(६६८) वयण = वचन । करूर = कठोर । गुण करै = उपकार करते हैं ।
(६६९) पारकी — पराई दूसरे की । माँहि = भीतर ।
(६७०) दुखदाई — दुख देने वाला । ताकु — उसको । यह विध = इस प्रकार । मनह उतार — हृदय से उतार देना हृदय से निकाल देना ।

बहता पाणी निरमळ्ळ पड्या गंदीला होय।
साधु तो रमता भला दाग न लागे कोय ॥ १७१ ॥
पड्याव पांणी निरमळ्ळ जो कुछ गहरा होय।
साधुजन बैठा भला जो कुछ गुरुग्म होय ॥ १७२ ॥
मन समझ सनेह कर सज्जन देख सलोळ।
चण चण सु हुसता फिरयां निकम जावसी मोळ ॥ १७३ ॥
चौसठि दीवा जो बळे बारे रवि उगंत।
तस घर तोहि अंधारलो जस घर पुत्र न हुंत ॥ १७४ ॥
सज्जन एहा कीजिये जेहा कूवा कोस।
पग दै पाछा ठेलिये तोही नाखे रोस ॥ १७५ ॥
सज्जन एहा कीजिये जेहा रेसम रंग।
टूक टूक हुए जाइ फिर तोही न छोडै संग ॥ १७६ ॥
साजनिया सालै नही सालै माइठाण।
ऊट गयो सालै नहीं सालै पड्यो पिलाण ॥ १७७ ॥
सज्जन दुरजन के कहीं भड़क न दीजै माय।
हुलवे हुलवे छंडिये ज्यु जल छंडै पाळ ॥ १७८ ॥

---

(१७१) बहता पाणी = चलता हुआ पानी। गंदीला = गंदा।
(१७२) गुरुग्म होय = गुरु ज्ञान हो।
(१७३) सनेह = प्रेम। सलोल = गंभीर समझदार। चण चण सु = हर किसी से।
(१७४) बळे = जलते हों। बारे = बाहिर। उगंत = उदय होना। तस घर = उसके घर। अन्धारलो = अन्धेरा। हुंत = नहीं होना।
(१७५) एहा = ऐसा। जेहा = जैसा। पग दै = पांव लगाकर। नाखे रोस = गुस्सा नहीं मानते।
(१७६) टूक टूक = टुकड़े टुकड़े। तोही = तो भी।
(१७७) सालै = खटकना पीड़ा देना।
(१७८) भड़क = तैश में आना। हुलवे हुलवे = धीरे धीरे। पाळ = किनारा।

जाण विहूणो जाणियो शकुन-विहूणो ढोर ।
परिख विहूणी कामणी ए तीनू माणस ढोर ॥ ६७९ ॥
मयणो समवेरी न को पर वसि लग्गै धाइ ।
आग पराई आंण कै, अपणौ अंग लगाइ ॥ ६८० ॥
बुद्धि अंतरि ऊपजै दीधी केती होइ ।
जळ भीतरि काछिम वसै तिरिय न जाणै तोहि ॥ ६८१ ॥
ते भल्ला किम जाणियै जे परि अक्खम न दिट्ठ ।
बिण चक्खै किम जाणियै कि कडुवा कि मिट्ठ ॥ ६८२ ॥
जारै जम गलहत्थिया रूठो काहु करेसि ।
मरण खूटै मारिसी नही खूटै जीव न देसि ॥ ६८३ ॥
किसू करै कवि अप्पड़ा मिलिया मूरख सत्थ ।
किसू करै तरुणो चतुर, पड़ी नपुंसक हत्थ ॥ ६८४ ॥
पाणी मांहि पखाण भीजै पिण भेदै नहीं ।
मूरख माथै कान रीझै पिण बूझै नहीं ॥ ६८५ ॥
हंस नाम सू जाणियै पाणी नदी वहंत ।
सोनु कसवट जाणियै मांणस बात करंत ॥ ६८६ ॥

---

(६७९) विहूणो — रहित बिना । माणस = मनुष्य । ढोर — पशु ।
(६८) सम — बराबर । पराई आंण कै — दूसरे की लाकर । अपणौ स्वयं के ।
(६८१) अन्तरि ऊपजै — भीतर से पैदा होती है । दीधी — दी हुई । केती — कितनी । तिरिय न जाणै — तैरना नहीं जानता ।
(६८२) भल्ला = अच्छा । किम — कैसा । दिट्ठ — देखना । बिण चक्खै = बिना चखे बिना खाए । मिट्ठ — मीठा ।
(६८३) जारै — जिसके । रूठो = नाराज होने पर । काहु करेसि — क्या करेगा । मरण खूटै — समाप्त न होने पर । जीउ — जीव प्राण ।
(६८४) किसू करै = क्या करेगा ? सत्थ — साथ । हत्थ = हाथ ।
(६८५) पखाण — पत्थर । रीझै — खुश होना । बूझै नहीं — समझना नहीं ।
(६ ६) नाम सू — नाम से । वहंत = बहता हुआ । सोनु — सोना । मांणस = मनुष्य । बात करंत — बात करता हुआ । कसवट — कसौटी ।

रम धन आवन जात है, रहत न देसू कत्थ।
हरिये हरिये रुलडे इ धन होसी सत्थ ॥ ६६४ ॥
सासरवै मावर महीं पीहर नहीं सुठौम।
कंथ न पूछे बतड़ी धन साहामण नाम ॥ ६६५ ॥
धनिया मपणी भूपड़ी थिक पारका गवाक्ख।
सीधो टूकडो ही भलो सीधो मलो न लक्ख ॥ ६६६ ॥
भल्ला ते सहजे भला बूंडा किम्हि न हुंति।
चंदन विसहर डंकिय परिमल तउ हि न जांत ॥ ६६७ ॥
कांत करसे कोइ आपणड़ी गति चालवां।
दूबल होसी सोइ, तांति पराई जे करै ॥ ६६८ ॥
बेटां साह विनास बहुभर विनसै चोवनै।
कपड़ा मैल विनास धावळ विनसै चोवनै ॥ ६६९ ॥
बाड़ी विनसै वानरां सूड़ी भांवाराम।
विनसै प्रति कुमाणसां चाड़ी विनसै गाम ॥ ७० ॥
तुरियां मीठो तावणो रण मीठी तरवार।
गोरी मीठो रूसणो चूमे मीठी हार ॥ ७१ ॥

---

(६६४) रुलडे — मूल। होसी — हो जायगा।
(६६५) सासरवै = ससुराल में। सुठौम — अच्छा स्थान। बतड़ी — बात।
(६६६) पार का — दूसरे का। सीधो — सिया हुआ। भलो — अच्छा। सीधो — लिया हुआ। लक्ख — लाख।
(६६७) भल्ला — अच्छा। बूंडा — बुरा। किम्हि — किसी प्रकार। हुंति — होता। डंकिय — डंक मारना। जांत — जाना।
(६६८) कांत — क्या। आपणड़ी गति चालवां — अपने मार्ग पर चलना। दूबल = दुर्बल। जे — यदि।
(६६९) विनास — नाश होना खराब होना।
(७०) चाड़ी — छोटा बाग-बगीचा। वानरां — बन्दरों से। कुमाणसां — बुरे लोगों से।
(७१) तुरियां — घोड़ा। तावणो — चाबुक। तरवार — तलवार। गोरी — स्त्री। रूसणो = नाराज होना।

मेहा नै मोटा नरां हिया न दीजै मास ।
ऊ वूठो सरवर भरै ऊ न मेलै नरास ॥ ७०२ ॥
आसा जिणी कीजिये जे आसा पहुँचाय ।
निगुण मिनखो आसड़ी मान महातम जाय ॥ ७०३ ॥
अगर मसो के केवड़ा चंदन मसो के धूप ।
माणस गुणे परखिजए योय न पीजे रूप ॥ ७०४ ॥
मीठा बोलण सठ वयण ससनेही सु प्रीत ।
बीसारया नव वीसरै खिण खिण आवै चीत ॥ ७०५ ॥
सज्जन सुगणां माणसां हसि कीजै व्यवहार ।
निगुण निहेजां माणसां ऊभा लम जुहार ॥ ७०६ ॥
सज्जन ऐसा पर हरो जैसा पक्का बोर ।
बाहिर सुंदर दीसना मांहे कठिन कठोर ॥ ७०७ ॥
पद्मिनी कोमी प्रीतड़ी किण ही गुण रै काज ।
गुण ना लुधियो नहीं दुग लुधियो पसराज ॥ ७०८ ॥

---

(७०२) महा = वर्षा । मोटे नरां — बड़े आदमी । हिया — हृदय । ऊ — वह । मेलै — भेजना । नरास — निराश ।

(७०३) जिणरी = जिसकी । निगुण = निर्गुण । मिनख — आदमी । आसड़ी — आशा ।

(७०४) कै — या । परखिजए — परीक्षा करना ।

(७०५) सठ — दुष्ट । वयण — वचन । ससनेही — प्रेमी । नव — नहीं । खिण-खिण — क्षण प्रतिक्षण । चीत — ध्यान ।

(७०६) गुणत्यां = गुणवान । निगुण = गुण रहित । निहेजां — बिना प्रेम का । ऊभा ऊभ — खड़े खड़े ही । जुहार — नमस्कार ।

(७०७) परहरो — छोड़ दो । बाहिर सुन्दर दीसना — बाहिर से सुन्दर दिखाई देता है । मांहि — भीतर से । कठिन कठोर — कठिन ही कठोर ।

(७०८) कोमी — भी । प्रीतड़ी — प्रेम । किणही — किसी । गुण रै काज — गुण के लिए । लो लुधियो नहीं — लुब्ध हुआ नहीं ।

जेनर प्यासे प्रीति के ताकू सुख न हुंत ।
रात दिवस झुरतो रहै, पेम बिना असवंत ॥ ७०९ ॥
जबा न जोवे सामुहा जोभाया विवरंग ।
सो सज्जन यूं छोडिये ज्यु कंचली भुयंग ॥ ७१० ॥
राजन को अपकार से सुख पराई भूख ।
किये न सुकरत काम को भूख नहीं जो पूख ॥ ७११ ॥
घटणो बधणो करम गत सोच करो मत कोय ।
लिख्या लेख नाहीं टळै होणहार सो होय ॥ ७१२ ॥
रहणो सदा इ ध्यान सु चित माफक घर जोय ।
कहेणो जोय जमानाकु कहेणो वखत सुहोय ॥ ७१३ ॥
कारज करो विचार के घर अपने को जोय ।
पीछे उपजे ताप नहीं मंदा करै न कोय ॥ ७१४ ॥
चोतु चाहे दोस्ती तीन बात रख याद ।
पीठ तिया सु बोलमत लेन देन तज वाद ॥ ७१५ ॥
जो सुख चाहे जीव को वातो तामो प्यार ।
चोरी जुगटी जामनी और पराई नार ॥ ७१६ ॥

---

(७०९) जे नर — जो व्यक्ति। ताकु — उसको। न हुंत—नहीं होता। झुर तो रहै—व्याकुल होता रहे। पेम — प्रेम।
(७१) जोवे — देखे देखना। सामुहा — सामने।
(७११) सुकरत — अच्छा कार्य।
(७१२ घटणो बधणो — घटना और बढ़ना। नाहीं टळै — नहीं टल सकते।
(७१३) ध्यान सु — ध्यान से ध्यान से। घर जोय—घर को देखकर। कहेणो—कहना। वखत = वक्त, समय।
(७१४) विचार कै—सोच कर। घर अपने को जोय—अपना घर देखकर। ताप—संताप दुःख। मंदा — बुराई।
(७१५) दोस्ती = मित्रता। तिया — तिया स्त्री। वाद — वाद विवाद।
(७१६) जो सुख चाहे जीवको — यदि जीवन में सुख चाहते हो। जामनी — जमानतदारी। तामो — त्यागो दूर रखो।

सुत कपूत पैदा होवे कुलको धम नसाय ।
कुबुध कुसङ्ग में चले जन में होत हसाय ॥ ७१७ ॥
बेटा बेटी मारजा पोता और विसेस ।
सपत हुवे तो घर भला नहीं तो भला विदेस ॥ ७१८ ॥
बहर आगे गावणी गूंगे आगे गुल ।
अंधे आगे नाचणी तीनें बात अतुल ॥ ७१९ ॥
भलो भलाई करत है बुरो बुरी कर जाय ।
जाकी-जैसी भावना वैसा ही फल पाय ॥ ७२० ॥
नेकी का फल नेक है, बदी का फल बद ।
नेकी सु सुख ऊपजे बदी से सब रद ॥ ७२१ ॥
जो कारज करना होवे तो मत देर लगाय ।
अणी टळ सो विघन है, फर समय नहीं आय ॥ ७२२ ॥
करे खुशामद जाणिये जो मतलब के काज ।
दुनिया में मतलब तणी रही खुशामद आज ॥ ७२३ ॥
जो मतलब के कारणे राखत सबसे हेत ।
लेत उधारो जो कछु, फिर पीछो नहीं देत ॥ ७२४ ॥
मतलब का साथी सबै मतलब सु है नेह ।
मतलब में मरजी रखे बिन मतलब दे छेह ॥ ७२५ ॥

---

(७१७) नसाय — नष्ट हो । कुबुध — कुबुद्धि । हसाय — हँसी ।
(७१८) मारजा — स्त्री ।
(७१९) गावणो — गाना ।
(७२०) बुरी — बुराई । वैसा ही — उसी प्रकार का ।
(७२१) नेकी — भलाई । फल — नतीजा फल । नेक है — अच्छा है । बदी — बुराई । बद — बुरा । रद — खराब ।
(७२२) अणी टळै — मौका चूक जाने पर ।
(७२३) जो मतलब के काज = मतलब के लिए । तणी — के द्वारा ।
(७२४) राखत — रखता है । लेत — लेता है । पीछो — वापिस ।
(७२५) सबै — सब । नेह — प्रेम । मरजी — इच्छा ।

मतलब मोटो जगत में मतलब सु है प्यार।
द्रव्य देखकर हितकरे, अंतर कपट अपार ॥ ७२६ ॥
सदा न मौज बसंत की सदा न ग्रीषम भांन।
सदा न जोबन थिर रहै सुख संपत सनमांन ॥ ७२७ ॥

सदा न लक्ष्मी थिर रहै, सदा न मौका पाय।
सदा न उमर एक सी गया वक्त नहीं आय ॥ ७२८ ॥
सदा न फूलै केतकी सदा न सावण होय।
सदा न बिपता रह सकै सदा न सुख भी जोय ॥ ७२९ ॥

सदा न काहु की रही गल पीतम के बांह।
ढुरती फुरती यों गई, ज्यु तरवर की छांह ॥ ७३० ॥
दिन सीधे जग जस दहै दिन फिर दोस दहंत।
सदा सुबुधी पुरसनां कुबधी लोक कहंत ॥ ७३१ ॥
भली कीयां हुवै बुरी दिन ऊंधो उरभ्राय।
बुरी किया होवै भली दिन सूधा सुरभ्राय ॥ ७३२ ॥

---

(७२६) अंतर = भीतर। अपार = अधिक।
(७२७) मौज = बहार। भांन = सूर्य। थिर = स्थिर।
(७२८) उमर = अवस्था उम्र। एकसी = एक जैसी। गया वक्त = बीता हुआ समय। नहीं आय = वापिस नहीं आता।
(७२९) सावण = श्रावण मास। बिपता रह सकै = विपत्ति रह सकती। जोय = देखना।
(७३०) काहु की रही = किसी की रह सकी। ढुरती फुरती = चलती फिरती। ज्यु = जिस प्रकार। तरवर = पेड़।
(७३१) दिन सीधे = अच्छे दिनों के। जग = संसार। दिन फिर = दिनों के फिर जाने पर बुरे दिनों के आने पर। दहंत = कहते हैं। सुबुधी = अच्छी बुद्धि वाला बुद्धिमान्। कुबधी = मूर्ख। कहंत = कहते हैं।
(७३२) ऊंधो = उलटा। सूधो = ठीक।

काम क्रोध माया, मछर, मोह लोभ मन मांहि ।
जीतां जग जीतो जबै जीतइ जाति कहाँ हि ॥ ७४० ॥
माछा खायै सुख सुयै माछा पहिरै सोइ ।
जति माछी रहणी रहै मरै न भूखा होइ ॥ ७४१ ॥
सुखित होणा कठिन है, सुखावण आसान ।
सो सुखित ज्यों कहै प्यारा सुख्या मान ॥ ७४२ ॥
देख काल वय को भलो रोगी करै निदान ।
साध्य देखि औखध करै सो मनु बेद सुजान ॥ ७४३ ॥
दई सीख जो सीखसे करै सीख गुण जांण ।
उदै राख तण मनिखमू दई सीख परिमांण ॥ ७४४ ॥
उदय दुरजन संग बहु पर उन्नत न सुहात ।
स्याम ढके हुए देखि के भ्रू टेढ़े हुइ जात ॥ ७४५ ॥
घर डर, गुरु डर, वंस डर, डर लज्जा डर मांण ।
डर जाकै जिय मैं रहै, तिण पाया रहिमाण ॥ ७४६ ॥
तोलौं प्यारे ज्यों गरज सरी गरज कुण काज ।
काहू कू प्यारो नहीं बिना गरज उदैराज ॥ ७४७ ॥

---

(७४०) जीतां—जीतने पर । जग जीतो—संसार को जीत लिया । जीतइ—जीत जाने पर ।
(७४१) माछा—अच्छा । पहिरै—पहिनना । माछी रहणी—अच्छे प्रकार से रहना
(७४२) आसान—आसान सरल । प्यारा—जिसका । मन—मान्य दिल ।
(७४३) वय—उम्र । भलो—देखना । औखध—औषध ।
(७४४) दई—देने पर । सीख—शिक्षा । तण—तन । मनिख हु—मनुष्य को
(७४५) दुरजन—दुष्ट लोग दुर्जन । संग बहु—बहुतों का बसना । पर उन्नत
दूसरों की उन्नति । सुहात—अच्छी लगना ।
(७४६) डर—भय । जाकै—जिसके । जिय मैं—हृदय में । तिण—उसने । रहिमाण
भगवान ।
(७४७) तोलौं—तब तक । ज्यों—जब (तक) । गरज—मतलब स्वार्थ । कुण
कौन क्या । काहू कू—किसी को ।

रसना साची तो उदै जो जपियै साम ।
पर निंदा परची कथा कहा कियइ बेकाम ॥ ७५६ ॥
अंतर गति की और कछु कहण सुणण की और ।
कहै उदै उण मनिख सूं मूरख मिलिये होर ॥ ७५७ ॥
कह्यो न पावै कवि उदै, कपटी केरै हेत ।
देखो कुसुम कणेर को तन रातो मन सेत ॥ ७५८ ॥
सगुण निगुण समान कछु उदै न दूजी बात ।
सेत पीत चूनी हरद मिलत लाल ह्वै जात ॥ ७५९ ॥
ज्यां सुहाग त्यां रूप मांहि ज्यां विधवा त्यां रूप ।
साँई को उदैराज कछु लख्यो न जात सरूप ॥ ७६० ॥
उदैराज चिंता न करि, बइठ निचिंता होइ ।
जिण ऐसी चिंता दई, चिंता मंजइ सोइ ॥ ७६१ ॥
मन सुख मनदुख, मनविरह मनाधीन सब काम ।
उदैराज संसार में सब मन को बिसराम ॥ ७६२ ॥
मन साचै सब साच है, मन झूठै सब झूठ ।
पांचै इन्द्री—जोध तन सबही मन के पूठ ॥ ७६३ ॥

---

(७५६) रसना—जबान । साम—भगवान स्याम । परची कथा—दूसरे की चर्चा करना । बेकाम = व्यर्थ ।
(७५७) अंतर = भीतर । कहण-सुणण—कहना और सुनना । उण—उस । होर—छोड़कर ।
(७५८) कणेर—कनेर, एक प्रकार का फूल । राती—लाल । सेत—सफेद ।
(७५९) चूनी—चूनरी ।
(७६) साँई—भगवान । लख्यो न जात—मालूम नहीं होता ।
(७६१) नकरि—न करो । बइठ—बैठो । निचिंता—चिंता रहित । जिण = जिसने । ऐसी—इतनी । मंजइ—तोड़ना मिटाना ।
(७६२) मनाधीन = मन के आधीन ।
(७६३) जोध—योधा ।

मन इतरौं उतरू चल्यो करह न वणियत काइ ।
मन की गति उदैराज कसु लखी न सूझी जाइ ॥ ७६४ ॥
मन मांकड़ ज्यूं फाळसौं रहै न राख्यौ जाइ ।
सासण देखै पर्यां उदै, तहां तहां उठि जाहि ॥ ७६५ ॥
मन राखो माठो मनहुं मन उनमद मन मद ।
मन सौ तापस कुण उदै मन सो कौन मरद ॥ ७६६ ॥
मन दाता मन सासची मन कायर मन सूर ।
मन मूरख पंडित उदै मन हाजर मन दूर ॥ ७६७ ॥
जो तुम सांई मन क्यिौ सौ राखो तुम मांहि ।
उदैराज यम यूं कहै मन मेरे वस नाहि ॥ ७६८ ॥
वयंण अमंसा विस रहै, मरै न बूडा थाइ ।
उदैराज गहमह महल जौ दीजै सो ,पाइ ॥ ७६९ ॥
अवसर जैबो पहिरबौ, अवसर दैबो दान ।
अवसर चूका आदमी ते आदम किण स्यान ॥ ७७० ॥
अवसर भोग न भोगियौ अवसर लग्यौ न योग ।
त्यां जीयां केहौ हरख कुण तिण मूआं सोग ॥ ७७१ ॥

---

(७६४) इतरौं उतरू — इस ओर से उस ओर । सूझी — समझना ।
(७६५) राख्यौ जाइ — रखा जाय । तहां तहां — वहीं वहीं ।
(७६६) माठो — मोटा ताजा । कुण — कौन । मरद — मनुष्य ।
(७६७) दाता — दान देने वाला दानी । कायर — अधीर व्याकुल । सूर — वीर बहादुर ।
(७६८) सांई — भगवान । वस — वश आधीन ।
(७६९) वयंण — वचन । अमंसा = बहुत समय तक । थाइ = होना ।
(७७०) जैबो — खाना । पहिरबौ = पहिनना । आदम — मनुष्य । किण — कौन । स्यान — शान ।
(७७१) त्यां — उनके । जीयां — जीने पर जीवित रहने पर । केहौ — कैसी । हरख = खुशी । तिण — उनके । मूआं — मरने पर । सोग — दुख संताप ।

कुण हम कुण तुम्म कुण तहां कुण कहां की-बात ।
तन छूटै मेळौ नहीं ज्यूं तरवर के पात ॥ ७७२ ॥
सहस कोटि कुंजर दियै अेक अरब गोदन ।
कन्या कोटि विवाह दे तदपि न भक्त समान ॥ ७७३ ॥
साहिब सरण न सेविया पर उपगार न किध्ध ।
उण माणस ऊवौ कहै अहिल जमारो सिध्ध ॥ ७७४ ॥
भसणा सो डसणा नहीं डसणा भसणा नाहिं ।
मुख मीठा उदैराज कहि, है झूठा मन माहिं ॥ ७७५ ॥
विष्णु, बानर, व्याल भर, गरधम, गंडक गोल ।
ए अळ्गाहिज राखणा यो उपदेस अमोल ॥ ७७६ ॥
पारस नह नह पोरसो पातर राखै पास ।
जिणरै आयो आंगणै नेड़ौ धनरो नास ॥ ७७७ ॥
पातर वाल्ही प्रीत मीठी लागै प्रथम मन ।
मंद हुआ धन मीत हुए विरस कड़वी हुवै ॥ ७७८ ॥
संकै आवै संग सू अरध निशा में ऊठ ।
नर मूरख तो मिणु न दै पातरियां नूं पूठ ॥ ७७९ ॥

---

(७७२) तन छूटै — मरने पर । मेळौ नहीं — मिलाप नहीं होता ।
(७७३) कुंजर — हाथी । तदपि न भक्त समान — तब भी भक्त की (भगवान) की तुलना नहीं कर सकते ।
(७७४) उपगार — भलाई । किध्ध — की । जमारो — जीवन । सिध्ध — किया ।
(७७५) भसणा सो — जो भौंकता है । डसणा — काटना ।
(७७६) बानर — बन्दर । व्याल — सांप । गंडक — कुत्ता । गोल = गुलाम । ए — यह । अळ्गाहिज — दूर ही । यो — यह । अमोल — अमूल्य ।
(७७७) नह — नहीं । पातर — वेश्या । जिणरै — उसके । आंगणै — आगमन । नेड़ौ = पास समीप । नास — नाश ।
(७७८) विरस — कटु ।
(७७९) संकै = शरमाता हुआ छुपके से । अरध निशा — आधी रात । पूठ — पीठ ।

पातर हु ता प्रीतकर माफ़ू बध्यं परोग ।
भाखर पछताया मठे मानस दें दें लोग ॥ ७८० ॥
नाव तिरे नहं नीर में निवळ्यां मावड़ियांह ।
राघव मंह साबत रह्वे, मिनखों मावड़ियांह ॥ ७८१ ॥
रिण नहं भीनी रुधिर सूं मद सूं गोंठ मभ्कार ।
मूंछां मावड़िया मुंहें मफा कियौ विस्तार ॥ ७८२ ॥
नहं तीरथ जणणीं समो जणणीं समो न देव ।
इण कारण कीजे अवस सूम जणणीरी सेव ॥ ७८३ ॥
जिकां न दीधो जनम घर, हेको कण दुज हत्य ।
मंहि बैसीजे नाव में सायर सूमां सत्य ॥ ७८४ ॥
कीडी कण पावे नहीं अवतारां घर माय ।
भौर घरांसू भाणियो जिको गमाड़ जाय ॥ ७८५ ॥
करतब मंह राची कृपण राची रूपैयांह ।
कड़वो वास कुटंबियां प्रामणड़ां पइयांह ॥ ७८६ ॥

---

(७८) हुता = से । माफू बध्यं = मफीम के बसे । परोग = बाकर । मठे = यहाँ ।

(७८१) नहं नीर में = पानी में नहीं । निवळ्यां — निर्बल । मावड़ियांह — मस्लाह; नाव चलाने वाले । नह — नहीं । मिनखों — मनुष्यों द्वारा ।

(७८२) रिण — युद्ध । गोंठ = दावत । मुंहे — मुंह पर । कियौ विस्तार — बढ़ी ।

(७८३) नहं — नहीं । जणणी — माता मां । समो = समान बराबर । इण कारण — इसलिए । अवस — अवश्य । सेव — सेवा ।

(७८४) जिकां — जिसने । हेको — एक भी । कण — दाना । दुज — द्विज । बैसीजे — बैठना चाहिए । सायर — समुद्र । सत्य — साथ ।

(७८५) कीड़ी — चींटी । कण — दाना । घरांरां — कंजूस । भाणियो — लाया हुआ । जिको — वह भी । गमाई — खो देता है ।

(७८६) करतब — कर्तव्य । राची — मग्न । रूपैयांह = रुपयों से । प्रामणड़ा — पाहुना अतिथि ।

खग इण साकरखोररै, संमन साकर चूण ।
सब दिन पूरै साइयां चांच दई सो चूण ॥ ७८७ ॥

तट गंगा तपियो नहीं नह जपियो नरसीह ।
जड़ तैं मारण धमण जिम स्वस गमिया बहु दीह ॥ ७८८ ॥

बीता उमर बरसड़ा बातां करता बंक ।
क्यूं ही नह साधन कियो उर जमरो आतंक ॥ ७८९ ॥

उम्र भरण भर भर घटै रटै नहीं श्रीराम ।
चूस करै ज्यूं कबड़ी घटै, तैं पुण घटै तमाम ॥ ७९ ॥

गात संवारण में गमैं उमर काम घमाण ।
भाखर प्राण प्रमूक भो पाय हुसी मन काण ॥ ७९१ ॥

हालो ठालो हालणो चांभो संपत चोड़ ।
मौत सरीसा मनखरै लमर नहीं नह खोड़ ॥ ७९२ ॥

---

(७८७) खग—पक्षी । इण—इस मह । साकर खोर—शक्कर खाने वाला मधुर अन्न भक्षी । चूण—चोगो । सांइयां—स्वामी परमेश्वर । चूण—आटा धान या चुग्गा ।

(७८८) जड़—जड़ मूर्ख । मारण—लुहार की भट्टी । धमण—धौंकनी । स्वस—श्वास । गमिया—खोए । दीह—दिवस ।

(७८९) बरसड़ा—वर्ष । उर—हृदय में । जम—यमराज के । आतंक—भय

(७९) भरै—भरना । चूस—चोर्षण । कबड़ी—कौड़ी । घटै—घटते हैं । तैं—जितने ।

(७९१) गात—शरीर । गमै—खोए । घमाण—घमासान । भाखर—पेड़ में प्रमूक—निरर्थक । मनकाण—मन की ग्लानि ।

(७९२) ठालो—खाली । हालणो—चलना । चांभो—बहुत सी । सरीसी—जैसी । मनखरै—मनुष्य के । लमर—दुनिया । खोड़—ऐब ।

तामसार बैठो तखत रज में लोटे रंक।
गिणै दुनांनूं हेक गत निरदय काल निसंक ॥ ७९३ ॥

जम हथ्था फुरती जिका करणो कवण वणाय।
पोंहच मारण प्राणियां बळ बळ अंबर आय ॥ ७९४ ॥

पंथ मसेंदे पूगणो अळगो घणो अकथ्थ।
म्हे विण जय्यों हालणो संबळ (बा) विण सथ्थ ॥ ७९५ ॥

हिल मिल सब सूं हालणो ग्रहणो आतम ग्यान।
दुनियां में दस दोहड़ा मांडू तूं मिजमान ॥ ७९६ ॥

रे जोधी ऊमर रही काम न छोड़ कूड़।
हिय मथा सू मांस हव धंधा ऊपर धूड़ ॥ ७९७ ॥

सर सूके नह संचरै, वांका पंछी बहंग।
किणरै बाले सग कुण सब स्वारथ रै संग ॥ ७९८ ॥

हूम न जांणै देवजस सूम न जाणै मौज।
मुगल न जांणै गौ दया भुगल न जाणै खोज ॥ ७९९ ॥

---

(७९३) तामसार – बादशाह। रज – धूल। रंक – दरिद्री। दुनांनूं – दोनों को। हेक गति – एक गति से एक-सा।

(७९४) जम हत्था – यमदूतों के हाथ। वणाय – बनाकर। अंबर – आकाश।

(७९५) मसेंदे – प्रभात। पूगणो – पहुंचना। अळगो = दूर। घणो – बहुत। अकथ्य – कहने में नहीं आवे। हालणो – चलना।

(७९६) हिल-मिल प्रीति पूर्वक। हालणो – चलना या रहना। ग्रहणो – ग्रहण करना। दोहड़ा – दिन। मिजमान – मिहमान।

(७९७) काय न – क्यों नहीं। कूड़ = झूठ। हव – अब। धूड़ – धूल।

(७९८) सर – तालाब। संचरै – जाता है। पंछी – पथिक। किणरै – किसके। कुण – कौन।

(७९९) हूम – डोंगी डोम। देवजस – ईश्वर की स्तुति। मौज – आनंद। गौ दया = गौ रक्षा। खोज – रहस्य।

रोळ बिगाड़ै राजवू मोळ बिगाड़ै मास ।
सनै सनै सिरदार री चुगल बिगाड़ै बास ॥ ८०० ॥
नरक समो दुख थळ नहीं बाडव समो न ताप ।
लोभ समो औगण नहीं चुगली समो न पाप ॥ ८०१ ॥
बुरी चुगल मुख में बसै माखी रो नंह भंग ।
माखी बैसे स्वान मुख भूस न बैसे भृंग ॥ ८०२ ॥
टीडा करसण सू पियौ बानरड़ा सू बाग ।
माम किराड़ां सू पियौ ज्यांरा फूटा भाग ॥ ८०३ ॥
नाणौं गुरु, नाणौं इसट, नाणौं राणौं राव ।
नांणा बिन प्यारो न को साहांबाद सुभाव ॥ ८०४ ॥
लोभ दिए परवाय दे गरो दिए दे माप ।
नांण न छोड़े वाणियो बंधव गणे न बाप ॥ ८०५ ॥
कर पारो काचे कळस बळ राखियो न जाय ।
मद महके ठहरै नहीं विदर उदर में वात ॥ ८०६ ॥

---

(८) रोळ = विलासी व्यक्ति । मौळ = सहायक । सनै-सनै = धीरे धीरे ।
(८ १) दुख थळ — दुख की जगह । बाडव — अग्नि । ताप — गर्मी । औगुण — अवगुण ।
(८ २) बुरी — बुराई । माखी रो — मक्खी का । नंह — नहीं । भूस न बैसे — भूल कर भी नहीं बैठता । भृंग — भँवरा ।
(८ ३) टीडा = टिड्डियों को । करसण — खेती । सू पियौ — सौंपदी । बानरड़ा — बंदरों को ।
(८ ४) नाणौं — पैसा । गुर — गुरु । इसट — इष्ट । को — कोई । राणौं = राजा ।
(८ ५) गरो दिए — मित्र देते हैं । दे माप — माप देते हैं । वाणा = प्राणा । बंधव — बंधु । गणे — गिने समझे ।
(८ ६) कर पारो — हाथ में पारा । काचे कळस = कच्चे घड़े में । राखियो न जात — रखा नहीं जाता ।

गोलां सूं न सरै, गोला जात जबून ।
उखाणो सायद भरै, सो गोला घर सून ॥ ८०७ ॥

मास बोम बांधे गळे लोक गमें कुळ लाज ।
काठा बांधे कूटियां करे काज महाराज ॥ ८०८ ॥

कूकर खाय घळै नहीं जुड़ै न कायर जंग ।
थिवर न ठहरै विपत में संपत में हिव संग ॥ ८०९ ॥

नहीं डुबै पग नाग रै, हिरण न थिरता होत ।
ससिया रै नह सींग ज्यूं गोलां रै नह गोत ॥ ८१० ॥

सरवर दीपक चंद प्रभाते रवि दीपक ।
भै लोक्यं दीपक धरम सुपुत्रो कुल दीपक ॥ ८११ ॥

लमसा लट्टू काठ का रंग दिया करतार ।
डोरी बांधी पेम की घूमि रहा संसार ॥ ८१२ ॥

लमसा करौ तो क्या डगे करि करि भी पछताइ ।
सेवै पेड़ बंबूल का अंब कहाँ ते खाइ ॥ ८१३ ॥

---

(८०७) सरै परत = काम चलता है । जबून = बुरी । उखाणो = कहावत । सायद = साक्षी । घर सून = घर सूना रहता है ।

(८०८) बोम = गुलाम । बांधे गळे = गले में बांधने से । गमें = जाती है । काठा = दृढ़ । कूटियां = कूटने से ।

(८०९) कूकर = कुत्ता । खाय = प्रसिद्ध कोढ़ ।

(८१०) नागरै = सर्प के । थिरता = स्थिरता । ससिया = खरहा । गोत = गोत्र ।

(८११) सरवर = तालाब । भैलोक्यं = संसार में । धरम = धर्म । सुपुत्रो = अच्छी संतान सुपुत्र । कुल दीपक = कुल का उजाला ।

(८१२) लट्टू = लट्टू, एक प्रकार का गोल खिलौना जो जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है । काठ = लकड़ी । करतार = भगवान ।

(८१३) सेवै = सेवा करना । बंबूल = बबूल । अंब = आम ।

मूरख चित विवेक नहिं सब सारीखो वास ।
सेत सेत सब एक से करर कपूर कपास ॥ ८१४ ॥
सिरजन हार सिरजियो एह अचंभो मुझ्झ ।
को नहीं किणही सारिखो घण चतुराई तुझ्झ ॥ ८१५ ॥
विरहा जाके घट बसै ता तन कैसो मांस ।
एहो बहुतम उबरै हाड चाम अरु सांस ॥ ८१६ ॥
पंच भगनि सहनी सुगम सुगम सहन खग धार ।
नेह निहावन नवल मनि महा कठिन विहवार ॥ ८१७ ॥
पंछी पानी पीगए, नदी रही भरपूर ।
आस करम यह संपदा दीया न होवै दूर ॥ ८१८ ॥
सजन रूप न राचीये जो गुण हुवै त भूल ।
रूप घणी गुण बाहिरो रोहीड़े रो फूल ॥ ८१९ ॥
सिण इक सजन संगतैं पूगै मन की आस ।
जलहर की एका घड़ी अरहट बारह मास ॥ ८२ ॥

---

(८१४) विवेक — ज्ञान । सारीखो — एक जैसा एक समान । सेत — सफेद ।
करर — एक प्रकार का जहरीला कीड़ा ।

(८१५) सिरजनहार — भगवान । मुझ्झ — मुझे । किणही — किसी के । तुझ्झ — तुम्हारी ।

(८१६) जाके — जिसके । घट बसै — हृदय में निवास करता हो । कैसो — किस प्रकार का । एहो — यह । उबरै — शेष रहजाता ।

(८१७) पंच—पांच । सहनी—सहन करना । खग धार—तलवार की धार । मनि—कहना । विहवार = व्यवहार ।

(८१८) पंछी—पक्षी । यह—यह । दीयां न होवै—देने से (दान करने से) नहीं होती

(८१९) राचीयै — अनुरक्त होना मगन होना । घणी—बहुत । गुण बाहिरो—बिना गुणवाला ।

(८२०) सिण—क्षण । इक—एक ।

जीमडीयां भमरत बसै च जाणियें झकोल ।
चासिग रा मिस ऊपरे, जीमां तणे हिलोल ॥ ८२१ ॥
जीमडीयां भमरत बसै बसेज एकणि ठांइ ।
एक बोलंति लख लहे, इक लख गांठि के जांइ ॥ ८२२ ॥
माला लालच मत करो लालच कीयां मति जाइ ।
लालच बाधो माछली झाटो झाट विकाइ ॥ ८२३ ॥
सानी मिठो परघरी सब रस जिम्या लेत ।
कुत्ती घारां मिमि गई थव कुत्ता पहरा देत ॥ ८२४ ॥
ममा मगारा कूप का पाय पाहुती सांझ ।
जण जण का मन राजनी वेस्या रह गई बांझ ॥ ८२५ ॥
जीमां सक्कर जीम कूप्प जीमां प्यारी जग्ग ।
जीमां सजण रडि मिलै जीमां लागे अग्ग ॥ ८२६ ॥
जममा दुनीया मजब है जैसा धाकू फूल ।
ऊपरि लाल गुलाल है अंदर विष का मूल ॥ ८२७ ॥
सोपारी गुण मागसी करै बड़ां सूं संग ।
दाप कटावै सिरतणी गिण सबरां बड़ग रंग ॥ ८२८ ॥

---

(८२१) जीमडिया–जीभ में । भमरत–भ्रमण । चासिग–काला नाग ।

(८२२) एकणि–एक ही । ठांइ–स्थान जगह । बोलंति–बोलने पर । लहे–प्राप्त करना । जांइ–चला जाना ।

(८२३) कीयां–करने से । मति–बुद्धि । जाइ–चली जाती है । लालच बाधो–लालच में बंधी हुई लालच में फंसी हुई ।

(८२४) जिम्या लेत–जीभ लेती है । कुत्ता–कौन ।

(८२५) मगा–कूपा । कूप–रखाने होना । जण जण का–हर किसी का ।

(८२६) सक्कर–खांड । कूप्प–कूप । जग्ग–संसार । रडिमिलै–हिल मिल के रहना । अग्ग–आग ।

(८२७) मजबहै तिक्ति है । ऊपरि–ऊपर से । विष का मूल–विष की जड़ ।

(८२) गुण मागसी–गुणों से बढ़ने पावे । बड़ां सूं–बड़ों से । सबरां–सुबरों के लिए ।

सजण थोड़ा हंस जिम, विरला को दीसंत ।
दुरजण काळे काग ज्यूं महीयळ घणा भमंत ॥ ८२९ ॥

मन तन रा मेळाह करले ज्यों कमला पति ।
बिहाणे रण वेळाह कुण जाणे वसिसी कठै ॥ ८३० ॥

सुपना सम संसार, हरि सुमरण इक सत्य है ।
पतनी सुत परिवार, चार दिनांरा चकरिया ॥ ८३१ ॥

सब जानत संसार, आखिर मरणो एक दिन ।
किम भूलै करतार जाणणो सेवट चकरिया ॥ ८३२ ॥

चित हित सूं कर चाव हरिनै सुमरौ हर समय ।
जमदूतां री दाव चलै न तो पर चकरिया ॥ ८३३ ॥

आयुस भर आराम जो तूं चाहै जीवणै ।
तृष्णा त्याग तमाम चित हरी नै चकरिया ॥ ८३४ ॥

खड़ियां ऊसर खेत ना कछु तामें नीपजै ।
हरि सूं जोड़ै हेत चारूं फळ दै चकरिया ॥ ८३५ ॥

---

(८२९) जिम—जैसा । विरला—बहुत ही कम । महीयळ—पृथ्वी पर । भमंत—घूमते है ।

(८३०) मेळाह—मिलाप मिलना । रण—रस । वेळाह—त्याग समय । कुण—कौन । वसिसी—रहेंगे । कठै—कहां ।

(८३१) सुपना सम—स्वप्न के समान । इक—एक । पतनी—पत्नी और । चार दिनांरा—चार दिनों का बहुत ही थोड़े समय के लिए ।

(८३२) किम = कैसे । करतार—भगवान । सेवट—अन्त में ।

(८३३) हित सूं—प्रेम से । चाव—इच्छा । जमदूतांरी—यमराज के दूतों का । तो पर—तुम पर ।

(८३४) आयुस भर—जीवन भर । जीवणै—जीवका । तृष्णा—लोभ लालच । चित—चिंतन करना ।

(८३५) खड़ियां—जोता (खेत) । तामें—उसमें । नीपजै—पैदा होना । जोड़ै हेत—प्रेम करना ।

स्याम राख ओ साग माख रहै या ना रहै।
सास गमायो साख चाहै निरलज चकरिया ॥ ८३६ ॥

मदा जगत रा मीच नसो सरब हरि नामरो।
छूटै फसै न कीच चतुर हाय सो चकरिया ॥ ८३७ ॥

हुंसकर बोल हमेश चूं चित में चिंता करै।
पावै ना परमेस चोंच दई जिण चकरिया ॥ ८३८ ॥

मूरख रगरे मूल रो घर घर मत रोवणा।
चोंच दई सो चूण घट-घट देसी चकरिया ॥ ८३९ ॥

विधि रेखा बलवान मेट सके नहि सिवभुतो।
भूमंडल विच मान चककर काटै चकरिया ॥ ८४० ॥

मांगा मिलै न मोत मास मिलै किम मांगियां।
निज करमां री नीत चूक न किणरी चकरिया ॥ ८४१ ॥

सबरै हात समान नाक कान कर, पद नयन।
पायत भाग्य प्रमाण बिणा करमा चकरिया ॥ ८४२ ॥

नर रहु, रहु पर धाम करलै उद्यम क्रोड़ विध ।
कुछ भी सरै न काम चोखा दिन बिन चकरिया ॥ ८४३ ॥

हरी करै सो होय जो कुछ सुख दुख जगत में ।
कम बध हुवै न काय चतुराई सूं चकरिया ॥ ८४४ ॥

राखै जिणविध राम राजी हुय उणविध रहो ।
कोई सरै न काम खींचातां सूं चकरिया ॥ ८४५ ॥

हरि चितै सो होय नर चित्यौ होवै नहीं ।
रह्यो दुसासन रोय चीर घट्यौ नहिं चकरिया ॥ ८४६ ॥

चिता छोटी भार, रह रह बाळै रात दिन ।
बाळै एक ही बार चिता बिचारी चकरिया ॥ ८४७ ॥

नारी सुत हुवै नांह साथी संकट रै समय ।
मरती वेळा मांह जव ही बदळै चकरिया ॥ ८४८ ॥

पावै ढूंढ न एक मिनख मुसीबत मांयनै ।
उमड़ै लोक अनेक चैन उठै जहँ चकरिया ॥ ८४९ ॥

---

(८४३) करलै — कर लो । उद्यम क्रोड़ विध — करोड़ प्रकार के यत्न । सरै न काम — काम नहीं बनता । चोखा = अच्छा । बिन — बिना ।

(८४४) हरी करै सो होय — जो भगवान करेगा वही होगा । कम-बध = कम होना और बढ़ना ।

(८४५) जिण विध — जिस प्रकार । उण विध — उस प्रकार, उसी तरह । खींचातां सू — रोने कूकने से ।

(८४६) सो होय — वही होता है । चीर घट्यौ नहीं — चीर नहीं घटा ।

(८४७) छोटी = बुरी । रह रह बाळै — रह रह कर जलाती है । बाळै = जलाती है ।

(८४८) हुवै नांह — नहीं होते हैं । संकट रै समय — संकट के समय । वेळा — समय । जव — जोय । बदळै — बदल जाती है ।

(८४९) पावै ढूंढ न एक — ढूंढ कर भी एक नहीं पाता है । मिनख — आदमी; पुरुष । उमड़ै लोक अनेक — कई लोग चले आते हैं । चैन — आराम; सुख शान्ति । जहँ — जहाँ ।

धर्‌या रहै सब धाम मात पिता सुत नारि, धन ।
कोइ न आवै काम चोळो छूटां चकरिया ॥ ८८७ ॥

जब आसी जमदूत पकड़ सिजासी पलक में ।
करड़ाई करतूत चालै एक न चकरिया ॥ ८८८ ॥

गाफिल मूढ़ गँवार, समय गँमावै सहज में ।
जोगी चतुर, जु'झार, चूकै समय न चकरिया ॥ ८८९ ॥

बखत आवसी बीत जासी बात न जगत सू ।
गासी दुनिया गीत चोखा बु रा चकरिया ॥ ८९ ॥

झूठा घड़-घड़ चाळ, गाल फुला मत गरब कर ।
होसी बुरो हवाळ पिजमुस हिग चकरिया ॥ ८९१ ॥

सब दिन नहीं समान ऊग्यो आथमसी अवस ।
गी या गति धाम, जाणो सीधा चकरिया ॥ ८९२ ॥

जिण दुःख देखे नांहु पर दुख में पूरा दुखी ।
मनख इसा जग मांह चहुँदिस थोड़ा चकरिया ॥ ८९३ ॥

---

(८८७) धरया रै — रखा रहेगा । चोळो छूटां — शरीर के छूटने पर ।

(८८८) आसी = आयेंगे । करड़ाई — सख्ती ।

(८८९) गाफिल — असावधान बेखबर । सहज में — व्यर्थ में ।

(८९) बखत आवसी बीत — समय बीत जायगा । चोखा — अच्छा । बु रा — बुरा खराब ।

(८९१) घड़-घड़ चाळ — चाल रचकर । गरब — गर्व घमंड । हवाळ — हाल । हिग — पास ।

(८९२) ऊग्यो — उदय हुआ है । आथम सी — अस्त होगा । अवस — अवश्य । या गति — यह गति यह चाल ।

(८९३) देखे नांह — नहीं देखती । पर दुख — दूसरे के दुख से दुखी । मनख — मनुष्य । इसा — ऐसा । जग मांह — संसार में ।

मिनख रहै मुख मांय गुपत बात तब तक गिणो ।
जद मुख सूं कढ जाय भक भक होवै चकरिया ॥ ८७१ ॥

मोटा मिनखां मांह, बोलो बोल बिचार नै ।
नातर बोलो नांह, चुप हुय बैठो चकरिया ॥ ८७२ ॥

दीन दुखी दरवेश कड़वा आखर जो कहै ।
साचो रीस न सेस चित में कमहु चकरिया ॥ ८७३ ॥

दुख में म्हट दिलगीर सुख में झट हुवै सूरमा ।
आखिर इसा अधीर, चैन न पावै चकरिया ॥ ८७४ ॥

घर छूटै ना गाम प्यास भूख सहणी पड़ै ।
करवो मत दुय काम चोरी जारी चकरिया ॥ ८७५ ॥

करै करम कद नीच जग स्वामी देखे सजग ।
घट घट रै बीच चित सूं छिपै न चकरिया ॥ ८७६ ॥

सब पापिन सिर मौर, नमक हरामी कृतघनी ।
मालकरो धन-माल नमक हरामी गिटज्यै ॥ ८७७ ॥

---

(८७१) मिनख = मनुष्य । जद = जब । कढ जाय = निकल जाय ।
(८७२) मोटा मिनखां = बड़े आदमी । नातर = नहीं तो । चुप हुए बैठो = चुप होकर बैठो ।
(८७३) दरवेश = भिखारी । कड़वा आखर = कठोर शब्द । रीस = क्रोध गुस्सा । कमहु = कभी भी ।
(८७४) म्हट = फौरन । दिलगीर = दुखी । झट = फौरन जल्दी । इसा = ऐसा । चैन = आराम ।
(८७५) गाम = गांव । सहणी पड़ै = सहन करनी हो । मत = नहीं । दुय काम = दो काम ।
(८७६) करम = कर्म कार्य । कद = कोई । जग स्वामी = भगवान । घटरै बीच = हृदय में ।
(८७७) सिरमौर = सबसे प्रधान सबसे ऊंचा । कृतघनी = जो मनुष्य उपकार को नहीं मानता । गिटज्यै = हड़प ले हजम कर ले ।

म्हारी थारी मांहि, मर मिटिया किरोड़ां मिनख।
नर तउ छोड़ै नांहि चितरी ममता चकरिया ॥ ८७८ ॥

करड़ाई सू काम हर कोई दोरो हुवै।
काम हुवै बिन दाम चट नरमी सू चकरिया ॥ ८७९ ॥

हिया फूट जो होय सो नहिं समझै सहज में।
करै जतन लख कोय चेतै दोरो चकरिया ॥ ८८० ॥

भमी जाय भर भूख भू डी कमु सूझै नहीं।
यो जग मांहि मसूस चालै नित ही चकरिया ॥ ८८१ ॥

जांत पांत कुळ जोय मोद न मन में लावजे।
हुनर हाथ नहिं होय चिराा न मिलसी चकरिया ॥ ८८२ ॥

सम्म गुरु एकण माव पूछ ताछ ना परख है।
ज्यों दिग भूल न जाव चाहि सुल यो चकरिया ॥ ८८३ ॥

ठाना तीखा तीर, जिय मे लागै जोर रा।
परगट लखै न पीर, चित में साळै चकरिया ॥ ८८४ ॥

---

(८७८) म्हारी थारी—इधर उधर की बातें करना। किरोड़ा-करोड़ों। मिनख-आदमी। तउ—तब भी।

(८७९) करड़ाई सू—सख्ती से। दोरो—कठिन। बिन दाम=बिना दाम के बिना पैसे खर्च किये।

(८८०) हिया फूट—बे अकल मूर्ख। जतन—यत्न। चेते—समझना।

(८८१) भमी—पक्षी। भू डी—बुरी। कमु—कभी। यो—यह। मांहि—अन्दर।

(८८२) कुळ—खानदान। जोय—देखना। लावजे—लाना चाहिए। हाथ नहिं होय—हाथ में नहीं हो।

(८८३) एकण माव—एक ही भाव। परख—परीक्षा। दिग—पास।

(८८४) ठाना—मोटा व्यंग। जियमें—हृदय में। जोर रा—बड़े जोर का। परगट—प्रगट। लखै—दिखाई देना। पीर—पीड़ा।

'नमो' भणबै नांह 'दवो' भणबै रात दिन।
मिनख कमारै मांह चाहै जसबो चकरिया ॥ ८८५ ॥

धरमी वावै धूर, पर धन पर धरती परै।
घर घर गंडक धूर, चाटै हांडी चकरिया ॥ ८८६ ॥

मिली सुघर घर नार, तोहू पर घर नर तकै।
सठ कांहि काढै सार, चाट न छूटै चकरिया ॥ ८८७ ॥

सूस न पूछै भाव थोवम सीतां जगत में।
चार दिनां सग चाव चित में रहवै चकरिया ॥ ८८८ ॥

खोरो सू डरजाय मांवर डरै न महार सू।
समझ्य है कि बनाय चतुर ही जाणै चकरिया ॥ ८८९ ॥

जबर दसा जोधार खांतारो ही ना खिवै।
माणूणी री मार, चुपकै खावै चकरिया ॥ ८९० ॥

जग मांहि जूझार, सिर न झुकावै सीस दे।
भामारा सौ बार, चरण पलोटै चकरिया ॥ ८९१ ॥

---

(८८५) नमो — नमस्कार करना। भणबै = कहना। दवो — देना। मिनख — मनुष्य। कमारै मांह — जन्म लेकर। जस — यश।

(८८६) धरमी — धर्मात्मा। वावै धूर — धूल उड़ाते हैं, धूल फेंकते हैं। गंडक — कुत्ता।

(८८७) सुघर — सुन्दर। घर नार — स्त्री। तकै — देखता फिरै। सठ — मूर्ख। काढै सार — सार निकालना। चाट = आदत।

(८८८) न पूछै भाव = बात नहीं पूछता। चाव = इच्छा। चित में — हृदय में। रहवै — रहना।

(८८९) खोरो — रस्सा। डरजाय — भय खाता। मांवर — नहीं तो। बनाय — पाकर। जाणै — समझता है।

(८९) जबर — बहुत बड़ा मोटा। जोधार — योधा वीर।

(८९१) जग मांहि — संसार में। भामा रा — स्त्री का। चरण — पैर।

जिण रै घर री थोर, उण रो सब आदर करै ।
अदला घर री थोर, पिछवै एक न चकरिया ॥ २०० ॥

स्वारथ रा सरदार, बिन स्वारथ बोलै नहीं ।
इसड़ां रा इतबार, चतुर न करसी चकरिया ॥ २०१ ॥

रीझ्यां रिधक न देत खीझ्यां खुसै न खेसलो ।
राज्यां चांपर रेत, चिमठी भर नै चकरिया ॥ २०२ ॥

पराधीन दुख पूर, साचो सुख स्वाधीनता ।
मौज करै मजदूर, चिंता हाकीम चकरिया ॥ २०३ ॥

स्वाधीनी सम सुख सुण्यो न दूजो स्वप्न में ।
दासपणा में दुख चार कान्ही चकरिया ॥ २०४ ॥

ऊपर सूं आचार, मन मैला केइक मिनख ।
बगुला सम व्यवहार, चोखा वाजै चकरिया ॥ २०५ ॥

धोखा देत अनेक मिनख मिनख नै जगत में ।
ईश्वर रै ढिग एक चालै न धोखो चकरिया ॥ २०६ ॥

---

(२००) जिणरै—जिसके । घर—धन दौलत । उणरो=उसका । अदलाघर—गरीब आदमी ।

(२०१) इसड़ांरा—ऐसों का । इतबार—विश्वास । न करसी—नहीं करेंगे ।

(२०२) रीझ्यां=खुश होने पर । रिधक—धन-दौलत ।
खीझ्यां—नाराज होने पर । राजी—राजी । चांपर=उस पर ।

(२०३) दुख पूर—अधिक दुख । मौज—आनन्द ।

(२०४) सम—बराबर । सुण्यो न दूजो—दूसरा नहीं सुना गया । चार कान्ही—चारों ओर है ।

(२०५) मनमैला—मन के बुरे । । केइक=कितने ही । मिनख—आदमी ।
चोखा वाजै—अच्छे कहे जाते हैं ।

(२०६) ढिग—पास । धोखो—धोखा ।

फोकट में कर फूट कौरव पांडव कट मरया ।
खानदान गया खूट, थोथा थोथा चकरिया ॥ ९०७ ॥

राज गया कई टूट आपस में कर ईरपा ।
करम हाथ सूं छूट, चोपट हुयग्या चकरिया ॥ ९०८ ॥

पइसो जग में प्राण पइसो ही जग में प्रभु ।
पइसे रो सनमान चहुँ दिश हुवै चकरिया ॥ ९०९ ॥

पइसा सूं हुवै पूछ, पइसो गयां न पूछवै ।
वही मूर्खों वही मूंछ, चितवै कोई न चकरिया ॥ ९१० ॥

पूत बिना नर पूर, नर सूनो घरणी बिना ।
धन बिन जीवन धूर जल बिन तन जिम चकरिया ॥९११॥

धन मक रहै न धाम चित में कछु चिंता नहीं ।
जग म रहै जु नाम जाको जोही चकरिया ॥ ९१२ ॥

रहो धरम अनुसार, रखो भरोसो रामरो ।
प्रभु करसी भव पार, चिंता तजदे चकरिया ॥ ९१३ ॥

---

(९०७) फोकट में—व्यर्थ में फिजूल में । गया खूट—खत्म हो गया ।

(९०८) राज गया कई टूट—कई राज्य नष्ट हो गए । ईरपा—ईर्ष्या । चोपट हुए गया—समाप्त हो गए ।

(९०९) जग में प्रभु—संसार में मालिक है । चहुं दिश में=चारों ओर हर जगह ।

(९१०) हुवै पूछ—कदर होती है । मूंछ=मुँह । चितवै—देखना ।

(९११) पूत बिना बिना इज्जत के । धूर—व्यर्थ रही । घरणी स्त्री । धूर—धूल जल—पानी । जिम—जैसे ।

(९१२) धक—धीर । धाम—घर । जोयो—जप्पड़ ।

(९१३) धरम—धर्म । भरोसो—विश्वास । करसी—करेंगे । भवपार—संसार से पार तजदे—छोड़ दे ।

जिहि उतु ग चढ़ फिर पतन सो उतु ग नहीं कूप ।
जिह सुख में फिर दुख बसैं सो सुख ही दुख रूप ॥ ९१४ ॥
मीठैं बोल्यैं बहुत गुण जो कोई जांणै बोल ।
जिण दामांही बाहिरो माणस सीजै मोल ॥ ९१५ ॥
संगति भई तो क्या भया हिरदा भया कठोर ।
नव नेजा पांणी चढै तोऊ न भीजै कोर ॥ ९१६ ॥
कंचन तजबौ सहल है, भोर त्रिया को नेह ।
पर निंदा ने ईरषा तजबौ दुरलभ एह ॥ ९१७ ॥
ओट गहीजै ईसकी औरकी भया ओट ।
जिण ओटैं नर ऊब्बरे, लगै न जमकी चोट ॥ ९१८ ॥
कहै किसी के बसु नहीं जो अपणो मन सुद्ध ।
प्रगट होइसी आप ही ईह पांणी ईह दुध्ध ॥ ९१९ ॥
पंडित से झगड़ा भला भला न मूरख मेल ।
निबर देखा भी भला ताभा भला न तेल ॥ ९२० ॥

---

(९१४) उतु ग चढ़—ऊपर चढ़ना । दुख बसैं—दुख का निवास हो ।
(९१५) मीठैं बोल्यैं—मीठा बोलने से । जांणै—समझे । माणस—आदमी पुरुष ।
(९१६) क्या भया—क्या हुआ । हिरदा—हृदय । तोऊ—तो भी ।
(९१७) कंचन—सोना । तजबौ सहल है—त्यागना सरल है । नेह—प्रेम । पर निंदा—दूसरे की बुराई करना । एह=यह ।
(९१८) ओट=सहारा आसरा । गहीजै—लेनी चाहिए । ईसकी—परमात्मा की । जिण—जिसकी । जमकी चोट—यमकी मार ।
(९१९) कहै किसी कै—किसी के कहने से । अपणो—अपना । ईह—यह । दुध्ध=दूध ।
(९२) झगड़ा भला—लड़ाई अच्छी । मूरख—मूर्ख । मेल=प्रेम । ताभा भला न तेल—ता भेले घर भी तेल अच्छा नहीं ।

राय न कीजे कन्हवौ बाळ न कीजे मित्त ।
खिण रत्ता खिण सीयळा खिण वैरी खिण मित्त ॥ ९२१ ॥

साखी सठ दे सीखिए, पंडित गुण भर पूर ।
कायर साखी बकबकर, साहिब सीखे सूर ॥ ९२२ ॥

भेष लियां सूं भगत नंह है नंह गहणां हूर ।
पोथी सूं पंडित नहीं सस्तर सूं नंह सूर ॥ ९२३ ॥

ज्यूं कुकवि की जाभ में ब्रह्मसुता नंह बास ।
त्यूं कायररी तेग में नंह कालिका निवास ॥ ९२४ ॥

बादळ ज्यूं सुरधनुष बिण तिलक बिना द्विजपूत ।
बनो न सोभै मोड़ बिन घाव बिनां रजपूत ॥ ९२५ ॥

जस न हुवे धन जोड़ियां धन दीधां जस होय ।
बीठल द बीकम तणा जग में बिखरो जोय ॥ ९२६ ॥

कृपणां जस भावे कठै बिधि विमुखां नूं बेद ।
बांका भोजन नंह रुचे ज्यारे कफ ज्वर खेद ॥ ९२७ ॥

---

(९२१) बाळ — बच्चा लड़का । मित्त — मित्र । खिण — क्षण पल । रत्ता — रंज होना नाराज होना । सीयळा — ठंडा ।

(९२२) सठ — शठ मूर्ख । साहिब — हे स्वामी । सूर — शूरवीर ।

(९२३) गहणां — गहनों से जेवरों से । हूर — सुन्दर । भगत = भक्त । पोथी — पुस्तक । सस्तर सूं — शस्त्र से ।

(९२४) ब्रह्म सुता — सरस्वती । तेग में — तलवार में ।

(९२५) बादळ — मेघ । सुर धनुष — इंद्र धनुष (जो वर्षा के पहिले या पीछे दिखाई देता है)। द्विज पूत — ब्राह्मण का पुत्र । बनो — दूल्हा बींद । मोड़ = सेहरा मौर ।

(९२६) जस — शोभा । धन जोड़ियां — धन दौलत के इकट्ठा करने पर । दीधा — देना । बिखरो = बिखरी ।

(९२७) भावे — अच्छा लगता है । कठै = कहाँ । विधि — विधाता ईश्वर । विमुखांनूं — प्रतिकूलों को विरुद्ध रहने वालों को ।

जमरण जस भावे कठे गुरु मिसुखो मू ग्यान ।
असुरां दया न ऊपजै चंचळ चितां ध्यान ॥ १२८ ॥
बांका धीरज धरण सूं है नहिं कुंजर हाण ।
की घर घर मटका करै कूकर माणिक कमांण ॥ १२९ ॥
उर-नभ जितै न ऊगमे यो संतोष प्रदीत ।
नर तिसना किसना निसा मिटै इसे मंह मीत ॥ १३ ॥
ज्यूं ज्यूं लालच लार जम, सेवै दुरमत संग ।
बांका मत त्यूं त्यूं वधे असनां तणी तरंग ॥ १३१ ॥
लालच रसरै लाग माखी लपटाणी मधू ।
उडणो वच्छियो भाग विरारै मुसकल वीजणो ॥ १३२ ॥
हेक रती नहं हासिमो सोनो रावण साथ ।
सेजावण लोभी करै, माथ साथ असमाथ ॥ १३३ ॥
जिण दिन भो मन जाणसी सोनो धूड़ समान ।
उण दिन सूरज ऊगसी सोनारा सुलतान ॥ १३४ ॥

---

(१२८) ग्यान = ज्ञान । असुरां = राक्षसों को । ऊपजै = उत्पन्न होती है ।
(१२९) बांका = बांकीदास । धर सू = रखने से । कुंजर = हाथी । हाण = हानि । की करै = क्या कर लेता है । मटका = मटकने से । कूकर = कुत्ता । कमांण = कमाई ।
(१३) उर-नभ = हृदय रूपी आकाश । जितै = जब तक । ऊगमे = उदय होता है । यो = यह । प्रदीत = सूर्य । तिसना = तृष्णा । किसना = कृष्ण । निसा = रात्रि । इसे = इधर (हृदय में) तब तक ।
(१३१) लार = पुत्र तृष्णा । दुरमत = खोटी बुद्धि वाला । तणी = की ।
(१३२) हेक = एक । हासिमो = चला । माथ = धन द्रव्य । असमाथ = असमर्थता ।
(१३३) जिण = जिस । भो = यह । जाणसी = जानेगा । धूड़ = धूल मिट्टी । उण = उस । ऊगसी = उदय होगा । सोनारा = स्वर्ण । । सुलतान = सुलताई ।
(१३४) जिण = जिस । भो = यह । जाणसी = जानेगा । धूड़ = धूल मिट्टी । उण = उस । ऊगसी = उदय होगा । सोनारो = स्वर्ण का ।

ऊजळी लागै ससां, घात करण फिरतांह ।
ज्यूं मापळ बाज धी पख गजमोती जिरतांह ॥ ९४३ ॥
धवळ न भटके धुर बहै, कासू पांणी कीच ।
इणरी धनमी तारफी बैतरणी रे बीच ॥ ९४४ ॥
काळो धवळ कहाय नह धोळो धवळ कहाय ।
जो काळो धुर जूपणो सामा सबरा न जाय ॥ ९४५ ॥
दाता जग माता पिता दाता सामरथ देव ।
दाता सरबस दान दे उत्तर एक अदेह ॥ ९४६ ॥
दिन ऊगे नित देखणो दाता री दीदार ।
मागे भूल कलेस भय संक न लागे बार ॥ ९४७ ॥
जांब जमी ऊगो जठै गहरो छांह घरट्ट ।
पावे फळ मीठा पंथी बह जावे इण बट्ट ॥ ९४८ ॥
जस प्यारो पुरसां जिकां मांणी प्यारी नांह ।
मांणी फिर ठहर नहीं जस जुग जुग रह जांह ॥ ९४९ ॥

---

(९४३) लागे — शोभित होता है । ससां (शशों) — खरगोशों पर । फिरतांह — पीछे लौटकर । धी = का । पख = पाँख । जिरतांह = गिरते हुए ।
(९४४) भटकै — रुकता है । धुर — अगाड़ी आगे । बहै — चलता है । कासू — क्या पानी और क्या कीचड़ में ।
(९४५) काळो — काला बैल । धोळो — श्वेत वर्ण का बैल । जूपणो — जुते जाना । सामा — पूरे ।
(९४६) सामरथ—समर्थ । सरबस—सर्वस्व सब पदार्थ । उत्तर—उत्तर । अदेह नहीं देता है ।
(९४७) दिन ऊगे—सूर्योदय समय । नित—नित्य प्रतिदिन । दीदार—दर्शन । कलेस—दुःख व दुख । बार—देरी ।
(९४८) जठै—जहाँ । घरट्ट—बहुत सघन । पंथी—पथिक मुसाफिर । बह जावे—चलकर जाता है । बट्ट—मार्ग में ।
(९४९) जस—यश शोभा । मांणी—द्रव्य रुपया पैसा । जुग जुग—युगों तक ।

बार बधू ही हरण चित, नेह जणावै नैण ।
मू सिर लेवा ऊचरै, वेरी मीठा वैण ॥ ६४८ ॥
पाणी पद्मिणी पेख पग दिल मत हरख विसाल ।
पैलां पाइण पड़त पग इणरी माहिल चाल ॥ ६४९ ॥
सूको काडै भादवो सावण सूको जाय ।
पछै जे मागे झड़ी मींकै घाम लगाय ॥ ६५ ॥
जोड़ जोड़ कर दाम मूँजी धरै जमीन में ।
खाय न एक छिदाम जूण भुजग की भोगवी ॥ ६५१ ॥
मखी करी भगवान धरी सुगंध न हेम में ।
बिना गंध हैरान करै सकल संसार नै ॥ ६५२ ॥
कागज की चालै नहीं कभी नीर में नाव ।
बैठ्यां पीदै बैठसी कोनी होय बचाव ॥ ६५३ ॥
ओछे से कर प्रीत मंगळ की आशा करै ।
बाळू की चिण भीत सावै ऊपर खाट क्यों ? ॥ ६५४ ॥

---

(६४८) बार बधू—वेश्या । नेह—स्नेह । नैण—नेत्रों में । लेवा—लेने के लिए । ऊचरै = उच्चारण करते हैं बोलते हैं । वैण = वचन ।
(६४९) पेख = देखकर । पैलां—पहिले । पाइण—गिराने के लिए । इणरी—इसकी । माहिल—मही । चाल—गति ।
(६५) काडै—निकाल देना । पछै = बाद में । मींकै—छलका ।
(६५१) जोड़ जोड़ कर—इकट्ठा करना । मूँजी—कंजूस । धरै जमीन में = जमीन में रखता है । भुजग—सांप सर्प । भोगवी—भोगता है ।
(६५२) मखी करी = मक्खी की । धरी—रखी । हेम में—सोने में । संसार नै—संसार को ।
(६५३) चालै नहीं—नहीं चलती । बैठ्यां—बैठने पर । पीदै बैठसी—तले में रह जायगी । कोनी होय—नहीं होता ।
(६५४) ओछे से—नीच व्यक्ति से । मंगळ—शुभ कल्याण । चिण भीत—भीत बनाकर ।

हाथी को मण पेटियो कीड़ी कण भर खाय ।
सै नैं भोजन साँवरो नित उठ दे पहुँचाय ॥ १६५ ॥
सतकार छूटै नहीं जो दिल में जम ज्याय ।
पूँछ न सीधी स्वान की हो कर लाख उपाय ॥ १६६ ॥
काम करै तू झूठ का बोलै साचा बोल ।
भली दिखा कर बानगी खोटी जिनस न तोल ॥ १६७ ॥
सरिता वैर, विरोध शिशु, रोग काम की आग ।
बधै तो सूता भला जाग जाय दुर्भाग ॥ १६८ ॥
चलती कोड़ी जगत में साथी सो संसार ।
चलतो पुरखो कीमती नहीं तो खाक बेकार ॥ १६९ ॥
लो कुकम में जिन्दगी कहूँ—करी मैं भूल ।
खसम मरयाँ स्याणी हुई, तो स्याणप में धूल ॥ १७ ॥
ताती मोह लुहार की ठुकै हथोड़ा खाय ।
ठंडी बैठी सीतळा जगत पूजबा जाय ॥ १७१ ॥

---

(१६५) पेटियो—भोजन । कीड़ी—चींटी । सैनैं—सबको । साँवरो—भगवान; श्री कृष्ण ।
(१६६) जमज्याय—जो जम जाता है । कर लाख उपाय—लाखों उपाय करने पर भी ।
(१६७) साचा बोल—सत्य बोलना । भली दिखाकर = अच्छी दिखाकर । बानगी—नमूना । खोटी = खराब । जिनस—वस्तु, चीज ।
(१६८) बधै—बढ़ । सैंठो—सभी तमाम ।
(१६९ चलती को ही—चलने वाला का ही काम देने वाला का ही । साथी—मित्र । सो—तमाम ।
(१७) खो—नष्ट करना । खसम मरयाँ—पति के मरने के बाद । स्याणी हुई—सयानी बन गई । स्याणप में धूल—अब सीखे बन से क्या प्रयोजन ?
(१७१) ताती—गर्म । ठुकै = पीटा जाता है । पूजबाजाय—पूजने के लिए जाता है ।

मौत न करै मुलायजो राखै नहीं लिहाज।
बींकै दोयू एकसा रंक और नरराज ॥ १७२ ॥

फागण नर, बैसाख में खर कातिक में स्वान।
भुजग भाद्रपद मास में बूढ़ो होय जवान ॥ १७३ ॥

मोटीलो छोडै नहीं मांगी मति मर जाय।
होय राख जळ जेवड़ी मरोड़ किन्तु नहिं जाय ॥ १७४ ॥

पकड़्या पछै न छोड़सी मर्द मकोड़ो मोड़।
लाख जतन कोई करै चाहै करै करोड़ ॥ १७५ ॥

छाया चोखी वृक्ष की होय भला ही कैर।
भायां में वसबो भलो प्रेम होय या बैर ॥ १७६ ॥

पाणी तो बहतो भलो नदी होय कि नहर।
भोजन मा के हाथ को होय भलां ही जहर ॥ १७७ ॥

सारै जगत में भोळमा हुयां घणीं संतान।
पण चाही विरला करै खेती का नुकसान ॥ १७८ ॥

---

(१७२) मुलायजो — लिहाज। बींकै — उसके। दोयू — दोनों। एकसा — एक जैसा। नरराज — राजा।
(१७३) फागण नर — फाल्गुन में पुरुष। खर — गधा। भुजग — सांप नाग। बूढ़ो होय जवान — बूढ़ा भी जवान हो जाता है।
(१७४) मोटीलो — अकड़ने पैंठ करनेवाला। मोटी — अभिमान। जळ — जलना। जेवड़ी — रस्सी। मरोड़ — घमंड
(१७५) न छोड़सी — नहीं छोड़ेगा। मकोड़ो — कीड़ा। जतन — प्रयत्न।
(१७६) चोखी — अच्छी। वृक्ष की — वृक्ष की पेड़ की। भायां में — भाइयों में। वसबो — रहना। भलो — अच्छा।
(१७७) पाणी — पानी। बहतो भलो — बहता हुआ ही अच्छा। होय भलां ही जहर — चाहे जहर ही क्यों न हो।
(१७८) भोळमा — उलाहना। घणीं — बहुत। पण चाही — बिना चाहे।

भरड़ावै बादळ घरणूं बीनें थोथो थाम ।
गरजे मंद गंभीर जो बरसे बेपरवाण ॥ ९८७ ॥
थासी करणी आपकी के बेटो के बाप ।
न्यारा न्यारा भोगसी कर्म आपका आप ॥ ९८८ ॥
जे तू गेलै चालसी करसी चोखा काम ।
आठ पहर तेरे कनै हाजर रहसी राम ॥ ९८९ ॥
आंख मिलावै अमुज की मन की तेज मयूख ।
ज्यों दिनकर की किरण सैं आंधो होय उलूक ॥ ९९ ॥
दिन मानव को जे फिरै, तो दोमौडो मोल ।
अकबर की औलाद अब रही दिली में डोल ॥ ९९१ ॥
काट न गळो गरीब को अब थासी नहिं साथ ।
आंख खोलकर देख तू देखै त्रिभुवन नाथ ॥ ९९२ ॥
दुर्जन जे ऊंचो चढ़ै तो वे दुःख महान ।
चढ़ सिर पर मध्याह्न में ताप गिरावै भानु ॥ ९९३ ॥
धरै दोष पर का सुजन ले निज सिर पर दोष ।
लिखै पत्र की सोसले स्याही स्याहीसोख ॥ ९९४ ॥

---

(९८७) भरड़ावै चिल्लाता है । घरणूं—अधिक ज्यादा । बीनें—उसको । बाण—समझो ।
(९८८) करणी—कर्मों के अनुसार । के बेटो के बाप = क्या बेटा और क्या बाप । आपका आप—अपने स्वयं के ।
(९८९) गेलै—रास्ते में । चोखा काम—अच्छा काम । कनै—पास नजदीक ।
(९९) अमुज—मनुष्य । मयूख—किरण रश्मि प्रकाश ।
(९९१) मानव—मनुष्य । जे फिरै—जब पलटते हैं । डोल—घूमना ।
(९९२) गळो—गर्दन । थासी नहिं साथ—साथ नहीं जायगा ।
(९९३) जै—यदि । भानु—सूर्य सूरज ।
(९९४) परका—दूसरे का । निज सिर पर = अपने ऊपर । सोसले—सुखा लेता है ।

राटी को टूकड़ो टंग्यो देख पींजरे मांय।
फँसे लालची ऊनरो, मोत में मा ज्याय ॥ ९९५ ॥
उठै धुवाँ अभिमान को सिगड़ी हिय हो ज्याय।
मानस का मोती फटे वणरो की न उपाय ॥ ९९६ ॥
बड़े मेल ही ठीकरी पिता धर्मा को पूत।
बसी मा बसी डीकरी सई धर्मा का सूत ॥ ९९७ ॥
ऊँचै कुल का आदमी करै न नीचा काम।
घू घालें न बसंत में पड़े न करड़ी घाम ॥ ९९८ ॥
पल में मुँह मरणको करै पळ में खिले ज्यों फूल।
पाग पलटयों पुरुष के थिर सी घोला धूळ ॥ ९९९ ॥
दरिद्रता में मौज है प्रभु ! मन कर मति रंक।
बिना अकल को आदमी कुल को बड़ो कलंक ॥ १ ॥
साँवरिया खोटी हुवी सा दुनियाँ दे साथ।
रूस रामजी जाय तो कोई न बूझै बात ॥ १ ०१ ॥
मरद तो अस्यान बंको हुस्न बंकी गोरियाँ।
सुरहल तो दूधार बंकी तेज बंकी घोड़ियाँ ॥ १ २ ॥

---

(९९५) टंग्यो — टंगा हुआ है। माँय — भीतर। ऊनरो = चूहा।

(९९६) सिगड़ी = अँगेठी। हिय — हृदय। हो ज्याय — हो जाती है। की न — कुछ नहीं।

(९९७) बसी — वैसी। बसी — वैसी। डीकरी — लड़की।

(९९८) ऊँचै कुल को ऊँचे खानदान का। करड़ी घाम — तेज धूप।

(९९९) पल में — क्षण में। घी घोला धूळ — बहुत ही धूल।

(१) मौज है — आनन्द है मतिरंक — मूर्ख।

(१ ०१) रूस — नाराज होना। न बूझै बात — बात नहीं सुनता।

(१ २) अस्यान बंको — अस्यान का धनी। सुरहल — गाय। दूधार — अच्छा दूध देने वाली बहुत दूध देने वाली।

मूखा तिसिया थाकथा राखीजे नड़ाह ।
छछिया हाथ न आवसी, गोमादे घोड़ाह ॥ १००३ ॥
स्वान बड़े नहँ हो सके हरदम रहै हजूर ।
कहा बड़प्पन घट गयो जो गज बँधे दूर ॥ १० ४ ॥
तीखा तुरी न मांणिया मड़ सिर खग्ग न भग्ग ।
जनम अकारथ ही गयो गोरी गळे न लग्ग ॥ १ ५ ॥
ब्याई फ्री न पाँव के जाणे पर पीड़ नैं ।
ज्यूं बेस्या को जाम आछ न समझै सेखरा ॥ १० ६ ॥
दे गरीब नै दान फिरियावर जो कोई करै ।
वीं माणस रो मान गर्दभ जरम्या सेखरा ॥ १० ७ ॥
बाद बाद मे बाद बाद फसायो बादियाँ ।
करता फिरे फिसाद यह बादीला सेखरा ॥ १, ०८ ॥
परण्यादी नै छोड़ पर तिय सग भटक्यो फिर ।
पड़यो सिड़ैयो ठोड़ कोई न पूछे सेखरा ॥ १० ९ ॥
पर तिय पर धन देख चित नै मत चंचळ करै ।
उमिनख जमारो फेर, मिलणो मुसकल सेखरा ॥ १ १ ॥

(१ ३) मूख तिसिया—भूखा प्यासा । थाक्या—थके हुए । नैड़ाह—पास ।
छछिया—दूर निकल जाने पर ।
(१ ४) स्वान—कुत्ता । बड़े नहँ होसकै—बड़ा नहीं बन सकता । गज—हाथी । बंधे दूर—दूरी पर बंधा रहे ।
(१ ५) तीखा तुरी—तेज घोड़ा । मड—योद्धा । खग्ग—तलवार । भग्ग—तोड़ना मार करना । जनम—जन्म । अकारथ—व्यर्थ । गोरी—स्त्री ।
(१ ६) के जाणे—क्या जाने । पर पीड़नैं—दूसरे की पीड़ा को । ज्यूं =जैसे ।
(१ ७) फिरियावर—अहसान । वी—उस । गर्दभ—गधा ।
(१० ८) बाद—व्यर्थ का विवाद । फिसाद=झगड़ा ।
(१ ९) परण्योड़ी—पत्नी को । परतिय—दूसरे की स्त्री । ठोड़=स्थान ।
(१ १) पर धन—दूसरे का धन । मिनख—मनुष्य ।

जोबन पाकर टेस मन में मत ल्याई कदे ।
पड़े न काव्य केस सदा सीस पर सेसरा ॥ १ १९ ॥
सादो रमणो भेप मीठो सब स्यू बोलणो ।
काहू सें भी द्वेप रखणो नहीं रे सेसरा ॥ १०२ ॥
पूर्ण फलें पर हूत सेत भाम को लकड़ो ।
वो पत्थर की देत मीठो फळ दे सेसरा ॥ १०२१ ॥
निरधनियाँ ने बाधा कदे न देणी भूलस्यू ।
जिमी बाँस की फांस धंस माळ दे सेसरा ॥ १ २२ ॥
दुख गरीब को देख दया न ल्यायो चित्त में ।
धारयो माणस भेप सींग पूछ बिन सेसरा ॥ १ २३ ॥
कपड़ा पहरे सूम बींद बिकाऊ सो फिरे ।
रोहिड़े रो फूल क्यां जोगो नहीं सेसरा ॥ १ २४ ॥
कीट पुसके साथ राजा के मस्तक चढ़े ।
सज्जन को पा साथ पापी पूजे रे सेसरा ॥ १ २५ ॥
सरिता करे न पान बिरछ न फल खावे कदे ।
बेत न खावे धान पर हित निपजे सेसरा ॥ १ २६ ॥

(१ १९) टेस = घमंड । मतल्याई—मत लाना । कदे—कभी भी । काव्य—काला ।
(१ २) सादो — साधारण मामूली । सबस्यू —सबसे ।
(१०२१) परहेत—दूसरे की भलाई । लकड़ो—पेड़ । फळ — फल ।
(१ २२) निरधनियाँ—गरीब को । बाधा — दुख, कष्ट । भूल स्यू —भूलकर ।
(१ २३) धारयो—धारण किया । माणस—मनुष्य ।
(१ २४) सो फिरे—समान घूमे । क्यां जोगो नहीं—किसी भी काम का नहीं ।
(१ २५) कीट — कीड़ा । पा साथ = साथ पाकर । पापी पूजे—पापी लोग भी पूजे जाते हैं ।
(१ २६) सरिता नदी । पान — पीना । बिरछ — वृक्ष । खावे — खाना खाना ।

गणिका त्यागे मेह पूँजी पद कब्जै करे।
अतिथि छांडै मेह, भोजन करके दोसरा ॥ १०२७ ॥
भायस धन की पीर पायस हो जाएँ सदा।
प्रसव काल में पीर बांझ बंधावे दोसरा ॥ १०२८ ॥
ब मौके की बात झुटकी सी कड़वी लग।
कातिक की बरसात कटक सुहावे दोसरा ॥ १०२९ ॥
हित की साच्ची बात मूर्ख ने लागे लाबसी।
गर्दभ नै बरसात विष लागे ज्यूं दोसरा ॥ १०३० ॥
दुर्जन सज्जन पास रहकर भी साधु बणे।
जिमी गौ को छुगास दीस पड़ै रे दोसरा ॥ १०३१ ॥
इज्जत सबकै एक है गरीब के धनपति।
धन का हरणी दोस, करे न करणी दोसरा ॥ १०३२ ॥
धन जोबन को जोश पाणी मांलो बुदबुदो।
पीछे पासी होश कभी सम्हलग्या दोसरा ॥ १०३३ ॥
रहै न एक समान दिन काहु का एकसा।
ज्यूं अर्जुन की म्यान भीला लोई दोसरा ॥ १०३४ ॥

(१०२७) गणिका = वेश्या। त्यागे है = प्रेम छोड़ देता है। पद = अब। मेह = घर। भोजन कर कै = भोजन करने के बाद।
(१०२८) पीर = पीड़ा। जाएँ = समझना है। पीर = दर्द।
(१०२९) बे मौके की = बिना अवसर की। सुहावै = सुहावनी है।
(१०३०) हित की = भलाई की। मूर्ख = मूर्ख को। गर्दभ = गधा। ज्यूं = जैसे।
(१०३१) दुर्जन = दुष्ट। बणे = बनता है। जिमी = जैसे। गौ = गाय। छुगास = घास का [illegible]।
(१०३२) सबके एक = सबके एक जैसी है। है = [illegible]। हरणी = हरनी।
(१०३३) जोश = जोर [illegible]। पाणी [illegible] = पानी के भीतर का। पासी = [illegible]। सम्हलग्या = [illegible]।
(१०३४) काहु का = किसी का। एकसा = एक जैसा। म्यान = [illegible]। लोई = [illegible]।

धन पाकर अभिमान मन में मत ल्यायी कदे।
लजवंती का पान ज्यूं मुरझासी सेवरा ॥ १०३५ ॥
जां। कै पास करोड़ सामी हाथां जायसी।
गयो सिकंदर छोड़ राजपाट सब सेवरा ॥ १०३६ ॥
या चित में मत धार सदा सरीसो रैहसी।
ज्यूं दरिये में ज्वार, भाटो आवै सेवरा ॥ १०३७ ॥
समै बड़ो बलवान नर को जग में के बड़ो।
घोडा बंधता ठाण वां घर धाम न सेवरा ॥ १०३८ ॥

कंद-मूळ फळ खाय वन में रहणो एकलो।
धन बिन रहणो नांय भायां मांहि सेवरा ॥ १०३९ ॥
मां शारद को हंस नीर छीर अळगा करै।
मकल को नहीं भेद उस्सू मांहि सेवरा ॥ १०४० ॥
लंका-पति के लार, नहीं धन का सकड़ा गया।
और करण के लार टोटो ग्यो नै सेवरा ॥ १०४१ ॥
मोल समय को जाण छिण भर भी खोणों नहीं।
समझ समय ने प्राण सत संगत ज्यूं सेवरा ॥ १०४२ ॥

(१०३५) मतल्यायी — मत लाना। कदे — कभी। मुरझासी — मुरझा जावेगे।
(१०३६) जांकै — जिसके। जायसी — जावेगा।
(१०३७) धार — धारण करो विचारो। सरीसो — एक जैसी। ज्यूं — जैसे।
दरिये में — समुद्र में।
(१०३८) समै = समय। के बड़ो — क्या बड़ा। ठाण — जगह, ठिकाना जानवरों के बांध रखने का स्थान विशेष। वां घर — उन घर में।
(१०३९) फळ — फल। रहणो = रहना। एकलो — अकेला। नांय — नहीं।
भायां मांहि — भाईयों में।
(१०४०) नीर-छीर — पानी और दूध। अळगो — दूर।
(१०४१) लार — पीछे। सकड़ा — साका। टोटो — घाटा। नै — नहीं।
(१०४२) मोल — मूल्य। जाण — समझना। छिण भर = क्षण भर। ज्यूं — है।

मा पर्वत को भार साठ समंदर को नही।
निवक भार अपार, धरती अमर सेवरा ॥ १ ४३ ॥
जाती को अपमान सुण नर के राजी हुवे।
वें नर पशु समान जग माँहिरे सेवरा ॥ १ ४४ ॥
पीसा मा अरु बाप पीसा ही साथी सगा।
पीसे बिनाँ संताप कलजुग में रह सेवरा ॥ १०४५ ॥
सेवा धर्म अपार, सेवा सें सज्जन बणें।
सेवा ही है सार कर निस्वार्थ सेवरा ॥ १०४६ ॥
आलस छोड़ हमेश उद्यम नित करते रवे।
दुख को रहै न लेश वी माणस के सेवरा ॥ १०४७ ॥
कामी के नही लाज लोभी के आपत नहीं।
नहीं मृत्यु के पास सीग न सठ के सेवरा ॥ १०४८ ॥
मुँहू पर मीठी बात पीछे से निंदा करे।
मीत नही वें भ्रात निश्चय निंदक सेवरा ॥ १०४९ ॥
भी हजुर का वेण मीठा पण औगण करे।
ज्यूं छिनाल का नेण मोह कर मारें सेवरा ॥ १ ५० ॥

(१ ४३) पर्वत – पहाड़। निवक – निंदा करने वाला। अपार – बहुत ही अधिक।

(१ ४४) सुण करके – सुन करके। वें – वह।

(१ ४५) पीसा – पैसा। अरु – और। संताप – दुख दर्द।

(१ ४६) अपार = बहुत अधिक। बणें = बनते हैं। सार – तत्व।

(१ ४७) आलस – आलस्य। वी – वह। माणस – आदमी मनुष्य।

(१०४८) लाज – इज्जत। पत – इज्जत। सठ – मूर्ख।

(१ ४९) निंदा – निंदा। मीत नही – मित्र नहीं।

(१ ५) वेण = वचन। ज्यूं – जैसे। छिनाल – बुरा स्त्री। मोह कर मारें – प्रेम में फंसाकर मारती है।

भजन भाव को स्वाद मूरख नर जाणैं नहीं।
जिमि मृदंग को नाद भैंस न समझै सेवरा ॥ १०५१॥
मात पिता नैं छोड़ मोडां की सेवा करै।
कल्पतरु की होड कीकर करै के सेवरा ॥ १५२॥
किरपण भोज न लेय पुन भी कौड़ी नहीं करै।
खाय न खावण देय सब्यो मड़वो सेत मैं॥ १०५३॥
सुरा घूस परनार, जूवो चोरी मुखबरी।
ये सब काळाकार, जज जो सुख चहु सेवरा॥ १०५४॥
घट घण भरियो चाव बात मुखां मीठी वदै।
हित कर पकड्यो हाथ निमसी क्यूं कर नाथिया॥१ ५५॥
मूसौ बसै मंजार हित कर बैठा ठौड़ हिक।
सौहो जाणैं संसार, नेह बणे नहिं नाथिया॥ १ ५६॥
बलवंत घणोज चाव सरमिंदौ ऊभौ सुणैं।
कुवचन काढ़ै काग निरभै पंख सु नाथिया॥ १ ५७॥

(१ ५१) जाणैं नहीं — समझते नहीं। जिमि — जैसे। नाद — आवाज।

(१ ५२) मोडां की सेवा करै — साधुओं की सेवा करता है। होड — बराबरी तुलना बराबरी। कीकर — किस प्रकार।

(१ ५३) किरपण — कंजूस। भोज न लेय — भोज नहीं लेता। पुन — पुण्य। खाय न खावण देय = न खाता है और न खाने ही देता है। सब्यो — सड़ा है।

(१ ५४) सुरा — शराब। पर नार — दूसरे की पत्नी। जो सुख चहु — यदि सुख चाहते हो तो।

(१ ५५) घट — हृदय। घण = बहुत। वदै — कहे। हितकर — प्रेम के साथ। निमसी — चलेगी। क्यूं कर — किस प्रकार।

(१ ५६) मूसौ — चूहा। मंजार — बिल्ली। बैठा ठौड़ हिक — एक ही स्थान पर बैठे एक ही साथ बैठे हैं। सौहो — सभी। नेह बणे नहीं — प्रेम नहीं निभ सकता।

(१ ५७) बलवंत — बलवान ताकतवर। घणोज — बहुत ज्यादा। ऊभौ — खड़ा हुआ। काढ़ै काग — कौआ कहता है।

मही वधारै मांन तौ कीजै ऊंची संगता।
नित प्रति घटै निदान नीच संगत सूं नाथिया ॥ १ ४८ ॥

कूकर टूकर काज मटकै पण पेट न भरै।
राटव निस गमराज महनत खावै नाथिया ॥ १०४९ ॥

हाथी चढ़ियौ हेक हिक मागळ पाळौ हल।
गुणवंत करौ न मेक निरखौ करणी नाथिया ॥ १०६ ॥

बिहू ऊभौ दातार, याव करै सारी ईला।
सू मारो संसार, माम न सेवै नाथिया ॥ १०५१ ॥

हंसा चुगै हमेस घण मोला मोती घणा।
पावै कागा पेस तिलै निबोळी नाथिया ॥ १ ६२ ॥

पारस मतलब होय पगपळिया चाटै पछौ।
कारज सरियौ कोय मैंण न बोवै नाथिया ॥ १ ५३ ॥

दैठा हेकण डाग एक ही रंग दीसै ऊभै।
कोइल हंदी काग न करै समवड़ नाथिया ॥ १ ५४ ॥

मंडक बुट, गुलाम पुचकारयां ऊभा पड़ै।
कूल्पाई मावै काम नरमी मली न नाथिया ॥ १०६५ ॥

(१ ४८) मही — पृथ्वी। वधारै — बढ़ाना हो।

(१ ४९) कूकर — कुत्ता। टूकर काज — रोटियों के टुकड़ों के लिए। पण = लेकिन। महनत — परिश्रम।

(१ ५) हाथी चढ़ियौ — हाथी पर चढ़ा। हेक — एक। हिक — एक। मागळ — मार्ग। पाळौ — पैदल। हलै = चलता है।

(१ ५१) बिहू = बिन। ईला — पृथ्वी। सू मारो — कंजूसों को।

(१ ५२) घण मोला — बहुमूल्य कीमती। घणा — बहुत। निबोळी — नीम का फल।

(१ ५३) मतलब होय — मतलब होने पर। कारज सरियां = काम हो जाने पर। मैंण न बोवै — मौन नहीं मिलाता।

(१०५४) हेकण — एक ही। ऊभै = दोनों। समवड़ — बराबरी।

(१ ५५) मंडक — कुत्ता। कूल्पाई — पीठ पर।

पैंठो जाय पताळ, समवत्त लंब गिरसिर चढी ।
मावी सिखिमी माळ मिट प्रति पावै माथिया ॥ १०६६ ॥
जीवा सूं जग मांह मरण भलो मोटा तणा ।
जिव हुवै घर मैं नांह माम सवायें माथिया ॥ १०६७ ॥
विकथां लगे न वार बोलै जिणरा धू बला ।
मण बोल्यां री ज्वार, मिरखै कोई न माथिया ॥ १०६८ ॥
धरणो पग जग धार सीस अनम चसणी सहस ।
प्रेम तणौं मरणपार नायक पैंडो माथिया ॥ १०६९ ॥
बेल्ही मुख सूं वात किणही सूं कहिजै नहीं ।
सुणै न कांम सुहात निज भ्रम जावै माथिया ॥ १०७० ॥
मारो किस्या बिध माय हीण माग बिणरी हुवै ।
मांडे मंक बिध माप नव निध मोगी माथिया ॥ १०७१ ॥
कठै न लाभै कोई भली ठौड़ बिन नर भला ।
हंस समंदां होय नाडा बुग हुवै माथिया ॥ १०७२ ॥

(१०६६) पैठो = पैठो । समवत्त — समुद्र । गिरसिर — पहाड़ की चोटी । मावी सिखियो — विधाता का लिखा । माळ — ललाट ।

(१०६७) जीवासूं — जीवित रहने से । मरण भलो — मरना ही श्रेष्ठ है । जिव — धन-दौलत निधि । नांह — नहीं ।

(१०६८) लगे न वार — देर नहीं लगती । जिणरा — जिसका । मण बोल्यांरी — बिना बोलने वाले की ।

(१०६९) धरणो — रखना । जग धार — तलवार की धार । मरणपार — मरने से अत्यन्त ज्यादा । पैंडो — रास्ता ।

(१०७०) किणही सूं — किसी से । निज भ्रम जावै — अपना भ्रम चला जाता है ।

(१०७१) मारो किस्या बिध — किस प्रकार मारे । माप — गर्व अथवा होना । हीण — बुरा खराब । मांडे — लिखना ।

(१०७२) कठै न — कहीं भी । लाभै — मिलना । ठौड़ = स्थान । नाडा — पोखर, छोटा तालाब ।

सभा न बीच सुहात निगुणा गुण ज्यां में नहीं ।
दुबै गुण ज्यांरै हाथ नरियंद अरचे नामिया ॥ १०७३ ॥
मन नहिं डिगै मराळ, कैताही लोभण करौ ।
मुक्ता चुगै अमाल न चुगै कांकर नामिया ॥ १०७४ ॥
काळो निपट कुरूप कसतूरी मौहोंमी बिकै ।
साकर निपट सरूप तुलै न टांका नामिया ॥ १०७५ ॥
महि पर मगन मयोर अळ्गा ही रहिया अबस ।
बावै घणी विकार, भडा रास्यां नामिया ॥ १०७६ ॥
समपण कीजै जाण मण जाण्यां कीजै नहिं ।
पांणी पीजै छाण साख सुणी बग नामिया ॥ १०७७ ॥
सब बदनामी सीस धन धन खोवै प्रसंग तिण ।
बुरो स बिस्वावीस नार पराई नामिया ॥ १०७८ ॥
बैरो बेबन, ब्यास छोटा तोही खोटा खता ।
पांसू कर कर प्याळ, निडर न रहजै नामिया ॥ १०७९ ॥

१०७३) सुहात—अच्छा लगना । निगुणो—बिना गुणों वाला मूर्ख । ज्यांरै—जिनके । नरियंद—राजा लोग । अरचै—अर्चना करना पूजा आदि करना ।

१०७४) नहिं डिगै—नहीं डिगना विचलित नहीं होना । मराळ—हंस । कैता हो—कितना ही । लोभण करौ—लुभा पाना । कांकर—पत्थर ।

१०७५) काळो निपट कुरूप—काली और बदसूरत । मौहोंमी बिकै—बड़ी मेहगी बिकती है । साकर—शक्कर । सरूप—सुन्दर ।

१०७६) महि—धरा । पर—और । मगन—मग्न । अळ्गाही—दूर ही । बावै घणी—बहुत बढ़ जाता है । भडा—बात ।

१०७७) समपण—समर्पण । जाण—समझकर । मण जाण्यां—बिना समझे ।

१०७८) खोवै—नष्ट होना । प्रसंग तिण—उसके सम्पर्क से उसके साथ रहने से । नार पराई—पराई स्त्री ।

१०७९) बेबन—रोग । ब्याळ—सांप । प्याळ—मेहरबानी करना ।

जूवारी संग जाय बात न कीजै बैठकर ।
सता अपारा एक जाय नळ नृप गति क्यों नापिया ॥ १०८० ॥

बेटी कुण कुण बाप कुण किण री जग मैं कहो ।
मिलियो आप मिलाप नाव नदी जिम नापिया ॥ १०८१ ॥

करै न आदर कोय धुमकारे आगा धरै ।
क्यां मिनखां री जोय निकज जमारो नापिया ॥ १०८२ ॥

रावा गिणै न राव बाळक जिणै न बूझणा ।
इण मैं मोठ अन्याव निपट निमाणी नापिया ॥ १०८३ ॥

आपै कुळ की नारि सासहि सुख काढै संभळ ।
सकती वयण विकार, निकुळी सबै न नापिया ॥ १०८४ ॥

करे मेवा का नेह, अमली नित आवै अमल ।
मन प्यारै मानेह नीको सोई नापिया ॥ १०८५ ॥

प्रीत बिना पकवान खारा ही लागै खतम ।
मीठो लपटी मांन नेह सू लागै नापिया ॥ १०८६ ॥

सिलिया पंक सिलाट त्यां मधि घटै न हेक तिल ।
घटी अनेका घाट गाहि बधै को नापिया ॥ १०८७ ॥

(१०८०) सता — सोता । नळ नृप — नलराजा । क्यों — कैसे ।
(१०८१) कुण — कौन । किण री — किसका । जिम = जैसे ।
(१०८२) क्यां — उन । मिनखारी — मनुष्यों का । निकज — व्यर्थ । जमारो — जीवन ।
(१०८३) जिणै — समझना ख्याल करना । बूझणा — बूझ । इण मैं — पृथ्वी में ।
(१०८४) काढै — निकालना । संभळ — संभाल कर ।
(१०८५) मेवा — अफीम । अमली — अफीमची । मन प्यारै मानेह — जिस मन भावता हो । नीको = भला अच्छा । सोई — वही ।
(१०८६) प्रीत बिन — बिना प्रेम के । लपटी मांन — मान से लपटी हुई ।
(१०८७) त्यां मधि — उनमें । हेक तिल — एक तिल ।

पैहुणा हिक रंगा, कहुणा नह् कूड़ा कथन ।
चित उजळ चंगाह् भला न कोई भैरिया ॥ १०८८ ॥
तज जग झूठी आस आस राख रामव तणी ।
प्रभु मेटे भवपास भजन कियाँ सूं भेरिया ॥ १०८९ ॥
देणी सीखो दान नाँ केणी सीखो म को ।
मिनख जनम सुखमांन भाखें वेद सू भैरिया ॥ १०९० ॥
जग भो झूठो जाण, सुख इण रो झूठो समझ ।
है दाय बातों हाण मोकळ पक्का भैरिया ॥ १०९१ ॥
हाथो मैं मण हेक कीडी न मिठ हेक कण ।
विधना देत विसेस भूख प्रमांणी भैरिया ॥ १०९२ ॥
धणी करै धणीयाप सेवक है समरथ सदा ।
पंडव हर परताप भारथ जीता भैरिया ॥ १०९३ ॥
मान सरोवर मांय बुग मुराळ दोनूं बसै ।
सब अपनोईज साम भाग प्रमाणी भैरिया ॥ १०९४ ॥

(१०८८) पैहुणा — पहुना । हिकरंगा — एक समान । नह — नहीं । कूड़ा — झूठा । उजळ — उज्ज्वल । चंगाह् — अच्छा ।

(१०८९) तज — छोड़ना । रामव तणी — भगवान की । भवपास — सांसारिक बंधन । सूं = सभी तमाम ।

(१०९०) नाँ केणी — इन्कार करना । मिनखजनम — मनुष्य जन्म । भाखें = कहते हैं ।

(१०९१) जग भो — यह संसार । इणरो = इसका । हाण — हानि । मोकळ अधिक । पक्को — पक्का ।

(१०९२) मणहेक — एक मन । कीडी नै = चींटी को । हेक कण = एक दाना । विधना — विधाता । भूख प्रमांणी — भूख के प्रमाण से ।

(१०९३) समरथ — समर्थ । पंडव — पांडव । हर परताप — श्री कृष्ण के प्रताप से । भारथ जीता = महा भारत युद्ध को जीता ।

(१०९४) मान सरोवर मांय — मान सरोवर में । बुग — बक । मराळ — हंस । साम — भोजन । अपनोईज — अपना ही । भाग प्रमाणी — भाग्य के अनुसार ।

मानव मेली मास परख तराजू पेखणी ।
हुल्को ऊ भी हाल भारी निमखी भैरिया ॥ १०९५ ॥
नुगरा मानव नीच सुगरा रै मन संकवै ।
नुगरां रै मन बीच मावै हुंस न भैरिया ॥ १०९६ ॥
परतक मेळो देख नित जगमैं नितरा मयै ।
मूठ पगर होय हाथी हर सिमरण करी ॥ १ ९७ ॥
तंबोळ्यो चित पांन वार वार जोवै सदा ।
ज्यूं चरणां चित धांम हाथी हर सिमरण करी ॥ १०९८ ॥
मित्र ही पनगुण मित्र के नेह नहीं पावंत ।
कूमा केरी छांह जिम हीयड़ा मैं रावंत ॥ ११०० ॥
सज्जन ऐसा कीजिये फेराया न फिरंत ।
कूमा केरी छांह जिम एकण ठांय रहंत ॥ ११०१ ॥
मोहन अपने मीत की बात बात मैं बात ।
पंचाली के चीर ज्यूं कबहुं न बीसत गात ॥ ११०२ ॥
मच्छी रै जळ चाय जळ बिन तड़फै जीवड़ो ।
ज्यूं चरणा चितलाय हाथी हर सिमरण करी ॥ ११ ३ ॥

(१ ९५) पैली — तराजू का पलड़ा । परखत — परीक्षा होना ।
(१ ९६) नुगरा—निगुरा । सुगरा—गुणवान् । संकवै—संकुचित होना ।
(१ ९७) परतक—प्रत्यक्ष । मेळो—मिलाप । नितरा — हमेशा ।
(१ ९८) तंबोळी—पान लगाने वाला । जोवै—देखना । चित धांम—चित लगाओ ।
(१ ९९) मांन—पूर्ण । मावै — जिसके ।
(११ ०) नहीं पावंत — नहीं देखता । कूमा केरी—कूम्भी की । जिम — जैसे । हीयड़ा मैं—हृदय में । रावंत — रखता है ।
(११ १) एकण ठांम — एक ही स्थान पर । रहंत रहती है ।
(११ २) पंचाली—द्रोपदी । कबहुं — कभी भी । गात — शरीर ।
(११ ३) जळ चाय — जल की इच्छा । जीवड़ो—प्राण जीव ।

राग सुणी जब कान मिरगा सब रस छाड़ दे ।
ज्यूं चरणां चित मान हाथी हर सिमरण करी ॥ ११०४ ॥
चन्दण लपटे ब्याल जिम चरणां लपट्या रह्यो ।
सिर पर घूमै काळ, हाथी हर सिमरण करी ॥ ११०५ ॥
माता चित जो बाळ खिण नहिं बिसरै जीव सूं ।
पग पग ऊभो काळ हाथी हर सिमरण करी ॥ ११ ६ ॥
काजी पढ़ कुरान रात दिवस बैठो थको ।
ज्यूं चरणा चितमान हाथी हर सिमरण करी ॥ ११ ७ ॥
पणिहारी री प्रीत गागर सूं लागी रहै ।
वैसे मन की रीत हाथी हर सिमरण करी ॥ ११ ८ ॥
नटणी चढ़ै सु बांस मन वाको रै वरत में ।
जिम चित सास उसास हाथी हर सिमरण करी ॥ ११ ९ ॥
गनका सिरखी नार हरनूं हिरदै धारियौ ।
तिणनूं दीनी तार हाथी हर सिमरण करी ॥ १११ ।
ऐसी प्रभु परताप चरणां रज ऐल्या तिरी ।
मिटियो तुरत सराप हाथी हर सिमरण करी ॥ ११११ ॥

(११ ४) जब — जब । मिरगा — मृग हरिण । छाड़दै — छोड़ देते हैं ।
(११ ५) ब्याल—सांप । जिम — उस तरह उसी प्रकार । घूमै काळ — काल घूम रहा है मृत्यु घूम रही है ।
(११ ६) बाळ — बच्चा, बालक । खिण — क्षण । बिसरै जीवसूं — हृदय से नहीं बिसारती हृदय से नहीं भूलती । ऊभो = खड़ा है ।
(११ ७) बैठो थको—बैठ कर ।
(११०८) प्रीत = प्रीत प्रेम ।
(११ ९) वाको = उसका । रै — रहता है । जिम = जैसे ।
(१११) गनका — वेश्या । सिरखी नारी — जैसी स्त्री । हरनूं —हरिको । तिणनूं —उसको । दीनी तार—तार दी उबार दी ।
(११११) ऐसी—इस प्रकार का । चरणां रज—चरणों की रज । तुरत—तुरन्त ।

हर मोटा महराज ध्रूजी नित सुमरण कियौ ।
अटल ज पायौ राज हाथी हर सिमरण करौ ॥ १११२ ॥
सुपनैं ज्यूं आ बात जनम लियौ इण जगत में ।
पट हुसी परभात हाथी हर सिमरण करौ ॥ १११३ ॥
धीखी जतनां जोय राखै तो रावत रहै ।
काया रहै न कोय हाथी हर सिमरण करौ ॥ १११४ ॥
जग के सब ही जनन में विद्या मम सिर मौर ।
यह तो व्यय कीमैं बढ़ घटत जात धन और ॥ १११५ ॥
विनय वैरी नै बस करै, विनय सौ बधै मान ।
विनय कर्यो कामण करु विनय बड़ो मारग ॥ १११६ ॥
बचन मास अमोल है जो कुछ बोले बोल ।
पहिले हृदय विचार के पीछे बाहिर खोल ॥ १११७ ॥
दीपक मानव जोत जाणौ नित इण जीवरी ।
इक भबकै बुझ्यहोत हाथी हर सिमरण करौ ॥ १११८ ॥
लघुताई चित लाय करडाई आघी करौ ।
बहुरी जनम नहि पाय हाथी हर सिमरण करौ ॥ १११९ ॥

(१११२ ध्रूजी—ध्रुव जी । अटळ—चिरस्थाई ।
(१११३) आ बात—यह बात । इण—यह इस । पटहुसी—पौरन हो जायगा ।
(१११४) जतना—प्रयत्न से । काया—शरीर । रहै न कोय—नहीं रहता नहीं ठहरता ।
(१११५) जग के—संसार के । सिरमौर—सबसे ऊपर । व्यय की मैं—खर्च करने पर ।
(१११६) वैरी नैं—वैरी को । विनय सौ—विनय से । बधै मान—मान बढ़ता है ।
(१११७) मोल—मूल्य । पीछै बाहिर खोल—फिर बाहिर निकालो ।
(१११८) जोत—ज्योति प्रकाश । जाणौ—समझो । इक—एक । भबकै—चमकती है । बुझ होत—बुझ जाता ।
(१११९) लघुताई—नम्रता । करडाई—सख्ती । आघी करौ—दूर रखो ।

वृथा वण्यो संसार, साचो कर बैठो कियो ।
प्रभु उतारै पार, हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२ ॥

छिन छिन घटै जु आय चेत सकै तो चेत लै ।
इणरो कोई उपाय हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२१ ॥

इसो विरद छै आप न्यात पांत पूछै नहीं ।
सायी आश्रय आप हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२२ ॥

आया मळ में पूर आया नै आदर नहीं ।
मिटटी होगई धूर हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२३ ॥

मोटो रतनां माल मारयां मरसा पैरता ।
कंठ पकड़िया काळ हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२४ ॥

रगड़ा करता राम जबराई रा जोर सूं ।
जंगम बसिया जाय हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२५ ॥

रुपया रुणो जु कोट वीसरतां वेळा नहीं ।
पपट काळ री चोट हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२६ ॥

घड़ो टूटै वार घट फूटै भरियो थको ।
इतरी मरतां वार हाथी हर सिमरण करो ॥ ११२७ ॥

---

(११२) वृथा — व्यर्थ में । साचोकर — सत्य समझकर । बैठोकियो — मजबूती से पकड़ना ।
(११२१) आय — आयु उम्र । इणरो — इसका । कोई — नहीं ।
(११२२) इसो—ऐसा ।
(११२३) मळ में पूर—गन्दगी में भरा हुआ । धूर—धूल मिट्टी ।
(११२४) मारयां मरसा — मार के कारण दबे जाना । काळ—मृत्यु यमराज ।
(११२५) रगड़ा — झगड़ा । जबराई रा जोर सू = ताकत के बल पर ।
(११२६) कोट — किला । वीसरतां — बिसरते हुए । वेळा — समय ।
(११२७) घट — घड़ा । भरियो थको — भरा हुआ । इतरा — इतनी । मरती वार = मरते हुए । [समय लगेगा]

भू मट्टी फिर काम नर मट्टी नहिं कामरी।
वेत काठ में दाम ह्यापी हर सिमरण करी ॥ ११२८ ॥
वचन वचन के आन्तरे वचन के हाथ न पाव।
वहीं वचन है औपधि वही वचन है घाव ॥ ११२९ ॥

ज्ञानी से ज्ञानी मिलें करे ज्ञान की बात।
मूरख से मूरख मिले दो घूसा दो लात ॥ ११३० ॥
वय से बुद्धि आकरी जो उपजे तत्काल।
वानर सिंह विडारियो, एकसर्इं सियाल ॥ ११३१ ॥

नमन नमन में भेद है बहुत नमे नादान।
दगा बाज दूना नमैं चीता चोर, कमान ॥ ११३२ ॥
जितने तारे गगन में इतने शत्रु होय।
कृपा हाथ किरतार की बाल न बांको होय ॥ ११३३ ॥

नाम रहंदा ठाकरां नाणां नहीं रहंत।
कीर्ति केरा कोटड़ा पाड्या नहीं पड़ंत ॥ ११३४ ॥
तन से सेवा कीजिये मन से भले विचार।
धन से इस संसार में कीजे पर उपकार ॥ ११३५ ॥

(११२८) भू – पृथ्वी धरती। मट्टी – मिट्टी। नर मट्टी = नर की मिट्टी।

(११२९) वचन–बोली। आन्तरे – भेद।

(११३) करै ज्ञान की बात – ज्ञान की चर्चा करना।

(११३१) वय से – ताकत से भी। आकरी – तेज। एकसर्इं – अकेली।

(११३२) नमन = झुकना। भेद है = फर्क है।

(११३३) किरतार की – भगवान की।

(११३४) नाणां – पैसा। कीर्ति केरा कोटड़ा – कीर्ति के गढ़। पाड्या नहीं पड़ंत – गिराने पर भी नहीं गिरते।

(११३५) तन से – शरीर से। पर उपकार – दूसरे की भलाई।

पात्र कुपात्र मांतरो सुरभी सर्पा जोय ।
खळ खायां पय नीपजे पय पायां विष होय ॥ ११३६ ॥
गुरु कुंभार शिष्य कुंभ घट घड़ी घड़ी काटे खोट ।
भीतर हाथ सवाईका ऊपर देवे चोट ॥ ११३७ ॥
माता रड़ पिता रड़ै रड़ बहुला बाळ ।
चाकर रड़ सेठ रड़ ताय न छोड़े काळ ॥ ११३८ ॥
दया न राखी दिलमां कियो न प्रभु पर नेह ।
पर उपकार कियो नहीं जनम गुमायो एह ॥ ११३९ ॥
कजिया खोर, कुटील नर, पर निन्दा परनार ।
झूठा धमका जो करै सो दुख से रहै बेजार ॥ ११४० ॥
कुवा ढांकण ढांकणु, खेतन ढांकण बाड़ ।
सापन ढांकण बेटवो घरनु ढांकण नार ॥ ११४१ ॥
बड़े बड़े सब कहत हैं बड़े बड़े में फेर ।
सरिता सब मांठी लगे समुदर खारो भेर ॥ ११४२ ॥
मित्र ऐसा कीजिये जैसा सिर के बाल ।
काटे कटावे फिर बढ़े तोय न छोड़े काम ॥ ११४३ ॥

(११३६) पात्र कुपात्र — अच्छा और बुरा व्यक्ति । मांतरो — भेद । सुरभी — गाय । सर्पा — सांप । जोय — देखो । पय — दूध ।
(११३७) कुंभ घट — घड़े की तरह ।
(११३८) रड़ै — जोर से रोना । बहुला बाळ — बहुत से बच्चे । चाकर — नौकर तोय न = तब भी । काळ — मृत्यु, यमराज ।
(११३९) दिलमां — दिल में हृदय में । प्रभु पर नेह — प्रभु से प्रेम । जनम गुमायो एह — ऐसे ही (व्यर्थ में) खो दिया ।
(११४०) कजिया खोर — झगड़ालू, लड़ाई खोर । झूठा धमका — झूठा दिखावा ।
(११४१) ढांकणु = ढकना रक्षक । सापन — सांप का । बेटवो — बेटा । घरनु — घर का ।
(११४२) फेर — फर्क भेद । समुदर — समुद्र । भेर — बहुत ।
(११४३) तोय न — तब भी । [illegible] = किसी समय में भी ।

नमीं थे मांवा मांबय्य नमीं ते दाड़म दाख ।
एरंड बिचारो क्या नमैं जिसकी मोछी शाख ॥ ११४४ ॥
क्रोध चढ़ेला क्रोधी नै दीजे नहिं उपदेश ।
तेल तपै जळ छांटतां सळगी उठै असेस ॥ ११४५ ॥
भरिया तो झळकै नहीं झळकै सो आधा ।
घोड़ा तो भूकै नहीं भूकै सो गधा ॥ ११४६ ॥
सोच करै सो सुघड़ नर कर सोचे सो कूर ।
सोच किया मुख नूर है कर सोच्यां मुख धूर ॥ ११४७ ॥
अपणी अपणी क्या करै, अपणो नहीं शरीर ।
जिनरंग माया जगत की ज्यौं अंजळी को नीर ॥ ११४८ ॥
बीजानु वांकुं कहै मूरख जगमां चार ।
ऊंठ न जांणै आप नु बांका अंग अठार ॥ ११४९ ॥
निर्लज्ज नर लाजै नहीं करीजे कोटि उपाय ।
नाक कपायु तो कहै, अंगे आछा भार ॥ ११५ ॥
पाप छुपाया छुपै नहीं छुपै तो मोटा भाग ।
दाबी दुबी ना रहै रुई बीटी आग ॥ ११५१ ॥

(११४४) नमीं — झुकना । मोछी साख — छोटी शाखाएँ ।

(११४५) दीजै नहि — नहीं देना चाहिए । तपै — गर्म होना । छांटतां — छींटे से । सळगी उठै — जल उठता है ।

(११४६) झळकै नहीं — छलकते नहीं ।

(११४७) सुघड़ नर — भला आदमी । नूर — चमक ।

(११४८) अपणी-अपणी — 'मेरा' 'मेरा' । अपणो नहीं शरीर — अपना शरीर भी अपना नहीं ।

(११४९) बीजानु — दूसरों को । वांकुं कहै — टेढ़ा कहता है । जग मां — संसार में । जांणै — समझना । बांका — टेढ़ा ।

(११५) करीजे — क्यों न करो ? नाक कपायु — नाक कटा हुआ ।

(११५१) दाबी दुबी ना रहै — दबाने से नहीं रह सकती । रुई बीटी आग — रुई से आग को लपेटने पर ।

पूत कपूत कृपण नर कपटी मित्र कुमार।
भार संगाति, दुष्टी सम बुधजन कहत विचार ॥ ११५२ ॥

तन की तृष्णा सहज है तीन पाव के सेर।
मन की तृष्णा प्रबळ है, न गळे पर्वत मेर ॥ ११५३ ॥

न सुख काजी पंडिता न सुख भूप भया।
सुख तो सबही होवसी तृष्णा रोग गया ॥ ११५४ ॥

समझू झूरे पास से, अण समझू हरखंत।
वे सुखा वे बिलखणा इण बिध कर्म बांधंत ॥ ११५५ ॥

समुद्र डुबकी मैं लही मोती न आयो हाथ।
सागर का क्या दोष है हीन हमारा भाग ॥ ११५६ ॥

अंधा आगळ आरसी बहरा आगळ गीत।
मूरख आगळ रस कथा त्रणी एकज रीत ॥ ११५७ ॥

चतुर ने चिंता घणी मूरख ने नहीं लाज।
भलो बुरी जाणें नहीं पेट भरया सू काज ॥ ११५८ ॥

(११५२) कपूत—मूर्ख। कृपण नर=कंजूस आदमी। मित्र—मित्र। बुधजन—विद्वान लोग। कहत विचार—विचार कर कहते हैं।

(११५३) सहज है—सरल है। प्रबळ है—तेज है। न गळे—नहीं समाता।

(११५४) न सुख—सुख नहीं है। भूप भया=राजा हो जाने पर। रोग गया—रोग के जाने पर।

(११५५) समझू—समझदार, बुद्धिमान। अण समझू—मूर्ख। हरखंत—खुश होता है। बिलखणा—बिलखाहट लिए हुए। इणबिध—इस प्रकार। कर्म बांधंत—कर्म बांधते हैं।

(११५६) मैं लही—मैंने ली। न आयो हाथ—हाथ नहीं हाथ नहीं लगा। हीन—बुरा खराब। भाग—भाग्य।

(११५७) आगळ—आगे। आरसी—कांच। रस कथा—रस की चर्चा। त्रणी—तीन। एकज=एक।

जब लग जोगी जगगुरु, तब लग रहै उदास।
जब जोगी आशा करै तब जोगी जगदास ॥ ११५९ ॥

राजा बाजा नै बांदरा भए तो एक सुभाव।
रीझै तो राजी रहै खीजै मारै धाव ॥ ११६० ॥

सुखरा सीरी होय आफत में अळगा हुय।
करै संग नहिं कोय हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६१ ॥

हीरा तो हर नाम दूजा काच कथीर है।
नहिं लागै कछु दाम हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६२ ॥

परवत जितरा पाप हरि कुमाड़ै काटिया।
झटकै होया साफ, हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६३ ॥

काठ्य बाळै आग नामज बाळै पापनूं।
सिरिया पर कर त्याग हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६४ ॥

(११५८) चतुर नै = चतुर को। घणी—बहुत। जाणी नहीं—नहीं समझा। पेट भरणो मूं काज—पेट भरने से ही काम है।

(११५९) जबलग—जब तक। जगदास—जगत का दास।

(११६०) बांदरा—बन्दर। भणों—तीनों का। रीझै—प्रसन्न होने पर। खीजै = नाराज होना।

(११६१) सुखरा—सुख का सुख में। सीरी होय—हिस्सा लेने वाला। अळगा—दूर।

(११६२) हीरा तो हरिनाम—भगवान का नाम हीरे के समान है। नहीं लागै—नहीं लगता। कछु दाम—कोई मूल्य।

(११६३) परवत जितरा पाप—पहाड़ के समान (ढेरों) पाप। कुमाड़ै—कुल्हाड़ी से। झटकै होया साफ—फौरन साफ हो गए।

(११६४) काठ्न—लकड़ी। बाळै आग—आग जलाती है। नामज बाळै—भगवान नाम जलाता है। सिरिया पर—पराई को।

बृख झड़ूं पात जोब झड़ूं देह नूं ।
बात अजूंलग हाय हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६५ ॥
पाणरा हावै झाग फर फोटा फूटै परा ।
जासी मारग लाग हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६६ ॥
बाग बगीचा हद सब पंछी सुख सूं रहै ।
बिछड्या मिलसी कद हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६७ ॥
ज्यांरत न पूछे बात पैसो है ज्यां प्रीत है ।
कळजुग माईज बात हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६८ ॥
जगत गिरस्त रा काम सदा ऊठ सारा करै ।
मजतां आवै लाज हाथी हर सिमरण करो ॥ ११६९ ॥
सब झूठी जग जोड़ सुमरण बिन संसार में ।
छोड़ जाय इणठौड़ हाथी हर सिमरण करो ॥ ११७० ॥
थारी में बिसराम जितरो रहणों जगत मैं ।
जपसी आठूं जाम हाथी हर सिमरण करो ॥ ११७१ ॥

(११६५) बृख—वृक्ष पेड़ । झड़ई पात—पत्ते गिर जाते हैं । देह नूं—शरीर को । अजूं लग—अभी तक ।

(११६६) पाण रा—पानी का । होवै झाग—झाग होते हैं । फर—फिर । फूटा परा—फूट जाते हैं । जासी मारग लाग—चला जायगा, समाप्त हो जायगा ।

(११६७) हद—बहुत अधिक, बहुत ज्यादा । बिछड्या—बिछुड़ जाने पर । मिलसी कद—कब मिलेंगे ।

(११६८) न पूछे बात—कोई बात नहीं पूछता । पैसो है ज्यां प्रीत—जहाँ पैसा है वहाँ प्रीत है । कळजुग—कलयुग । माईज—यही ।

(११६९) सदाऊठ—हमेशा उठकर । सारा करै—सभी करते हैं । मजतां आवै लाज—भगवान नाम लेते हुए शर्म आती है ।

(७०) जग जोड़—जगत जोड़ । सुमरण बिन—भगवान नाम के बिना । इण ठौड़—इसी स्थान पर ।

(११७१) बिसराम—आराम । जितरो—जितना । रहणों—रहना । जपसी—स्मरण करना ।

दुख सह लेणा देख कहणा नहिं फिर और कू ।
लिखिया वे सिर लेख हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७२ ॥

वृत्त वह्यो इक प्राण नदी किनारा ऊपरे ।
जिम हाथी नर जांण विनसत वार न लागसी ॥ ११७३ ॥

अपणी निंदा होय सीधै मारग चालतां ।
डर मत राखो कोय हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७४ ॥

पाया जनम अनेक मिनखा देह पाई नहीं ।
मन में राख विवेक हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७५ ॥

कीडी मगर वसाय कण भू में भेळो करै ।
काग काळ ले जाय हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७६ ॥

कीन्हां लागै पाप दीठां रो दूषण नहीं ।
मन राखीजै साफ, हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७७ ॥

सत संगत जँह होय धन आया धन मानवी ।
इणरी जोड़ न कोय हाथी हर सिमरण करौ ॥ ११७८ ॥

(११७२) सहलेण — सहन कर लेना ।

(११७३) जिम — जैसे । विनसत — नष्ट होना । वार न लागसी — देर नहीं लगेगी ।

(११७४) सीधै मारग चालतां — सच्चे मार्ग पर चलते हुए । डर—भय ।

(११७५) मिनखा देह — मनुष्य जन्म । विवेक — ज्ञान ।

(११७६) कीडी — चींटी । कण — दाना (अनाज का) भू में = पृथ्वी में । भेळो करै — एकत्र करती है ।

(११७७) कीन्हां लागै पाप — करने पर ही पाप लगता है । दीठां — देखने से । दूषण नहीं = कोई दोष नहीं ।

(११७८) जँह होय — जहां हो । आया — आगए स्वागत । मानवी — मनुष्य । इणरी जोड़ न कोय—इसकी बराबरी का कोई नहीं ।

सूरज सज्जन सोय साचो सज्जन सांवरो ।
जिण सिमरयां गति होय हापी हर सिमरण करी ॥ ११७९ ॥
साधा रखणा भेष सादा भोजन पाइये ।
हर सूं राखौ हेत हापी हर सिमरण करी ॥ ११८० ॥
मधुराई चित आंण करड़ाई मध्यो करी ।
मन धोबी आपांण हापी हर सिमरण करी ॥ ११८१ ॥
दीपक पड़ै पतंग स्वारथ पग दीसै नहीं ।
मूरख पड़ कुसंग हापी हर सिमरण करी ॥ ११८२ ॥
बिरछ वध्यो अणपार, फळ फूला निरफळ हुवो ।
बिणसत लगै न वार हापी हर सिमरण करी ॥ ११८३ ॥
महा बली छ काळ, नहि छोडै जोगी जती ।
पतन करै भूपाळ हापा हरि समरण करी ॥ ११८४ ॥
हापी पाका पाक जैसी करै भांवरी ।
बिना समझ मैं वान हापी हर सिमरण करी ॥ ११८५ ॥

(११७९) सोय — सभी तमाम । सांवरो — भगवान की कृपा । जिण सिमरयां — जिसके स्मरण करने से ।
(११८०) भेष — पोशाक । हर सूं भगवान से ।
(११८१) मधुराई चित आंण — नम्रता को धारण करो । करड़ाई — कठोरता । मध्यो करी — दूर रखो ।
(११८२) पड़ै — गिरते हैं । पग — [illegible] । दीसै नहीं — नहीं दिखाई देता । कुसंग — बुरे लोगों का साथ ।
(११८३) बिरछ — वृक्ष पेड़ । अण-पार — बहुत अधिक । बिणसत लगै न वार — नष्ट होने देर नहीं लगती ।
(११८४) महाबली छै — बड़ा बलवान है । भूपाळ — राजा ।
(११८५) पाको — तोड़ देना गिरा देना । भँवरी — [illegible] ।

समदर मांही पैठ संखोल्या सैठा किया।
मरण मोसो मांहि पैठ, हाथी हर सिमरण करो॥ ११८६॥
धन रे कारण जांण भटकै सारा जगत में।
मिलै भाग परमांण हाथी हर सिमरण करो॥ ११८७॥
कोडी कोडी जोड़ी ने थाय रंक धनवान।
आखर आखर सीखतां थाय मूरख विद्वान॥ ११८८॥
समर्थ थई राखे क्षमा, जुवान जीते काम।
एज अधिक वखाणाय छे, वाळो वलपत धाम॥ ११८९॥
ज्ञान समो कोई धन नहीं समता समो नहीं सुख।
जीवित सम आशा नहीं मरण सम नहीं दुःख॥ ११९०॥
पुण्य से सोभा जगत में पुण्य से रहै प्राण।
पुण्य से भजन भजत है पुण्य से रहै मान॥ ११९१॥
कुवचन क्या कर सके, तू होजा पाषाण।
तेरा कुछ बिगड़े नहीं उसकी ही अपमान॥ ११९२॥
चिंता से चतुराई घटे दुख से घटे शरीर।
इण कारण तुम परिहरो कह गये दास कबीर॥ ११९३॥

(११८६) समदर — समुद्र। मांही पैठ = भीतर बैठकर। सैठा किया — मजबूती से पकड़ लिया।
(११८७) धन रे कारण — धन के लिए। मिलै भाग पर मांण = भाग्य के अनुसार ही मिलेगा।
(११८८) थाय = हो जाना। रंक — गरीब। आखर आखर — अक्षर-अक्षर।
(११८९) समर्थ थई — शक्तिशाली होते हुए। एज — वही। वखाणाय छे — शोभा के लायक है।
(११९०) समो — समान बराबर। मरण सम = मौत के समान।
(११९१) प्राण — मान-मर्यादा।
(११९२) कुवचन — अपशब्द बुरे वचन।
(११९३) घटै — कम होना। इण कारण — इसी कारण इसलिए। परिहरो — छोड़ देना।

मांगण मरण समान है मत कोई मांगो भीख।
मांगण से मरणा भला ए सद्गुरु की सीख ॥ १२०१ ॥
आवै प्राणी एकलो, जाय एकलो आप।
साथै पुन कलत्र नहीं साथै पुन नै पाप ॥ १२०२ ॥
सज्जन ऐसा कीजिए, जामैं लक्षन बत्तीस।
पीड़ पड़ै आघै नहीं सूंपै अपणो सीस ॥ १२०३ ॥
हिंसा पाप की बेलड़ी हिंसा दुखों की खान।
श्रेणिक सा नरकै गया हिंसा तणे परिणाम ॥ १२०४ ॥
आलस निद्रा परिहरो कीजै तत्व विचार।
शुभ ध्यानै मन लाइये, श्रावक का आचार ॥ १२०५ ॥
जैसा मोती ओस का वैसा यह संसार।
लागा झोला पवन का मिटतां न लागै बार ॥ १२०६ ॥
सड़का राखो हटक में मत चढ़ाओ सीस।
जब लग लाड़ लड़ावतो बिगड़ै बिसवा बीस ॥ १२०७ ॥
नांव रहंदा ठाकरां नांणा नांय रहंत।
कीरत हुंदा कोटड़ा पाड्या नांहि पड़ंत ॥ १२०८ ॥

(१२०१) मांगण मरण समान है—मांगना मरने के समान है। ए—यह।
(१२०२) आवै प्राणी एकलो—प्राणी अकेला आता है।
(१२०३) जामैं—जिसमें। पीड़ पड़ै—विपत्ति आने पर। आघै नहीं—दूर नहीं। सूंपै अपणो सीस=अपना शीश सौंप दे।
(१२०४) सा=सदृश; समान।
(१२०५) मन लाइये=मन लगाना।
(१२०६) लागा झोला पवन का—पवन का झोंका लगते ही। न लागै बार—देर नहीं लगती।
(१२०७) जब लग—जब तक। लाड़—प्रेम। बिसवा बीस—निश्चय।
(१२०८) नांव रहंदा=नाम रहता है। नांणा—धन-दौलत। नांय रहंत—नहीं रहता। कीरत हुंदा कोटड़ा—कीर्ति के गढ़। पाड्या नांहि पड़ंत—गिराए भी नहीं गिरते।

कोट खिसै देवळ डिगे वृख ढ मरण सूं जाय ।
पसरा माळर बेहिया जातां जुगां न जाय ॥ १२०९ ॥
तरुणी जणै कपूत मत चंगो जोबन खोय ।
जणै तो बैर बिहंडणो के कुळ मंडण होय ॥ १२१० ॥
रूप न मावै मण त्रणां, कामण कही किण्याह ।
उकस_ पटी बहुरिणां बैर खटक्के ज्यांह ॥ १२११ ॥
कीधा कोल म चूकणो मर चूकणां नह मान ।
सत पुरसां री लज्जड़ो नित राखै रहमान ॥ १२१२ ॥
वैद रहीजे रावणर, पावै कैम गरीब ।
हैसी दूध पपाड़ पो म्हारे सीख तबीब ॥ १२१३ ॥
तीस बरस कुसती करी पड़ गुड़ उपस्त पुपस्त ।
पैं दीधो गोडां तळै मर्द हो मीत ममस्त ॥ १२१४ ॥
हाथ बळै पींगसी बळै बळै बतीसू दंत ।
कर जोड्या कामण कहै छोड़ तमासू कंत ॥ १२१५ ॥

(१२०९) खिसै—नष्ट होना । देवळ—मन्दिर । डिगै—गिरना । वृख—वृक्ष पेड़ । माळर—मजार । जुगां न जाय—लम्बे समय तक नहीं जाते युगों तक नहीं जाते ।

(१२१०) जणै—पैदा करना । कपूत—कुपुत्र । चंगो—अच्छा सुन्दर । जोबन = यौवन । बैरबिहंडणो—बैर का बदला लेना ।

(१२११) रूप—तीव । मण त्रणां—तीन व्यक्तियों को । बहु = बहुत । रिहाणै —दर्द । खटकै—खटकना ।

(१२१२) कीधा—करना देना । कोल—वचन । न चूकणो—नहीं विमुख होना । लज्जड़ी—लाज । रखै रहमान—परमात्मा रखते हैं ।

(१२१३) वैद = वैद्य । कैम—कहाँ । हैसी—तभी । दूध पपाड़ पो—दूध से सींचा हुआ । तबीब = वैद्य ।

(१२१४) पड़—गिरना । दीधो—दिया । तळै—नीचे । ममस्त—पश्मीम ।

(१२१५) बळै—जलना । बतीसू दंत—सभी दांत । कर जोड्या—हाथ जोड़ कर । कामण—कामिनी ।

हे कंथा मत षू करै, हाय तमाखू हेत।
टका एक ही टाट में दिन ऊगांई देत ॥ १२१६ ॥
धाम फळै परवार सूं पै महुड़ो पत खोय।
ज्यांरो पाणी जो पीवै मकस कठ्यां सूं होय ॥ १२१७ ॥
साठी चावळ भैंस दुध घर सिलवंती नार।
चौथी पीठ तुरंगरी सुरग निसाणी चार ॥ १२१८ ॥
मगर मकोड़ो, मूढ़नर तीनूं ताम मरन्त।
भंवर भुवंगरि सुघड़ नर, हसकर दूर रहन्त ॥ १२१९ ॥
धाम सुहागण लाकड़ी, तोसूं पड़ियो काज।
माता री आसीसड़ी सो दिन आयो आज ॥ १२२ ॥
हाथां परवत तोलता समदां घूंट भरेह।
वे जोधा दीसैं नहीं तू क्यूं गरब करेह ॥ १२२१ ॥
हरण मसाणां मह हुवै, भसम भोम मिनखांह।
हाथी मैं विन्ध्याचळे, बीसरसी सुवांह ॥ १२२२ ॥

(१२१६) मत षू करै—तुम मत करना। हेत—प्रेम। टाट में—सिर में। दिन ऊगांई देत—सवेरा होते ही देते हैं।
(१२१७) फळै—फलता है। परवार सूं—परिवार के साथ। महुड़ो—महुए का पेड़। पतखोय—पत्तियों को खोकर। कठ्यां सू—कहाँ से।
(१२१८) चावळ—चावल। सिलवंती नार=सुशील स्त्री। पीठ तुरंगरी=घोड़े की सवारी। सुरग—स्वर्ग। निसाणी—निशानी।
(१२१९) मकोड़ा—कीड़ा चींटा। मूढ़ नर—मूर्ख मनुष्य। तामभरन्त—चिपक कर मर जाना। भंवर—भंवरा। सुघड़ नर—चतुर मनुष्य।
(१२२) धाम—धामी। सुहागण—सुहागिन। लाकड़ी—लकड़ी। तोसूं—तुम से। काज—काम कार्य। आसीसड़ी—आशीष। सो दिन—वे दिन।
(१२२१) हाथां—हाथों पर। परवत=पर्वत। घूंट भरेह—आचमन करना। गरब—गर्व। करेह=करना।
(१२२२) हरण—हिरन। भसम भोम—भस्मभूमि। विन्ध्याचळे—विन्ध्याचल पर्वत। मिनखांह=मनुष्यों को। सुवांह—मरने पर।

नीर-खीर रो न्याव हंसो जिम की गुण करै।
कागां नागां बाथ पख-कादै चूंचा भरै ॥ १२२३ ॥
हुंवर सीखो मास विद्या पण सीखो घणी।
जिन हरि तू ठौ साख धरा धमै नहीं जगत में ॥ १२२४ ॥
घोर जसम जम जाळ, जनम गमायो जड़ मिनख।
जगपति जमा जपास जोड़ी नहीं रीतो जाग्यो ॥ १२२५ ॥
देह पींजरै पाळ, पंछी राख्यौ सोवणो।
मिनकी मार फाळ पिंजर खपाय मस तोड़ची ॥ १२२६ ॥
रोती खोड़ो माय घर नारी सिर पीटती।
किणरी नहीं उपाय आवी आयी जगत में ॥ १२२७ ॥
रक रक रळकै धूळ ज्यों रळ मिळणी रंग रेत।
संग सगळी सठ भीतरी खोय बिनारो खेल ॥ १२२८ ॥
पारी म्हारी करण में जाय जमारो हाथ।
मन मिण मेल धूपै नहीं मिनखां पूगो पाय ॥ १२२९ ॥

(१२२३) नीर-खीर—पानी और दूध। गुण—कौन। कागां—कौवा। कादै—कीचड़ में।

(१२२४) हुंवर—कला हुनर। तु ठ्ठ—खुश होना। साख—इज्जत।

(१२२५) जमजाळ—संसार के प्रपंच। जनम=जन्म। मिनख—आदमी। जोड़ी नहीं—संग्रह नहीं किया। रीतो जाग्यो—खाली (हाथों) गया।

(१२२६) सोवणो=सुन्दर। मिनकी=बिल्ली। फाळ=छलांग झपट। मस तोड़ची—गर्दन तोड़ दी।

(१२२७) माय—माता। घर नारी—घर की नारी स्त्री। किणरी—किसी का भी।

(१२२८) रळकै—लटकना। धूळ ज्यों—कण की तरह। सठ भीतरी—मूर्ख मित्र की। खोय—खाना।

(१२२९) पारी म्हारी करण में=दूसरे की निन्दा करने में। मिनखां पूगो पाय—मनुष्य जन्म पाकर।

सिखमी पारी रात ना आयी ना जसमसी।
पापी पाप छिपाय पारे पीताम्बर तळे॥ १२१ ॥

गीता जिसड़ो ग्रंथ हेख भक्तां वाचे नहीं।
ऊंधो चाल्यो पंथ मिरत-काळ गीता सुणे॥ १२११ ॥

मनरी बातां मन रही बही न किण सू जाय।
राम नाम मुरली बिना जीवण सूनो हाय॥ १२१२ ॥

मरे बटाऊ बावळा किम पासा-में जोय।
मोट्यां मेंला मोयला बिरला मोटा होय॥ १२११ ॥

हाका! हाकां कुचरतों मठना मटके मीच।
हठ राख्यां हंसा मिळै मोतीड़ा जग बीच॥ १२१४ ॥

मरे समंदर !समद बण मतना माच फतूस।
तिसो तळमळै आतरी पाळ बिन लाख्यो फुक्म॥ १२१५ ॥

लटका सिगताई किया कुत्ती पावे टूक।
मच गरबीसे मे मिळे मोरां बारो मूक॥ १११६ ॥

---

(१२१) ना आयी ना जसम सी = न पैदा हुआ है और न पैदा होगा ही। तळे = नीचे।

(१२११) जिसड़ो — जैसा। वाचे नहीं — पढ़ते नहीं। ऊंधो — विपरीत उलटा। मिरत काळ — मरते समय।

(१२१२) मनरी = मनकी। मनरही — मन में ही रह गई। जीवण सूनो हाय-हाय! जीवन व्यर्थ (रहा)।

(१२११) बटाऊ — राहगीर पंथी। बावळा — पागल। मोयला — अन्दर के।

(१२१४) हाका — कौवा। मोतीड़ा — मोती। जगबीच — संसार में।

(१२१५) समंदर — समुद्र। तिसो — प्यासा। आतरी — राहगीर पथिक। तळमळै — छटपटाना।

(१२१६) लटका सिगताई — मिनत-खुशामदी आदि करना। टूक — टुकड़ा। गरबीसे में — गौर्य रखनेवाले को।

गया तू सीघोह संतोली मूनी सुखी।
हिक सू हो कीमोह मन फिरको राख्यी नहीं ॥ १२३७ ॥
मिनखा जूणी पाय मिनखपणै रा काम कर।
गमी कुत्तां माय कांई जग थोथी किम्यी ॥ १२३८ ॥
मिनख मिनख सू दूर, पढता-ई जावै परा।
सकड़ी ममी हजूर, पुस धरम सू मां मिळै ॥ १२३९ ॥
मिदर मिदर ढोल बैंप्यु वण कांई किम्यौ।
मन-री मूं डी खोल पीड़ पराई मों लखी ॥ १२४० ॥
धन धन हुंवे जोर, मौजां माणी मोकळी।
उठ बसिया ज्यू ढोर, काम न भाया मिनख रे ॥ १२४१ ॥
मोर देख मत भूल मधरी बोली पंख पर।
गटकै सरप समूळ मिग इसड़ै मीठा पणै ॥ १२४२ ॥
कूड़ कपट, कुलटा कुसंग कूर, कर्म कुविचार।
जग जसनिधि उवरयौ महै हजदे सहूँ हकार ॥ १२४३ ॥
मोया मगरीजै मती फागा ऊं चो वैठ।
इंसो तू होसी नहीं जिणरी ऊंची पैठ ॥ १२४४ ॥

(१२३७) हिक—एक। सू हो—बुरा खराब।
(१२३८) मिनखा जूणी—मनुष्य जन्म। माय=मायकर। कांई—क्या। थक-थोळी किम्यौ—(क्या) नव की तैरह करली।
(१२३९) परा=दूर।
(१२४) मिदर—मन्दिर। मूं डी खोल—हृदय खोलना। पराई—दूसरे की।
(१२४१) हुंवे—थे। मोकळी—बहुत। मिनख—मनुष्य।
(१२४२) मधरी—मधुर। गटकै—निगल जाना। समूळ सारा का सारा। इसड़ै—ऐसे।
(१२४३) कूड़—झूठा। कुलटा—बुरे चालचलनवाली।
(१२४४) मोया—मूर्ख। मगरीजै मती—घमंड मत करना। होसी नहीं—नहीं हो सकेगे। [illegible]

किण सूं कीधां रोस, कुण गरीब रा दुख सुणै ।
परम पिता बिन कोय नीर पूंछै नैण रो ॥ १२४५ ॥

हरि हिवड़ो हित धाम, झुकै बब कुरणा भरयो ।
सबै सुध भट भाय दीन दुखी रा दुख दळै ॥ १२४६ ॥

'मुरली' मीको कोय मत सोस नहीं वेसास ।
सुकरत कर हरि-नैं सिवर, छोड़ कपट पर पास ॥ १२४७ ॥

ऊपर ठाठ बणाय, भीतर सूं पोचा निपट ।
जगत ठगण-नैं जाय धूड़ बसावैं मावनै ॥ १२४८ ॥

ऊपर-सूं बण ऊजळ्ळ मांही सूं मैला ।
सिध्धाई-रो सांग भर ठग लावैं गैला ॥ १२४९ ॥

बिसम पाय जग पति पमा जरा न थोड़ी मीत ।
जरा जरा-में जतन कर, अब तो बाजी जीत ॥ १२५० ॥

रोहीड़ैरा फूल रूप रूड़ा गुण बायरा ।
मैणा लागै सूल, गुण बिन कोई न भावरै ॥ १२५१ ॥

(१२४५) किणसूं — किससे । कुण — कौन । नैणरो — आंखों का ।

(१२४६) हिवड़ो — हृदय । झुकै — रोता । बब — बब । कुरणा भरयो — बड़े दुख के साथ । भट भाय — शीघ्र आकर ।

(१२४७) सुकरत — सत्कार्य । सिवर — स्मरण करना । पर पास — पराई आशा ।

(१२४८) निपट — एकदम । धूड़ — धूल मट्टी । मावनै — इज्जत में ।

(१२४९) बण — बहुत । ऊजळ — उज्ज्वल स्वच्छ । मांही सूं — भीतर से । मैला — गंदे । सांग भर — स्वांग रचना ।

(१२५०) बिसम पाय — जन्म पाकर । जरा न थोड़ी — थोड़ी सी कद्री नहीं की । मीत — मित्र ।

(१२५१) रूप रूड़ा — बहुत ही सुन्दर । गुण बायरा — गुण से रहित । गुण बिन कोई न भावरै — बिना गुणों के कोई इज्जत नहीं करता ।

खोटै मारग पावता टाळ सुमारग लाय ।
सुगण प्रगटै औगण ढकै साचो मीत कैवाय ॥ १२२२ ॥
करै मिनख रै मांयनै तेज पुंज परकास ।
साचो मितर जगमर्ये हुवो जावै नास ॥ १२२३ ॥
साचै मितर-रा पर्ड, काना मांय सुवैण ।
मनडै-री सैंगी बर्ढे प्रेम प्रकासै नैण ॥ १२२४ ॥
धन संच्या काई हुवै जद है पूत कपूत ।
धन संच्या काई हुवै जद है पूत सपूत ॥ १२२५ ॥
मित्र मोकळ्य मिनख जग स्वारथ साधणहार ।
सुख मैं नैड़ा रात दिन दुख मैं करै न सार ॥ १२२६ ॥
ऊपर चोखा दूध ज्यूं मांयी सूं मेला ।
बुगला हंसा में परख प्रीत करण पैला ॥ १२२७ ॥
प्रवेस्या सू घर बधै निबेरघा घट जाय ।
पाई-पाई धन जुडै पाई धन-नैं खाय ॥ १२२८ ॥

(१२२२) खोटै मारग = खराब रास्ता। सुमार्ग। टाळ = दूर करना हटाना।
औगण ढकै = बुरे गुणों को छिपाए। कैवाय = कहलाता है।
(१२२३) हुवो = हुआ। नास = नाश जाना।
(१२२४) मितर = मित्र। काना मांय = कानों में। सुवैण = अच्छे वचन।
मनडै री = मन की।
(१२२५) संच्या = इकट्ठा करना। काई हुवै = क्या होता है। जद = जब।
कपूत = कुपुत्र पुत्र।
(१२२६) मोकळ्य = बहुत है। मिनख = मनुष्य। नैड़ा = नजदीक पास है।
सार = संभालना ध्यान रखना।
(१२२७) चोखा = सफेद। दूध ज्यूं = दूध जैसा। मांयी सूं = भीतर से पत्थर
से। परख = परीक्षा करो। प्रीत करण पैला = प्रीत करने से पहले।
(१२२८) प्रवेस्या = इकट्ठा करना।

रहणा इक रंगाह कहणो नहीं कुजा कथन ।
चित उज्जळ चंगाह, मसाण कोइक मोरिया ॥ १२४९ ॥

समय न चूकै चतुर नर कहत कवि जन कूक ।
चतुरन के खटकत हियै समय चूकनी हूक ॥ १२५० ॥

हंसा तहाँ न जाइये, जहँ चातर नहिं माम ।
बकबक कगबग बकसमका कग बग कगग कहाम ॥ १२५१ ॥

जामैं गुण अव-लोकिये, करिये तिहिं मंजूर ।
बाल-वचन हू मानिये होय प्रीति भरपूर ॥ १२५२ ॥

उद्यम अर्थ अपार हर कोई जातन करो ।
सुख दुख भोगे सार, कर्मां लारे किसनिया ॥ १२५३ ॥

कईक नर के भार, हटवाड़ा पेख्य हुवे ।
सपना ज्यूं संसार किसी बिहाणी किसनिया ॥ १२५४ ॥

सोना घड़े सुनार, कंदोई खाजा करे ।
भोगी भोगणहार कर्म प्रमाणे किसनिया ॥ १२५५ ॥

जाणै न बिषू जाय जाणै नर मनहीं मजल ।
सो नर काळो साँप कर क्यों चावै कैसिया ॥ १२५६ ॥

(१२४९) उज्जळ — उज्ज्वल । चंगाह — अच्छा ।
(१२५) कहत कविजन — कवि लोग कहते हैं ।
(१२५१) तहाँ — वहाँ ।
(१२५२) जामैं — जिसमें । बाल-वचन — बच्चों की बात, बच्चों का कथन ।
(१२५३) अपार = अधिक । कर्मां लारे = कर्मों के अनुसार ।
(१२५४) कईक — कितने ही ।
(१२५५) कंदोई = मिठाई बनाने वाला हलवाई । भोगणहार — भोगने वाले । कर्म-प्रमाणे — कर्मों के अनुसार ।
(१२५६) सो नर — वह व्यक्ति । क्यों चावै — क्यों चाहता है ।

मम मरण वडिया कोट, सुवही लंका सोहिनी।
पर्मेज रावण पोट कहासू लेग्यौ केलिया॥ १२६७॥

सांबा तिमर लगाय फन्क यजा उडता फिरे।
पोटे वाणो लाय किम्यां तिरसी कसिया॥ १२६८॥

काया ममर म कोम थिर माया थोडी रहै।
इसमें बाता दोम नामा कामा नोपसा॥ १२६९॥

तुर्स म परखत तोम मोम महो मूरख तणो।
पड़े मिनखरा मोल नग-मग मारी नोपसा॥ १२७०॥

मैं बुड़ा के बाळ, परण्याही परबस हुवै।
सिह हुवा है स्याम मारो थारी मोमना॥ १२७१॥

मतलब रा पाजीह कर जोड्या विनती करै।
बिन मतलब राजीह कोर्म नहीं मैं बापजी॥ १२७२॥

मामी सावण मास बरषा ऋतु मासी मये।
मांईमारी बास मये न मासी बोम्हरा॥ १२७३॥

(१२६७) कोट = किला दुर्ग। सोहिनी – सुन्दर। पोट – गन्दी।

(१२६८) सांबा – लम्बा। पोटो = बुरा। किम्यां – किस प्रकार। तिरसी – तैरना पार होना।

(१२६९) थिर = स्थिर। माया = धन दौलत।

(१२७) परखत – परीक्षा करना। मोम – मूर्ख। मिनख – मनुष्य आदमी।

(१२७१) मैं – क्या। बुड़ा कै बाळ – बूढ़े और बाल (बच्चा)। मारी थारी = स्त्री के मामने।

(१२७२) कर जोड़ना – हाथ जोड़े हुवे। बिन मतलब – बिना मतलब।

(१२७३) मामी – मामा। मये – फिर। मांईमारी = मांईयों का बराबरी के लिये का।

हुवै किता आराम किता हुवै दुख का करण।
करणा सारा काम मौको सागा मोतिया ॥ १२७४ ॥

उर्द मस्तकी राज मरबो करबो मर्ग है।
कोई न भावै काज मरणो बीसै मोतिया ॥ १२७५ ॥

लो कंचन री माट, रात दिवस भेळो रहै।
कदै न लागै काट, सोमा ऊपर सपतिया ॥ १२७६ ॥

महुत हुवै परवार, सारखीणा मीठी सरस।
सुत बिन सोम संसार सूनौ लागै सारंगा ॥ १२७७ ॥

हिकमत करी हजार, मन चित्या सुम न हुवै।
करता कियौ करार, सोहा होसी सारंगा ॥ १२७८ ॥

मैमाणौ मैं मान विस भर चित दीधा नहीं।
मांणस नहीं मसाण साचो सोरठियो भणै ॥ १२७९ ॥

गुरु बिना ना ग्यान मौ प्रास्था विण उपदेस।
भाव भगरनी भभाव भा लाभ न पावे लेस ॥ १२८० ॥

(१२७४) किता — कितने ही। करणा — करना चाहिए।

(१२७५) मरबो-करबो मर्ग है — मरना बस दीनता।

(१२७६) लो = लोहा। कदै न — कभी भी।

(१२७७) परवार — परिवार। सोम — श्मशान।

(१२७८) मन चित्या — मन में सोचा हुआ विचारा हुआ। करता — करतार भगवान। सोहो — वही।

(१२७९) दीधा नहीं — नहीं दिया। मांणस — मनुष्य। भणै — कहता।

(१२८) ग्यान — ज्ञान। विण — बिना। नी — नहीं। पावे — हीना।

सज्जा गुणनी मानवी सज्जा रिपी निधान।
सज्जाहीण जे मानवी नहीं तस ध्यान ने मान ॥ १२८९ ॥
गोरी पूछे गोरीमा कौण भलेरो देस।
संपत होय तो घर भलो नहीं तो भलो परदेस ॥ १२९० ॥
गाळ सहन करिए सदा गाळे भूमड़ न थाय।
जे मसार जग गाळ्दे मुख ठेनु गंवाय ॥ १२९१ ॥
बहोत गई थोड़ी रही, चेतन कांईक चेत।
काळ ऊबरडी को चरै, उत्तम मानुष्य खेत ॥ १२९२ ॥
भणी गुणो समझै नहीं सू छै सारासार।
चंदण खर नें लादियौ तौ पण जाणै भार ॥ १२९३ ॥
बात-बात सब एक है, बतळावण में फेर।
एक पवन बादळ मिलै एक ही देत बिखेर ॥ १२९४ ॥
बिष बेस्या नारी नदी अग्नि कुमारी काळ।
ऐ सातों नहीं आपणा बळी विसेस भूपाळ ॥ १२९५ ॥
बस करवा कामनी कळ्ळ जप जसवंती जोय।
हाथी पग अंकुस थी मयल महावत रे होय ॥ १२९६ ॥

(१२८९) गुणनी—गुणों की। मानवी—माँ माता। सज्जाहीण—निर्बल। जे=जो। मानवी—मनुष्य।

(१२९०) कौण—कौनसा ? भलेरो—अच्छा।

(१२९१) गाळ—गाली दुर्वचन।

(१२९२) कांईक=कुछ तो। काळ—काल मृत्यु। ऊबरडी—बूढ़ा। चरै= चाट रहा है।

(१२९३) सू छै—क्या है। सारासार=सार और असार। लादै—लादे पर। जाणै—समझना।

(१२९४) बतळावण में—बोलने में। फेर—फर्क भेद।

(१२९५) कुमारी—कुमारी। ए=ये। आपणा—अपना। बळी—फिर। विसेस—विशेष खासतौर से। भूपाळ—राजा।

(१२९६) कळ्ळ=ताकत।

माथे बखत बिनास रो बुद्धि जाय बिपरीत ।[1]
हित सिख्या भावै नहीं भावै कुरीत पर परीत ॥ १२९७ ॥

प्रभु किरपा बिण क्यां पकी उपजै घटयां ध्यान ।
ध्यान बिना नहीं कोइसूं थाय कदी कल्याण ॥ १२९८ ॥

जैसी बाणी मुख कहै तैसी चालै नाहीं ।
मनख नहीं ए स्याम है बांधे जमपुरी मांही ॥ १२९९ ॥

जब लग झूठ जगत है पड्यो न जब लग काम ।
हेम हुतासन पारखू, पीतळ निकसै स्याम ॥ १३०० ॥

मांयं माकड़ घरे मही जै वन बिसरी बैळ ।
ऊथो राव कुमारजा पांच सूता मेल ॥ १३०१ ॥

भवकी गति छै वंधनो रखे पति जो कोय ।
पारंग्यां यूं ही रहै, मथर अभिरया होय ॥ १३०२ ॥

मांवो पदारथ भोगवै जो भावी यों होय ।
निमित्त मात्र नरणे गिणो धाडू न आवै कोय ॥ १३०३ ॥

(१२९७) बखत = बुरा समय । सिख्या = शिक्षा । भावै नहीं = अच्छी नहीं लगना । परीत = प्रीत प्रेम ।

(१२९८) घटयां = हृदय में । कोइसूं = किसी भी । थाय = होना । कदी = कभी ।

(१२९९) बाणी = वचन । मनख = मनुष्य । ए = यह ।

(१३००) जगत = संसार । पड्यो न जब लग काम = जब तक काम नहीं पड़ा हो । हेम = सोना । हुतासन = अग्नि आग । पीतळ = पीतल । स्याम = काला ।

(१३०१) मांयं = घाट में । घरे = घर में । मही = छाछ । जै = जो । बिसरी = बिन की । कुमारजा = कुमारी पुर पालण वाली स्त्री ।

(१३०२) यूं ही = वैसे ही ।

(१३०३) नरणे = मनुष्य को । गिणो = समझो । धाडू न आवै = कोई काम नहीं आता है ।

रामा रतन समान छै सोमैं सो संसार ।
सुलखणी नारी हुवै तो आपद टळै हजार ॥ ११०४ ॥

भली भामिनी होय तो भवरो बेड़ो पार ।
भूंडी भारया जे मिळै, तो आफत अणपार ॥ ११०५ ॥

गणै न कोई गरीब ने धनपति नै सो जाय ।
छींक आय जो धनपति खमा खमा कहै जाय ॥ ११०६ ॥

जाणौं नीं संसार, मंगळ पर हित पुण्य बिण ।
यूं ही जीव हजार, लाख क्रोड़ जनमैं खपै ॥ ११०७ ॥

कंचन तन रो राख मंगळ बळ्यां हो रवै ।
सेवा मेवा आख ए तन स्यूं करणी भली ॥ ११०८ ॥

देह मिनखरी पाय भलो मिनख रो भी करै ।
ए जग भलो कुहाय मंगळ बे जग जाळणो ॥ ११०९ ॥

मंगळ फूलां फूल दे सुगन्ध संसार नै ।
मिनख फूल ज्यूं फूल पर रै आवै काम तू ॥ १११० ॥

(११०४) सो संसार = सभी संसार सारा संसार । टळै — दूर होना ।

(११०५) भामिनी — स्त्री । भूंडी — बुरी खराब । अणपार — बहुत ही अधिक ।

(११०६) गणै न कोई — कोई नहीं समझता ।

(११०७) नीं — नहीं । बिण — बिना । खपै — नाश होते हैं ।

(११०८) कंचन — सोना बहुमूल्य । बळ्यां — जलजाने से । ए तन — इस शरीर से । स्यूं — से ।

(११०९) ए — इस । कुहाय — कहलाकर । बै — वह ।

(१११०) मिनख — आदमी । फूलज्यूं — फूल के समान । पर रै दूसरे के ।

करयो न कीं उपगार, भूंठो भो बड माणसो।
संमळ हूं धिरकार, बड़पण रै बोझां मरै ॥ १३११ ॥

कर नेकी रो कार, मंगळ नेकी आवसी।
कीयोड़ो उपगार कदै न अहळो जावसी ॥ १३१२ ॥

दुनियां बड़ी सराय रैणो है दो चार दिन।
मंगळ मतना जाय ले अपजस रो ठीकरो ॥ १३१३ ॥

धीम धटोरी नार, मंगळ घर चौपट करै।
जग में होवै ख्वार, खोटी आदत राखियां ॥ १३१४ ॥

होवै चमण खराब मारी रो पग नीसरै।
खानो करै खराब मंगळ अपजस आप सैं ॥ १३१५ ॥

झूंठी बात बणाय साख गमावै आपणी।
नजरां में गिर ज्याय मंगळ झूठ न बोलणो ॥ १३१६ ॥

मंगळ आन मिटाय ओछो काम कदी करै।
बड़पण देय गमाय बड़ो किसो ओ आदमी ॥ १३१७ ॥

(१३११) करयो न की – कुछ भी नहीं किया। बड माणसो – बड़प्पन। उपगार – उपकार, भलाई। धिरकार – धिक्कार।

(१३१२) नेकी – भलाई। कीयोड़ो – किया हुआ। अहळो – व्यर्थ। जावसी – जायेगा।

(१३१३) बड़ी – मोटी। रैणो है = रहना है। मत जाजाय = मत जाओ। अपजस रो ठीकरो – अपयश से भरा हुआ ठीकरा।

(१३१४) चौपट करै – नष्ट करती है। राखियां – रखने से।

(१३१५) पगनीसरै – स्वच्छन्द घूमना। खानो करै खराब – घर को बदनाम करे। अपजस – बदनामी बुराई।

(१३१६) साख – इज्जत प्रामाणिकता। गमावै = खोता है।

(१३१७) ओछो – छोटा।

मंगळ काचो सूत खसखस टूटै एकलो ।
कोई हो मजबूत कई तार रै मिलण स्यू ॥ ११२५ ॥

मतलबरो ब्यौहार, मंगळ जग में होरयो ।
बिण मतलब बर वार, कोइक सूझै देखयां ॥ ११२६ ॥

झुक झुक करै सलाम गरज दिवानो मरज में ।
नीसरग्यो जो काम मंगळ नासै फेर मुँह ॥ ११२७ ॥

स्वारथ स्यू सम्बन्ध मंगळ लोगां रो हुवै ।
बिण स्वारथ रो बंध मिलसी जग मे कोइ सो ॥ ११२८ ॥

मगळ वोनै जाय जीनै झुकतो पालड़ो ।
मतळब पाया दाय फिट मतळबनै दाय मै ॥ ११२९ ॥

मंगळ क्यू ललचाय चीज पराई देख्यां ।
मापे लिख्यो माय लिखी बिधाता भाग में ॥ ११३ ॥

सुख नचड़का खाय फांस मरावै नाड़ में ।
करणी धारी जाय पाछी माथा होय ज्या ॥ ११३१ ॥

धोम तराजू तीम बात सबी मंगळ सदा ।
लाग बणासी मोल देणी पड़सी बात नै ॥ ११३२ ॥

(११२५) एकलो—अकेला । कोई—कहीं ।
(११२६) कोइक—कोई ही । सूझै = दिखाई देता है । देखयां—देखने से ।
(११२७) नीसरग्यो—निकल गया ।
(११२८) स्यू—से ।
(११२९) वोनै—उसी तरफ । जीनै—जिस तरफ । दाय—पसन्द ।
(११३) पराई—दूसरे की । मापै—स्वयं अपने आप ।
(११३१) नचड़का खाय—मच मच करके मजे खाता है । मरावै—डलवाता है । करणी—कर्म । पाछी—पुनः ।
(११३२) कदी—कहीं । बणासी—बनायेंगे ।

पाखी मरी पचास मंगळ खाळ मळ बोलती ।
इयां मिनख रो हास पाखो भण धूंसे घणो ॥ १११३ ॥

मोटा मारै मौज छोटा रै परताप स्यूं ।
मंगळ चोखै फौज नाम हुवै सिरदार रो ॥ १११४ ॥

बिगड्यो हुयो सुभाव मंगळ सुधरै कै तरां ।
धूम न फेर बणाव, फाट्यां र साथी भेमसी ॥ १११५ ॥

तन सारो खा जाय चिंता दीमक लागयां ।
काठ समान गळजाय मंगळ छोडै सोच नीं ॥ १११६ ॥

भे ध्यावस सूं काम बिपता आवै मिनखने ।
मन धोकस से थाम मंगळ घबराणो नहीं ॥ १११७ ॥

बखत बखत रो मान बखत बखत रो चावणो ।
बात न पूछै ज्हान होण दसा मंगळ हुयां ॥ १११८ ॥

सीधा रो सनमान आज्यो दुनियां में नहीं ।
मंगळ आदर ज्हान मांडबरियां रो करै ॥ १११९ ॥

(१११३) इयां—ऐसे । भण—पढ़कर । धूंसे—बकता है ।

(१११४) मोटा—बड़ा । मारै मौज—मौज करते हैं ।

(१११५) सुभाव—स्वभाव । कै तरां—किस प्रकार ।

(१११६) सारो—तमाम । दीमक—दीमक । लागयां—लग जाने से । सोच—सोच करना भी ।

(१११७) ध्यावस—धैर्य । भे थाम—काबू करके ।

(१११८) बखत—वक्त समय । चावणो—चाहना । ज्हान—दुनिया । हुयां—होने से ।

(१११९) सीधा—सरल स्वभाव का आदमी । मांडबरियां—आडम्बर रखने वाले ।

मंगळ धावै मान रखी भाप में गुण नहीं।
कैयां होवै मान मान गुणां लारै रवै ॥ ११४ ॥

हो कमाऊ पूत घर बारै लागै भलो।
ठालो बैठ सपूत मंगळ हो प्रण खावणो ॥ ११४१ ॥

बरसाळै भीणांह ऊनाळै जाडा भला।
सीयाळै ऊनांह मगळ गाबा पैरणा ॥ ११४२ ॥

से विचार असवार बिण सगाम चिचळ मणो।
भाजै कास हुमार मगळ मनरो घोड़्यो ॥ ११४३ ॥

मालां भावै साय सपना ज्यूं आवै सरव।
हुवै मगत क्यों होय मुगत परापत मोतिया ॥ ११४४ ॥

सूमारै घर सोय हेम तणा भाखर हुवै।
काम न भावै कोय मिनखां बीजा मोतियां ॥ ११४५ ॥

कृपण करै मन कोय कौड़ो कौड़ो ना पुरुष।
भावै बाखो जाय माखो-मद ज्यूं मोतिया ॥ ११४६ ॥

---

(११४) रखी = थोड़ा-सा। कैयां = कैसे। लारै — पीछे। रवै = रहता है।

(११४१) बारै — बाहर। ठालो — बेकार। प्रण खावणो — बुरा लगने वाला।

(११४२) बरसाळै — बरसात में। ऊनाळै — गर्मी की मौसम में। सीयाळै — सर्दी की मौसम में। भीणांह = पतला। जाडा — मोटा। गाबा — कपड़े।

(११४३) असवार — सवार। चिचळ — चंचल। भाजै — भागता।

(११४४) मालां — मालों भादमी। सरव — तमाम। मुगत = मुक्ति। परापत — प्राप्त मिलना।

(११४५) सूमारै = कंजूसों के। भाखर — पर्वत पहाड़। काम — काम कार्य। मिनखां — भादमी। बीजा — दूसरा।

(११४६) बाखो — एक साथ ही इकट्ठा ही। माखो-मद — शहद। ज्यूं — जैसे।

मर्थे मणो उमेंण मफ्फ्यें भाखां मोजरी ।
जुग में वाता वेण मरै न कीरत मोतिया ॥ १३४७ ॥

रात दिवस इकराम, पढ़िये जू माठू पहर ।
टारे कुटम तमाम मिटै चौरासी मोतिया ॥ १३४८ ॥

करै न पेसो कोय कर पकड़ै पेमी करै ।
हेत बिना गुरु होय मोडा फिर फिर मोतिया ॥ १३४९ ॥

राखै भेख न राग भाखै नह चीमा बुरो ।
वरसण करतां दाग मिटै जनमरा मोतिया ॥ १३५० ॥

बांधै हर हर बाण कनक न राखै कामणी ।
जोगी महड़ा जाण मनसें जीता मोतिया ॥ १३५१ ॥

जीहा न बोलै झूठ सबणों मूठ न सांभळै ।
बरजै कुण बैकुंठ माधव वरमा मोतिया ॥ १३५२ ॥

कासू काम करेह, सिंधुर बाधा सांकळां ।
भगवत पेट भरेह मण निस माहै मोतिया ॥ १३५३ ॥

कासी सेव करीह वस कोडां सुरभी दिये ।
हेकण नाम हरीह मीढ न आवै मोतिया ॥ १३५४ ॥

(१३४७) मर्थे — मथी । मणी — माणिक ।
(१३४८) रात दिवस — दिन रात । हिक — एक ।
(१३४९) कर पकड़ै — हाथ पकड़ कर । हेत बिना — बिना प्रेम के ।
(१३५०) भेख — द्वेष । भाखै — कहना । नह — नहीं । चीमा — जीभ से ।
(१३५१) कनक — सोना । कामणी — स्त्री । महड़ा — ऐसा । जीता — जीत लिया ।
(१३५२) जीहा — जीभ से । सबणों — कानों से । सांभळै — सुने । बरजै कुण — कौन रोक सकता है ।
(१३५३, कासू — क्या । भगवत — भगवान । पेट भरेह — पेट भरते हैं ।
(१३५४) कोडां — करोड़ । सुरभी — गायें । हेकण — एक । नाम हरीह — हरि का नाम । मीढ न आवै — बराबरी नहीं कर सकता ।

दे नह कोयस दाम सेवें की हाको लडे।
बोली में विसराम मीठो बोलण मोविया ॥ १३६२ ॥

ऊमर रे उणहार, जुगल टिकट जग रेल रा।
कै बेगा कै बार ठेसण-ठेसण उतरसो ॥ १३६३ ॥

धन तन जोबन रो जुगल मत कर कदी गुमान।
इक दिन सैं झड़सी जियां पीपळियै रा पान ॥ १३६४ ॥

जुगल विहंग भेळा हुवै सरवरिया री तीर।
पी पाणी चलता बणै जगरी इसी लकीर ॥ १३६५ ॥

सबसूं हंस हंस बोल पर-गुण साचो बण जुगल।
मिनख जनम अणमोल बार विनां री बानगी ॥ १३६६ ॥

नाम अमर रो थाय जुगल भलो बण कर भलो।
माटी में मिल जाय काया काचो मिनखरो ॥ १३६७ ॥

होणी हर रे हाथ निज करणी करता रहो।
जुगल करम रे साथ जनमा तर में मिनख रे ॥ १३६८ ॥

(१३६२) दे नह — नहीं देता। हाको — कौवा। लडे — लड़कर। मीठा बोलण — मीठा बोलना।

(१३६३) बेगा — जल्दी। बार — देर से।

(१३६४) गुमान — घमण्ड। सैं — तमाम। पीपळियै — पीपल का।

(१३६५) विहंग — पक्षी। भेळा हुवै — इकट्ठा होते है। जगरी — संसार की। इसी — ऐसी।

(१३६६) बण — बनना। मिनख — धारमो मनुष्य। जनम — जन्म। अणमोल — अमूल्य।

(१३६७) भलो बण — अच्छा बन कर। काया — शरीर। काचो — कच्चा।

(१३६८) होणी — होनहार। हर रे हाथ — भगवान के हाथ। करणी — कर्म।

तुलै न परवत तोल मोल नहीं मुरख तणो ।
बड़ मिनखरा बोल मग नग भारी मोपता ॥ १३६९ ॥

काया अमर न कोय थिर काया थोड़ो रहै ।
इण में आतो थोय नामो कामो मोपता ॥ १३७० ॥

पांणी पितवाने बिना घण चौबेरो प्रीत ।
थोड़ा दिन लागे खरी भले महारत रीत ॥ १३७१ ॥

जिण लायक जो होय उणमत ही परखो पख ।
ऊसर बीज न बोय लाख न लागो फळ सकै ॥ १३७२ ॥

साँई सांपजज्यो सदा सुमाणस रो संग ।
कुमाणस मळ्यो भलो नाखो सदा कुसंग ॥ १३७३ ॥

पापी पसा न भेटज्यो कुरियां हूँ कुवकार ।
धरमी धीरजवान रो सदा बणे उपगार ॥ १३७४ ॥

आंख हुई ह्लो कै हुमी हिये सुध न होय ।
सूरदास आंख्यां थका राम करै ज्यूं होय ॥ १३७५ ॥

(१३६९) परवत — पर्वत पहाड़ ।
(१३७०) इण में — पृथ्वी में ।
(१३७१) पांणी — समझना ।
(१३७२) लायक — योग्य । उणमत ही = वैसे ही । परखो = परीक्षा करना जाँच करना ।
(१३७३) साँई = भगवान ईश्वर । सांपजज्यो = देना मिलाप करवाना । सूमाणस — भला आदमी । संग — संगति । कुमाणस — बुरा आदमी । नाखो — बली ।
(१३७४) पसो न भेट ज्यो — पसे न लगाना छूट नहीं लगाना । कुरियां — दूर है । धरमी — धर्मात्मा ।
(१३७५) कै हुयी — क्या । आंख्यां थका — आंखों के होते हुए । ज्यूं होय — वैसे ही होना है ।

तर वर सर वर संतजन चौथो बरसण मेह ।
परमारथ रै कारणै च्यारों धारी देह ॥ १३७६ ॥
सगुण चोखा हंस ज्यूं विरला कोइ दीसंत ।
दुरगुण काला काग ज्यूं महियल घणा भमंत ॥ १३७७ ॥
निज गुण ढांकण नेकमित परगुण गिण गावंत ।
ऐसा जगमें सुजण जण विरला ही पावंत ॥ १३७८ ॥
सगा सनेही और नर सुख में मिलै अनेक ।
विपत पड्यां दुख बांटलै सो लाखों में एक ॥ १३७९ ॥
जैसी संगत बैठिये तैसी इज्जत थाय ।
सिर पर मखमल सेहरै पनही मखमल पांय ॥ १३८ ॥
संगत कीजै साध की हठ कर कीजै मोह ।
करम कटै काठ कहै तिरै काठ सँग लोह ॥ १३८१ ॥
सठ सभा में बैठतां पत पखितरो जाय ।
एकण जाडै किम चडै रोझ, गधेडो गाय ॥ १३८२ ॥
गिर सूं पड़िये धाम जाय समंदा डूबिये ।
मरिये महुरो खाय मूरख मित्र न कीजिये ॥ १३८३ ॥

(१३७६) बरसण — बरसने वाला । च्यारों — चारों ने ।

(१३७७) महियल — पृथ्वी पर । घणा — बहुत । भमंत — घूमते हैं ।

(१३७) ढांकण — ढकने वाले छिपाने वाले । गिण — गिन करके । सुजण — सज्जन । पावंत — मिलते हैं ।

(१३७९) और — दूसरे । मिलै — मिलते हैं । पड्यां — पड़ने पर ।

(१३८) थाय — होती है ।

(१३८१) मोह — प्रेम । तिरै — तिर जाता है ।

(१३८२) पत — प्रतिष्ठा । पखितरी — पवित्र की । एकण — एक ही । रोझ — एक प्रकार का जानवर पशु के किस्म का ।

(१३८३) गिरसूं — पहाड़ से । समंदां — समुद्रों में । महुरो — जहर ।

राम कही सुग्रीवनै संका केती दूर।
मारूसियाँ मछली भणी उद्दम हाथ हजूर॥ १३९३॥

बाँका रहज्यो बालमा बाँका आदर होय।
बाँका बन का लाकड़ा काट न सक्कै कोय॥ १३९४॥

भणा सरस भणियै नहीं देखो ज्यू बणराय।
सीधा-सीधा काटतां बाँका तरु बच ज्याय॥ १३९५॥

कहणी प्रभु रीझै न कधु, रहणी रीझै राम।
सपनै री सौ मोहर सू कोडी सरै न काम॥ १३९६॥

लाखां संपत पाइयै लाखां मोटा माम।
साच-बिहूणा मानवी ज्यांरा खोटा काम॥ १३९७॥

रखोहो होवै मतो मती बसुसो मित्त।
होवै करसत सारिसो बाँटण-खाटण चित्त॥ १३९८॥

हित कर हंसी कोयमी साधू संगत पास।
कामी कुत्ती कुमाणसां प्रीत तजो प्रिथुवास॥ १३९९॥

समझूनै चिता भणी मूरख नै नहीं लाज।
भली बुरे की खबर नहीं पेट भरण सू काज॥ १४००॥

गुण बिण ठाकर ठीकरो गुण बिन मीत गंवार।
गुण बिन चंदण लाकड़ो गुण बिन नार कुनार॥ १४ १॥

(१३९३) मारूसियाँ—मालम करने वालों के। मछली—दूर।

(१३९४) बाँका—टेढ़ा। बालमा—प्यारा।

(१३९५) सरस—सीधे। बणराय—जंगल।

(१३९६) रहणी—रहने का ढंग।

(१३९७) लाखां—लाख से। मानवी—मनुष्य।

(१३९८) होवै मती—मत होना। मित्त—है मित्र। होवै—होना। सारिसो—समान। बाँटण—बाँटने और खाने वाला।

(१३९९) हितकर—इससे प्रेम करो।

(१४) समझूनै—समझदार को।

(१४ १) ठीकरो—ठिकरा। लाकड़ी—साधारण कोटि की लकड़ी के बराबर।

कान, आँख, मोती करम गढ़ धड़ ढोल भंडार ।
ए फूटा किण कामरा, ताल तोप तलवार ॥ १४ ९ ॥

सोना खाया न नीपजै मोती न लगै डाळ ।
रूप उधारा ना मिलै सूल्या फिरो बजाळ ॥ १४१० ॥

भूख न जाणै मामलो प्रीत न जाणै जात ।
नींद न जाणै साथरी ज्यों सूता त्यों रात ॥ १४११ ॥

सासैरी बैठक बुरी पर-आंगण री छांय ।
धोरैरो रसियो बुरो नित उठ पकड़ै बांय ॥ १४१२ ॥

ज्यां का ऊँचा बैसणा ज्यां का खेत निवाण ।
ज्यां का बैरी क्या करै ज्यां का मीत दिवाण ॥ १४१३ ॥

झाड़ खटके कांकरो फूस खटक्कै नैण ।
काहियो खटकै भाकरो बिछड़यो खटकै सैण ॥ १४१४ ॥

हंस तरंतो परखियै पाणी नदी बहंत ।
सोनो कसी परखियै माणस बात कहंत ॥ १४१५ ॥

(१४ ९) करम — भाग्य । किण कामरा — किस काम के ।

(१४१) खाया — बोने से । डाळ — डाली ।

(१४११) साथरी — सेज । सूता — सोये ।

(१४१२) परआंगणरी — दूसरे के आंगन की । धोरैरो — घास का । रसियो — प्रेमी । बांह — हाथ ।

(१४१३) बैसणा — बैठना स्थान । निवांण — नीचा । ज्यांका — उनका । दिवाण — दीवान प्रधान-मन्त्री ।

(१४१४) कांकरो — कंकर । भाकरो — कठोर । सैण — मित्र ।

(१४१५) तरंतो — तैरता हुआ । कसी — कसौटी ।

"राजस्थानी नीति दोहे" अनुक्रमणिका

प्रथम पंक्ति	दोहा संख्या

	४०४	खिरे=गिरना	खिर=झरना
	४ ६	न किज्जियै= यह न कीजिये	न किज्जिय= नहीं करना चाहि
५७ मर्ग	४ ८	रूठो=नाराज होना तूठौ=प्रसन्न	रूठौ=नाराज हुआ क्रोधित तूठौ=प्रसन्न हुआ
५८	४१४	झलर्क=छलकना	झलक=छलकता
मर्ग	४१४	साधा= मिलना समझना	साधा= पहचान लिया जान
५६ मर्ग	४२५	नन रूप के रूप हैं= मानों पूत का संदेश देनी वाली हैं	मैन रूप के पूत हैं= मानों रूप की पूत हैं।
	४२६	हुंता=था होना होता था वूठा मेह= वर्षा कम हुई	हुंता= का वूठा मेह= वर्षा हुई
६ मर्ग	४२७	अपनो जानि =अपना समझकर	अपनो जानि =अपना समझकर
६१	४३६ १	बंधे	बंधि
	४३८ २	महसूम	महफूज
६३	४४२ २	मगुर्सा	मनुर्षा
मर्ग	४४१	वाड़ी करी= बाड़ बनाई	वाड़ी करी= बाड़ बनाई
६४	४४६ १	जीवतणा	जीवतणां

	४६ १	माधखां	माधव्यां
	१	जस	जब
मथ	४५५	सिख्या न मेटे	सिख्यौ न मेट
	४५६	पीवतरणा	पीवतवां
६५	४६४ ०	पनग	पन्नग
	४६६ १	गहुत	ग्रहुत
मर्थ	४६३	जाणपरणो = समझना	जाणपरणी = समझ, ज्ञाम
६५ मर्थ	४६४	पनम	पसम
६७ मर्थ	४८४	रिण = युद्ध	रिण = मर्थ
६८	४६ १२	सोब	सोब
	४६३ २	मामी	माळी
	२	रित	वत
मर्थ	४८६	जाणपरणी = जामना	जानपरणी = सकल समझ, ज्ञाम
	४६०	नूर = ज्योति	नूर = प्रकाश तेज
	४६१	रूपसियांह = सुरूप	रूपसियांह = बौरसें
	४६१	रित = ऋतु	रुत = ऋतु
६६	४६७ १	बौर	बोर
	२	बौर	पार
७	५०७ १	पुरय	बडी
मर्थ	५ ७	बे मर्जुन बे बाण = मर्जुन मौर उसके दास होते हुए	बे मजुन बे बाण = वही मजुन वही उनके बाण हैं
७१	५१ १	घन	घन
	५११ २	तरिया	गिरिया
	५१३ २	बागण	बापण

राजस्थानी नीति दोहे

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	दोहा पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४१	२४८	वाम=बायी	वाय=वायु
	२५०	२ रुक	रुके
	२५१	२ बीधू	बीधू
अर्थ	२५१	रतीन=	रती न=
		रत्ती भर बहुत थोड़ा	जरा भी नहीं
५ अर्थ	२५५	खारा घड़=	खोटा घड़=
		बुरा करते हैं	बुरा विचारते हैं
५१ अर्थ	२६४	घर की तिरिया=	घर की तिरिया
		उसकी स्त्री	=पत्नी
	२६७	साझे का कार	साझे का काम
		=संयुक्त काम	=हिस्सेदारी का काम
५२ अर्थ	३०१	मां=मा	मां=चाह
५३	३३७	वया	वृथा
५४ अर्थ	३६	फीको लाग	फीको लाग
		=स्मर्य सा	=नीरस
		प्रतीत होता है	लगता है
५५ अर्थ	३६६	बामी बंध	बोली बंध
		नहीं=जबान	नहीं=वाणी
		पर अधिकार नहीं	पर संयम नहीं
५६ अर्थ	४ १	नीची हट	नीची हट
		मटे=नीची नजर	=नीची नजर करके।

	४०४	खिरैं = गिरना	खिरै = झरना
	४०६	म किज्जियै = मह न कीजिये	न किज्जियै = नहीं करना चाहि
५७ पर्व	४०८	रूठे = नाराज होना	रूठै = नाराज हुए क्रोधित
		तूठे = प्रसन्न	तूठी = प्रसन्न हुआ
५८	४१४	झलर्क = छलकना	छलक = छलकना
पर्व	४१४	माया = मिलना समझना	माया = पहचान लिया जान
५९ पर्व	४२५	नैन रूप के रूप हैं = आँखें दूत का संदेश देनी वाली हैं	नैन रूप के दूत हैं = आँखें रूप को दूत हैं।
	४२६	हुंवा = था होना होता था	हुंदा = था
		वूठा मेह = वर्षा नष्ट हुई	वूठा मेह = वर्षा हुई
६ पर्व	४२७	अपनो जानि = अपना समझकर	अपनो जानि = अपना समझकर
६१	४३६ १	बधे	बधि
	४३८ २	महद्रुम	महद्रुम
६३	४४२ २	मगुमा	मगुपा
पप	४४३	वाडी करी = बाड़ बनाई	वाड़ी करी = बाड़ बनाई
६४	४४६ १	जीवतणा	जीवतदा

	७७७	आएाज=समझना	आएवे=समझ लेना चाहिये
	७७८	विरस=शत्रु	विरस=रसहीन अस्वादु
१०७ सर्ग	७८	अराम—खाकर	अरोग=खाते हैं
१११ सर्ग	८ ६	लाय=अग्निकाण्ड	लाय=अग्नि
	८११	त्रैलोक्ये=ससार मे	त्रैलोक्य=त्रिलोकी में, तीनों लोकों में
११२ सर्ग	८१४	करर=एक प्रकार का जहरीला कीडा	करर=एक प्रकार का चंपसी कुसुम
११५	८२६	वेग्राह=स्थान	वेग्राह=समय वक्त
११५	८३६	साख=इज्जत	साख=इज्जत
	८३०	कूडे=झूठा	कूडे=व्यर्थ में
११७	८५५	वण्यो उपाय—उपाय बनना	वण्यो उपाय=उपाय बना
११८	८६१	१ जिन	निज
		२ ममत्व	मिनख
५५	८६२	उम्मी=उदय हुआ है	उम्मी=उदय हुआ
	८६३	ममत्व	मिनख
११६	८७०	१ किरणी	किणरी
१२२ सर्ग	६५५	जमारे मांह=जन्म लेकर	जमार माहरे=मानि में।
१२३ सर्ग	८६४	चएा	चिएा
	८६६	पत=इज्जत	पत=इज्जत

२४	६८२	२	थकटनो	थकने
मर्थ	६८३		जारे=	जारे=
			जिसके	बसाया
२५	६८८	१	जमि	जणि
मर्थ			कटय	सय्य
	६८१		समत्थ=	समत्थ=
			सामरथ	समर्थ
			सामर्थ्य	
	६१२		मिवारि=	निवारि=
			दूर रखो	छोड़दो
२६	६१८	१	ताति	याति
२७	७०३	१	जिणी	जिणरी
			मिनकी	मिमकी
७१ मर्थ	७१६		जाममी=गवाही	जाममी=जम
			देना	नत देना
९९	७२२	२	फर	फेर
मर्थ	७२३		तणी=से द्वारा	तणी=की
१०	७३१	१	दहै	महै
मर्थ	७३१		वहंत=	वहत
			जलाते हैं	देते हैं
११ मर्थ	७३७		बुस्का=भूखा	बुस्का=भूखा
१२	७४५	१	दुरज्ज	दुरज्जन
१४ मथ	७६२		मनाधीम=	मनाधीन
			मनके माधीन	=मन के माधीम
१५ मथ	७६६		माती=मोटा	माती=
			ताजा	संतुष्ट
१६ मर्थ	७७४		किष्प=की	किष्प=किया

	७७७	आणजे=समझना	आणजै=समझ लेना चाहिये
	७७८	विरस=शत्रु	विरस=रसहीन अस्वादु
१०७ सर्ग	७८	अरोग=खाकर	अरोग=खाते हैं
१११ सर्ग	८ १	लाय=अग्निकाण्ड	लाय=अग्नि
	८११	असोकये=ससार मे	असोक्य= त्रिलोकी में तीनों लोकों में
११२ सर्ग	८१४	करर=एक प्रकार का जहरीला कीड़ा	करर=एक प्रकार का जंगली कुसुम
११४	८२६	बेव्यह=स्याम	बेव्याह=समय वक्त
११५	८३६	साख=इजत	साख=इज्जत
	८३०	कूड=झूठा	कूडै=व्यर्थ में
११७	८४५	बण्यो उपाव= उपाय बनना	बण्यो उपाय=उपाय बना
११८	८६३	१ जिस २ मनख	जिन मिनख
सर्ग	८६२	उम्यो=उदय हुआ है	उम्यो=उदय हुआ
	८६३	मनख	मिनख
११९	८७०	१ किरणी	किणारी
१२२ सर्ग	९४४	जमार मांह= जन्म लेकर	जमारै माहरे =योनि म।
१२३ सर्ग	८९४	वणा	विणा
	८९९	पत=इजत	पत=इज्जत

१२४ मर्म	६	८		भाव कान्ती	भाव कान्ही
१२६ मर्थ	६	१७		सजभो सरस है	सजयो सरस है
				स्यायगा मरस है	स्यागना मरम ।
१२७ मर्थ	६	२६		बिवगे=बिवर्ए	विवरो=ग्यौर
					विवरग
१२८ मर्थ	६	३०		जिस=सव तक	जिते=तब तक
१२८ मर्थ	६	७		मिगणपरग=सप	मिगणपरा=सर्प
	६	३८		तररी=वृक्ष की	तरुरी=वृक्ष की
१३१	६	५३	१	बिनजिम	बितजिम
	६	५५	१	जिम	जिम
१३२ मथ	६	६		मीर=उसका	मीन=उसक
	६	६१		जोग जोडकर=	जोड़ जोड़कर=
				इकट्ठा करमा	इकट्ठा करने
				मू षी=कजूस	मू जी=कजूस
१३३ मथ	६	६१		म=मह	म=मे
	६	७		स्याणी हुई=	स्याणी हुई=बुदि
				महानी बन गई	मती बन गई
				स्याणप में धूस=	स्याणप में धूस=
				उस सीषेप्स से क्या	बुद्धिमानी में धूस !
				प्रयोजन	बुद्धिमानी किसी
					काम की नहीं है
१३४ मर्थ	६	७४		भांटीलो=उलमने	भांटीलो=भांट
				वा करने वाला	अर्थात् विरोध या
					पकड़ रखने वाला
				भाग=उलझन	भांटी=पकड़
					विरोध
१३७ मर्थ	१	१		रूस=नाराज होना	रूस=नाराज
१३८ मर्थ	१	१		मिनस	मिनस
१३६ मर्थ	१	१७		उघई	उघड़े

	१२२६ २		मार	मारी
१६८	१२३३ २		मोयमा	मोयमा
	१२३५ २		ग्रुल्म	ग्रुम
ग्रर्थ	१२३६		गरबीले म	गरबीस म
			=गौर्व रखने	=गौरव रखम
			बाले को	बासे को
			सटवा मिगताई=	सटवा मिगताई
			मिनत सुधामवी	मिसत' सुधामर्द
१६९	१२४०		बप्पए	बैप्पाब
ग्रर्थ	१२३८		धग मौळी	धग मौळी
			किम्यौ=क्या	किम्यौ=ससार
			मब की तेरह	को सुन्दर ग्रर्णात
			करली	मसा बनाया
	१२४१		हुवै=थे	हुव=के
१७७	१२४५	२	—	'नीर' के ग्राग
				ग्रौर चाहिये
	१२४६	१	मला	मसाह
		२	गेला	गमाह
ग्रर्थ	१२४६		ग्रूकै=रोना	ग्रूक=रोबे
१७१	१२५७	१	मैला	मैसाह
		२	पैला	पसाह
	१२५८	१	ग्रबेस्या	ग्रबेरपा
ग्रर्थ	,,		ग्रबेस्यवा	ग्रबेरपा
१८३ ग्रर्थ	१३४५		सू मारे=	सू मारे=
			कबूझो के	कबूसों के
१८६ ग्रथ	१३६४		पीपळ्यिं	पीपळ्यिरा
			=पीपल का	=पीपल का
१८७ ग्रर्थ	१३६६		माजी=	माजी=
			शाकुमी भासपात	शाक-सब्जी